

जिद करो और सफलता पाओ

अशोक इंदु



डायनंद बुक्स

मेरे स्वर्गीय पिता श्री एस. एन. पांडे
व माँ श्रीमती आर. पांडे को समर्पित
में आज जहाँ हूँ, उन्हीं के कारण हूँ

ISBN : 978-81-288-2339-8

© लेखकाधीन

प्रकाशक : डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.

X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली-110020

फोन : 011-40712100

फैक्स : 011-41611866

ई-मेल : sales@dpb.in

वेबसाइट : www.dpb.in

संस्करण : 2009

मुद्रक : आदर्श प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली - 32

ZID KARO AUR SAFALTA PAO

by : *Ashok Indu*

लेखक की ओर से

किसी भी कार्य को और अधिक कठिन बनाने का तरीका
यही है कि उसे आगे के लिए टाल दिया जाए।

राल्फ मार्सटन

‘जिद करो और सफलता पाओ’ में आपको संभवतः कुछ ऐसे विचार मिलेंगे, जिन्हें आप पचा नहीं पाएँगे क्योंकि हमें बचपन से ही सिखाया जाता है कि सफल होने के लिए व्यक्ति को अथक परिश्रम करना पड़ता है, हम भूल जाते हैं कि परिश्रम और प्रयास दो अलग-अलग बातें हैं। सफलता पानी है तो लक्ष्य की दिशा में निरंतर प्रयास करना होगा, यहाँ कड़े परिश्रम का कोई काम नहीं। किसी भी काम से जुड़ी सफलता, काम में हमारे विश्वास के समानुपातिक होती है। सबसे खास बात ये है कि हमें सफलता व उसके मापदंडों पर विश्वास रखना होगा। यदि आप विश्वास रखते हैं कि आप कर सकते हैं, तो आप निश्चय ही कर सकते हैं। चाहे आप ऑफिस में हों या कहीं और; आपसे बेहतर, आपकी क्षमता का अनुमान किसी को नहीं है। व्यक्ति को मामले की गहराई को एक ओर रखते हुए, हमेशा जीत के बारे में सोचना चाहिए। जब भी कई प्रतियोगिता में हो, तो स्वयं को दूसरे प्रतियोगी से बेहतर मानें; इस तरह प्राप्त होने वाली सकारात्मक उर्जा जीत में सहायक होगी। यह कभी न सोचें कि आप उस घटना के लिए नहीं बने। जीवन की सभी घटनाएँ आपसे जुड़ी हैं व आपमें सभी अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझने की पूरी क्षमता है।

जो भी करें, यही दोहराते रहें कि आप ही सफल होंगे। सफल लोगों में सफलता के प्रति विश्वास के अलावा कुछ भी अतिरिक्त नहीं होता यदि कोई दूसरा सफल होने से जुड़ी उस आदत को अपना सकता है तो आप क्यों नहीं? हमेशा स्वयं को

याद दिलाते रहें कि आपके भीतर सफल होने व विजेता बनने की सारी संभावनाएँ मौजूद हैं। किसी भी परिस्थिति में स्वयं को विजेता मानने लगेंगे तो शारीरिक अक्षमता व मानसिक बाधाएँ स्वयं ही दूर हो जाएँगी।

सफल होने के लिए किसी जादुई शक्ति की आवश्यकता नहीं, किंतु आप अपनी किसी भी क्षमता को जादुई ताकत में बदल सकते हैं? वरन इस सोच पर विश्वास जमाना होगा। आप जो भी करें, सफलता में आपका विश्वास ही, उसका आकार-प्रकार सुनिश्चित करेगा। सफलता का न तो भाग्य से कोई संबंध है और न ही किसी विशेष बुद्धिमता से। इसके लिए मध्यम दर्जे की बुद्धिमता के साथ समर्पित सोच चाहिए। किसी भी परिस्थिति में सफल होने का भरपूर विश्वास ही सफल बनने में सहायक होता है। आप यह जान कर आश्चर्यचकित होंगे कि बड़ी सोच नहीं अपितु समर्पित एकाग्रता ही सफलता पाने की कुंजी है।

(दुष्ट का साहस व ताकत, समाज के सदस्यों के भय व कायरता के अनुपात में होता है।)

मुझे पूरा विश्वास है कि इस दिशा में मेरा यह प्रयास आपके भीतर एक सोच पैदा करेगा, जिसके लिए आपको आई आई एम से किसी डिग्री की आवश्यकता नहीं बल्कि अपने भीतर अन्वेषण करना होगा ताकि भावी पीढ़ी को एक बेहतर जिंदगी दे सकें। आशा करता हूँ कि आपको पुस्तक पढ़ने में आनंद आएगा। आप edtrust @ rdiffmail.com पर अपना फीडबैक दे सकते हैं, मैं शीघ्र ही प्रत्युत्तर देने की चेष्टा करूँगा।

—अशोकइंदु

तिथि: 4 अप्रैल, 2009

पांडे एजुकेशन ट्रस्ट

क्वालिटी एजुकेशन (परामर्श सेवाओं में एक विश्वसनीय नाम)

2, पूरनवाड़ी, मॉडल टारून सी, मालवीय नगर

जयपुर- 302017, राजस्थान (भारत)

पाठकों के नाम

हम मानते हैं कि हम जीतने के लिए पैदा हुए हैं, किंतु कोई भी काम शुरू करते ही हमें लगने लगता है कि पता नहीं हम इसे कर भी पाएँगे या नहीं, इस तरह हम बस ख्याली पुलाव पकाते रह जाते हैं। आप मानें या न मानें, ये नकारात्मक भावनाएँ अपने साथ और भी कई नकारात्मक भावनाओं को जन्म देती हैं। यह एक स्वभाविक प्रक्रिया है और आप भी इससे बच नहीं सकते। इसके विपरीत, जब आप केवल जीत के बारे में सोचते हैं तो आपका दिमाग केवल जीतने के सकारात्मक विचारों से भर जाता है।

हमारा मस्तिष्क उसी दिशा में कार्य करता है, जिस दिशा में हमारी चिंतन प्रक्रिया जाती है। किसी वस्तु के बारे में कुछ सोचना आरंभ करें, आपको यह देख कर आश्चर्य होगा कि आप उस ओर से अपना ध्यान नहीं हटा पा रहे हैं। यदि आप इसी निश्चित विचार को और आगे ले जाएँ तो यह दृढ़ता की प्रक्रिया तक पहुँच जाता है। एक दृढ़ विचारों वाला व्यक्ति चमत्कार कर सकता है। अपनी जिद के बल पर सब कुछ पा सकता है। प्रत्येक सफल व्यक्ति के बारे में सोचें तो आप उनके व्यक्तित्व की अलग-अलग खूबियों को पहचान पाएँगे किंतु उन सबमें एक विशेषता सामान्य रूप से थी, वो यह थी कि वे सफलता के प्रति, अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ धारणा रखते थे। उसे पाने का पक्का निश्चय रखते थे, उन्होंने सफलता को पाने की जिद्द ठान ली थी।

पुनर्जन्म की कोई भी पुस्तक उठा लें तो वे आपको यही आश्वासन देंगे कि एक बार मनुष्य रूप में जन्म लेने के बाद आप

दोबारा भी मनुष्य रूप में ही जन्म पाएँगे, ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य की मानसिक संरचना, इस ब्रह्माण्ड में सबसे विकसित जीवन की है, जिसे किसी दूसरे जीवन के साथ जोड़ा नहीं जा सकता। दूसरी बात यह भी है कि एक बार आप कुछ पा लेते हैं तो इससे आपकी चिंतन प्रक्रिया निखरती है और फिर आपका पुनर्जन्म नहीं हो सकता, जो कि पहले तय है। पुनर्जन्म पर अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों ने पाया कि उन लोगों का नया जन्म, पिछले जन्म की तुलना में सामाजिक व आर्थिक रूप से कहीं उन्नत व बेहतर था।

आप सोच रहे होंगे कि आपको एक ऐसे सिद्धांत की व्याख्या दी जा रही है, जिस पर आप संभवतः विश्वास नहीं रखते। ठीक है, किंतु वैज्ञानिक प्रमाणों से लाभ उठाने में हर्ज ही क्या है! किसी का विश्वास या अविश्वास; ये दोनों ही किसी तथ्य की तर्कसंगतता को प्रभावित नहीं करते। जब हम कुछ देखते हैं, तो कह नहीं सकते कि उस पर विश्वास रखते हैं किंतु याद रखें कि हम ऐसी अनेक बातों पर भी विश्वास रखते हैं, जिनका हमारे पास कोई प्रमाण नहीं होता।

22 जुलाई, 2009 के सूर्यग्रहण का ही उदाहरण लें। नासा ने इस बड़ी घटना पर 200 पृष्ठों की एक रिपोर्ट तैयार की, जो कि सन् 2013 से पहले घटने वाली नहीं है। नासा के अनुसार इस प्राकृतिक घटना के अध्ययन के लिए बिहार के एक छोटे से स्थान 'तारागेना' को चुना गया। यही वो स्थान है, जहां प्रसिद्ध भारतीय ज्योतिषी व गणितज्ञ आर्यभट्ट ने लगभग पंद्रह सौ वर्ष पूर्व ग्रहों की गलियों का अध्ययन किया था। वे मौर्य शासनकाल में थे, उन्होंने भी 'तारागेना' को अध्ययन के लिए उपयुक्त स्थल चुना व अपने छात्रों के साथ वहीं बस गए। उन्होंने कुछ ऐसा करने का पक्का निश्चय कर लिया था, जो तब तक कोई नहीं कर पाया था।

क्या हम इसे एक संयोग मात्र कह सकते हैं? इस विश्व में अनेक घटनाएँ होती हैं, जो कई पीढ़ियों के बाद वैज्ञानिक व्याख्या पाती हैं क्योंकि आज तक हमारी प्रक्रियाएँ इतनी विकसित नहीं हो

पाई हैं। जो बात आज तक निःसंदेह प्रमाणित हुई है, वह ये है कि मनुष्य बुद्धिमान है तथा पृथ्वी के सभी जीवों में से श्रेष्ठ है। उसमें प्रकृति पर विजय पाने की क्षमता है तथा अपनी तार्किक बुद्धि के अनुसार प्रकृति के सृजन या नष्ट करने की क्षमता भी है। आप भी एक मनुष्य हैं तथा परिस्थितियों को अपने चिंतन के अनुसार बदलने की क्षमता रखते हैं, बस शर्त केवल इतनी है कि आपके भीतर पक्का निश्चय होना चाहिए, इसके बिना कोई भी ताकत परिवर्तन नहीं ला सकती।

निःसंदेह आप जीतने के लिए ही बने हैं व उसे पाने का पक्का इरादा भी रखते हैं। हो सकता है कि आप मेरा मज़ाक उड़ाएँ, लेकिन आने वाले एक घंटे में अपनी क्षमता व प्रतिभा पर विचार करें व इसके बाद वाले घंटे में आप निश्चित रूप से मेरा टेलीफोन नंबर या ई-मेल पता तलाश रहे होंगे ताकि मुझसे संपर्क कर सकें। चमत्कार करने या दूसरों से बेहतर करने के लिए आपको दो हाथों व एक सिर से अधिक की आवश्यकता नहीं है सावधान रहें, यदि कभी ईश्वर से मिलने का अवसर मिले और वे वरदान देना चाहें तो ऐसा वर माँगे, जो आपको आपके पक्के निश्चय से डिगा न सके।

हम अपनी क्षमता पर संदेह रखते हैं और उन लोगों से परामर्श लेते रहते हैं, जिन्होंने अपने मूल्यांकन का कभी प्रयास नहीं किया होता, इस तरह घातक परिणाम सामने आते हैं। इस धरती पर अधिक होने से कुछ अधिक नहीं मिलता। अधिकतर अन्वेषक, आविष्कारक या फोर्ब्स की सूची में नाम पाने वाले व्यक्ति सामान्य लोगों जैसे ही थे; यहाँ तक कि उनमें से कुछ को तो अपने मित्रों से कम बुद्धिमत्ता होने की वजह से स्कूल व कॉलेज भी छोड़ने पड़े। (जो कि प्रत्येक छात्र को सफल बनाने का दावा करते हैं) परंतु उनमें एक बात सामान्य थी कि उन सभी में कोई ऐसा काम करने की ललक व पक्का निश्चय था, जो कि आज तक किसी ने न किया हो। सफलता के लिए किसी अतिरिक्त विशेषता की आवश्यकता नहीं होती, केवल आपको अपने भीतर छिपे हुनर को

निखारना होता है। मानें, न मानें; इस दुनिया में कुछ भी अचानक या संयोग से नहीं मिलता; यह अथक प्रयासों व दृढ़ निश्चय का फल होता है। 'किस्मत से' शब्द उन कमजोर लोगों के लिए बना है, जो कड़ी मेहनत और दृढ़ निश्चय में विश्वास नहीं रखते।

आप जिस सपने को साकार करने का पक्का निश्चय नहीं कर सकते, उसे पा भी नहीं सकते। आपके भीतर एक सफल व्यक्ति बनने के सभी गुण समाहित हैं अतः अपने मनपसंद क्षेत्र में कुछ भी करने की ठान लें व सफलता पाएँ। एक बात तो तय है कि आपने सफल होने की राह में पहला कदम तो बढ़ा ही दिया है, क्योंकि आपने पढ़ने के लिए इस पुस्तक को चुना है। 'जिद करो और सफलता पाओ' पुस्तक आपके हाथों में है, इसे पढ़ें व लाभ उठाएँ।

—अशोकइंदु

अध्याय

पहला अध्याय: जुनून रखें बरकरार 13
1.1 अपनी योग्यता पहचानें 16
1.2 भीतरी विशेषताएँ विकसित करें 17
1.3 अपना भाग्य स्वयं तय करें 20
1.4 अपने हुनर निखारें 22
1.5 अपनी सोच पर कायम रहें 25
1.6 आपका अंत नियत है 26
1.7 अपनी वैयक्तिकता सिद्ध करें 28
1.8 अपने ऊपर भरोसा रखें 29
1.9 संवेग समीकरण का अनुसरण करें 31
1.10 असफलता का भय दूर करें 33
दूसरा अध्याय: सकारात्मक उर्जा बनाए रखें 35
2.1 सकारात्मक उर्जा का संरक्षण 36
2.2 विश्वास से रहें भरपूर 38
2.3 हमेशा रहें प्रसन्न 40
2.4 सफल होने का साहस 43
2.5 दूसरों की गलतियों से सीखो 45
2.6 परिणाम पाने के लिए दृढ़ निश्चय 48
2.7 सही समय पर कार्यवाही करें 51
2.8 अपने-आप को मजबूत बनाएँ 53
2.9 अपने कार्यों के प्रति दृढ़ रहें 57
2.10 सभी पेशे अच्छे होते हैं 60

तीसरा अध्याय: प्रतिदिन प्रेरित हों 64
3.1 दिवास्वप्न देखें 67
3.2 अपनी प्रवृत्तियों में बदलाव लाएँ 69
3.3 हर किसी की परवाह न करें 73
3.4 दूसरों की आलोचना से बचें 75
3.5 हर व्यक्ति और वस्तु बुरी नहीं है 77
3.6 हमेशा सकारात्मक सोचें 79
3.7 सफलता कम से कम संसाधन चाहती है 82
3.8 सफलता एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है 85
3.9 सफलता अचानक हाथ नहीं आती 88
3.10 प्रत्येक समस्या का समाधान होता है 90
चौथा अध्याय: अपना संसार स्वयं रचें 93
4.1 अपने ऊपर भरोसा बनाए रखें 95
4.2 आपके पास जो है, उसी में प्रसन्न रहें 97
4.3 वही करें, जो सही लगे	... 101
4.4 किसी का भरोसा मत तोड़ो	... 104
4.5 अपने व्यवहार के स्वामी बनें	... 107
4.6 आलोचना से न घबराएँ	... 109
4.7 समाधान का हिस्सा बनें	... 112
4.8 प्रगति का प्रतिदिन आकलन करें	... 115
4.9 अतीत को इतिहास के रूप में लें	... 118
4.10 अपने कर्मों पर दृढ़निश्चयी रहें	... 122
पांचवां अध्याय: मनोवृत्ति- सफलता का निर्णायक कारक	... 125
5.1 काम को अपने तरीके से करें	... 128
5.2 असफलता स्वभाविक है	... 132
5.3 गलतियाँ वरदान हैं	... 135
5.4 जहाँ भी हैं, स्वयं को सहज अनुभव करें	... 138
5.5 हमेशा जीतने की चाह बनाए रखें	... 141
5.6 आप इसे कर सकते हैं	... 145
5.7 संभावनाओं के द्वार खोलें	... 148
5.8 दृढ़ता बनाए रखें	... 150

जुनून रखें बरकरार

एक आठ वर्षीय लड़का, एक वृद्ध के पास गया व उसकी आँखों में झाँकते हुए पूछा “मैं समझता हूँ कि आप एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं। मैं आप से जीवन का रहस्य जानना चाहता हूँ, वृद्ध ने उस बालक को देख कर कहा- “मैंने अपने जीवन में इस विषय में काफी विचार किया। यह रहस्य चार शब्दों में बताया जा सकता है।

पहला है- ‘सोच!’ उन मूल्यों के बारे में सोचो, जिनके द्वारा तुम अपना जीवन बिताना चाहोगे।

दूसरा है- ‘विश्वास’! आपने अपने जीवन मूल्यों द्वारा जो सोच पैदा की है, उसी के आधार पर, अपने ऊपर विश्वास रखो।

तीसरा है- ‘स्वप्न’- अपने मूल्यों व विश्वास के आधार पर वे सपने देखो, जो पूरे हो सकते हैं।

आखिरी है ‘साहस’ – अपने सपनों को साकार रूप में बदलने का साहस रखो, जो कि आपके जीवन मूल्यों व विश्वास पर आधारित हो।

और इसी के साथ वाल्टर ई. डिज़नी ने नन्हें लड़के से कहा, सोचो, विश्वास करो, सपने देखो व उन्हें पूरा करने का साहस रखो।”

हमारी सोच से विश्वास पैदा होता है और उसी विश्वास के बल पर हम किसी की वस्तु का मानसिक चित्रण कर पाते हैं। यदि हम मानते हैं कि हम कर सकते हैं, तो हम केवल उसी दिशा में सोचना आरंभ कर देते हैं। एक बार आप यह दृढ़ विश्वास बना लें कि कोई काम हो सकता है तो आपकी सोच भी एक ठोस आकार

ले लेती है। यदि हमें लगता है कि डॉक्टर की सलाह से कोई आराम नहीं आने वाला तो डॉक्टर की बेहतर चिकित्सा भी हमें कोई फायदा नहीं दे पाएगी। विश्वास के बल पर ही दुनिया में अनेक कार्य संपन्न होते हैं। कई बार हमें लगता है कि हमने अपनी किस्मत व परिश्रम के बल पर मनोवांछित फल पाया है, जबकि हकीकत ये होती है कि हम पहले अपनी सोच पर भरोसा करते हैं, उसी विश्वास के बल पर सपना देखते हैं और फिर पूरे साहस के साथ उस सपने को साकार करने की दिशा में कदम बढ़ाते हैं। इसे ही संतुलित व उदाहरणीय जीवन कहते हैं।

यह वैज्ञानिक रूप से भी प्रमाणित हो चुका है कि रोज़मर्रा के जीवन में व्यक्ति अपनी ही क्रियाओं की प्रतिक्रिया पाता है। हम किसी वस्तु का मानसिक चित्रण करते हैं, दिवास्वप्न देखते हैं व दृढ़ विश्वास के साथ उसे पाने में जुट जाते हैं, इस तरह हमें अपना प्राप्य मिल जाता है।

जीवन एक बांसुरी की तरह है। ये भीतर से खोखली है व इसमें कई छिद्र हैं परंतु यदि हम इसे बजाते हैं तो इससे जादुई संगीत निकलता है।

हम जन्म से ही स्वतंत्र पैदा हुए हैं और हमारी सोच भी स्वतंत्र है। हो सकता है कि हमारा अपने चिंतन पर नियंत्रण न हो। हमारी सोच को कर्मों में बदलने वाला प्रमुख कारक है 'संकल्प शक्ति' ये दृढ़ विश्वास व कर्म के माध्यम से हमें लक्ष्य तक ले जाती है। कर्म हमारी सोच का ही उपोत्पाद है क्योंकि ये न्यूटन के इस सिद्धांत का अनुसरण करता है, जिसके अनुसार 'प्रत्येक क्रिया के समान व विपरीत प्रतिक्रिया होती है। आपके भीतर छिपे विचारों के आधार पर ही कर्म अपना आकार लेते हैं।

हममें से अधिकतर लोगों को यही लगता है कि हम अपनी मर्जी से किसी को कुछ भी कह सकते हैं या कर सकते हैं। हम ऐसा कर सकते हैं, क्योंकि हम एक आजाद देश में रह रहे हैं, जो

हमें किसी भी टी. वी. चैनल में हल्के-फुल्के मनोरंजन के लिए बने मंच पर, देश के शीर्षस्थ व्यक्तियों की भी आलोचना का अधिकार देता है। इतना ही नहीं, हम पूरी दुनिया के सामने, इस धरती के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति प्रमुख पर जूता उतारकर मार सकते हैं; जैसे, केवल हम ही ऐसे व्यक्ति हैं, जिसे अपने नापसंद तंत्र के विरुद्ध बगावत का अधिकार है।

हम यहाँ यह समझ नहीं पाते कि इस दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति व प्रत्येक वस्तु हमारे हिसाब से नहीं चलती। हमें अपनी सीमाओं का ज्ञान होना चाहिए तथा हमें विश्व के दूसरे लोगों की भी स्वतंत्रता को सराहना चाहिए व आदर देना चाहिए। हम अपने आसपास के लोगों की सोच पर निर्भर हैं क्योंकि हम शून्य में नहीं रह सकते।

आपको आर्कीमिडीज़ का प्रसिद्ध प्रयोग तो याद होगा, उन्होंने खाली गिलास में एक पंख व सिक्का रखा व गिलास पलट दिया, पंख व सिक्के ने एक साथ जमीन को छुआ लेकिन इतना तय है कि आप सामान्य वातावरण में इस प्रयोग को नहीं दोहरा पाएँगे, आपका सिक्का वजन के कारण, पंख की तुलना में, धरती का पहले स्पर्श करेगा। हम जैसे लोगों के लिए यही प्रयोग सत्य ठहरता है चाँद पर जाने वाले यात्री बंदरों की तरह उछलकूद कर सकते हैं परंतु धरती पर यह संभव नहीं क्योंकि यहाँ प्रत्येक व्यक्ति पर गुरुत्वाकर्षण भार है।

हम सब स्वतंत्र जन्म लेते हैं लेकिन जन्म लेने के तुरंत बाद हम उस बड़े पारिस्थिति की तंत्र का हिस्सा बन जाते हैं, जो धरती को नियंत्रण में रखता है, इसमें थोड़ा सा भी फेरबदल-तंत्र को संकट में डाल देता है। हमें उसी तंत्र को ध्यान में रखते हुए, अपने जुनून को बरकरार रखना होगा अन्यथा हम कहीं विलुप्त हो जाएँगे। यह हमारी उत्तरजीविता के लिए बहुत महत्व रखता है, हमें स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि हमारा जुनून एक वैयक्तिक पहलू है जबकि तंत्र की निरंतरता हमारे लिए अनिवार्य है। यदि यह तंत्र

रहेगा, तभी हम भी रहेंगे। इसके बिना हमारे अस्तित्व का कोई अर्थ नहीं रहेगा।

1.1 अपनी योग्यता पहचानें

2008 की जबरदस्त हिट 'गजनी', भारतीय बॉलीवुड के संपूर्णतावादी आमिर खान ने बनाई थी; इस फिल्म ने चारों ओर से वाहवाही बटोरी व समीक्षकों की भी पसंद बनी। हालांकि मैं फिल्मों का खास शौकीन नहीं हूँ लेकिन विविध भारत को एक करने में इनका बड़ा योगदान है। बच्चों ने मुझे फिल्म देखने को विवश किया तो मैं एक ही शर्त पर राजी हुआ कि मैं इसे अपने लैपटॉप पर देखूँगा ताकि फिल्म चलाने या रोकने का नियंत्रण मेरे हाथ में रहे।

सन् 2008 का आखिरी सप्ताह था, मुझे जबरन ऑफिस से जल्दी बुलवा लिया गया ताकि मैं फिल्म देख सकूँ। फिल्म देख कर तो मैं आश्चर्य में पड़ गया कि भारतीय फिल्में मैनेजमेंट छात्रों की केस हिस्ट्री क्यों बन गई हैं। फिल्म इतनी रोचक थी कि ऊबने का सवाल ही नहीं पैदा होता था। मैं फिल्म की वे दो पंक्तियाँ नहीं भुला सकता, जो अभिमान तथा 'वचनबद्धता' में अंतर करती थीं। मैं युवा पीढ़ी के लिए प्रेरक पुस्तक लिख सकता हूँ, यह मेरी 'वचनबद्धता' है लेकिन केवल मैं ही युवा पीढ़ी के लिए प्रेरक पुस्तक लिख सकता हूँ, यह मेरा 'अभिमान' है।

नायक निरंतर प्रयास द्वारा अपने भय पर काबू पाता है। वह ऐसा करता है, क्योंकि वह ऐसा करना चाहता था, इसलिए नहीं कि उसे मजबूर किया गया था। वह अपनी सकारात्मक उर्जा के बल पर भय से जीतता है व सफल होता है। कभी-कभी दूसरे लोग अपनी नकारात्मक शक्तियों के बल पर भयभीत करने का प्रयास करते हैं, जिसमें परिस्थितियाँ और भी बुरी हो जाती हैं।

हम सब उस घटना के साक्षी हैं, जब प्रसिद्ध लेखक विक्रम सेठ ने जयपुर के स्कूली छात्रों की साहित्यिक सभा में मंच पर

शराब की बोतल खोली थी मैं खुद शराब नहीं पीता पर किसी दूसरे के पीने पर मुझे कोई आपत्ति नहीं; लेकिन मैं ऐसे आडंबर के विरुद्ध हूँ, इससे आपकी छवि में कोई सकारात्मकता नहीं आती। इस धरती पर जन्मे प्रत्येक व्यक्ति में कुछ खूबियाँ व खामियाँ हैं, लेकिन इन कमियों का सार्वजनिक प्रदर्शन क्यों करें, जबकि इससे कोई सकारात्मक लाभ नहीं होने वाला। यह केवल अहंकार तथा कभी कभी असफलता के भय के सिवा कुछ नहीं है।

हम सभी कभी न कभी घमंडी अभिमान की लपेट में आ कर पूर्वाग्रहों से ग्रसित हो जाते हैं, जो कि हमारे जीवन की सकारात्मक विशेषताएँ नष्ट कर देते हैं। यह सब इसलिए होता है क्योंकि हमें अपनी क्षमताओं का भान नहीं होता तथा असफलता का भय भी होता है, उसी से बचने के लिए हम अपने-आपको खोल में समेट लेते हैं। एक निर्मल व प्रसन्न जीवन जीने तथा समाज को सकारात्मक योगदान देने के लिए हमें स्वयं को चुनौतियों से पार पाने की सोच अपनानी होगी। अचानक तो कोई भी अपने-आप को नहीं बदल सकता लेकिन नियमित अभ्यास व बदली हुई मानसिकता से ये संभव है। हमें याद रखना होगा कि भय को नियंत्रित किए बिना तो योग्यता व क्षमता भी व्यर्थ हो जाते हैं। भय सफलता का सबसे बड़ा शत्रु है, सफलता की यात्रा का शुभारंभ करने से पहले इसे नियंत्रित करना आवश्यक है।

जीवन की अधिकतर असफलताएँ अपनी क्षमता व दूरदर्शिता के साथ भय की सच्ची शिकार होती हैं।

1.2 भीतरी विशेषताएँ विकसित करें

कोई व्यक्ति सारी खूबियाँ होने के बावजूद कुछ पाने की दौड़ में पिछड़ जाता है और कोई थोड़ी क्षमता व योग्यता तथा अल्प परिश्रम से ही इच्छा पूर्ति कर लेता है। यह भाग्य नहीं बल्कि उसकी दृढ़ता है जो सफलता की दौड़ में उसे विजेता बना देती है। हममें से

अधिकतर असफल व्यक्ति इस दृढ़ता के अभाव में असफल होते हैं, इसके लिए कोई भी दूसरा कारक प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी नहीं है। दृढ़ता हमें बिना रुके, किसी वस्तु को पा लेने की इच्छा शक्ति प्रदान करती है खरगोश ने दौड़ में कछुए को हराना ही था पर अपनी दृढ़ता के अभाव में वह स्वयं हार गया। यहाँ दौड़ में उसकी प्रतिष्ठा दांव पर लगी थी जबकि कछुए का कुछ न जाता, उल्टे लोगों की सहानुभूति अलग मिलती

दृढ़ता हमें बिना रुके, किसी भी वस्तु को पा लेने की इच्छा शक्ति प्रदान करती है।

इस दौड़ में कछुए की हार नियत थी पर उसने अपनी दृढ़ता व अध्यनसाय के बल पर किस्मत ही पलट दी, जबकि खरगोश झूठे अहंकार व अति अभिमान के कारण हार गया। इस कहानी की पुरानी शिक्षा का 'Slow & Steady wins' महत्व नहीं रहा क्योंकि आप दो असमान स्थितियों की तुलना नहीं कर सकते।

कछुआ की हार निश्चित होने के बावजूद वह लक्ष्य तक पहुँच गया क्योंकि वह रास्ते में कहीं नहीं रुका। हममें से अधिकतर लोगों के साथ यही होता है कि थोड़ा-सा ही पाने के बाद हमें अपनी क्षमता पर विश्वास हो जाता है और वहीं से पतन आरंभ होता है। यदि हम किस्मत को बदल कर, अपने अनुकूल करना चाहते हैं तो कछुए जैसी दृढ़ता अपनानी होगी।

यदि व्यक्ति के भीतर ऐसी मारक प्रवृत्ति नहीं है तो वह अपने साथ न्याय नहीं कर सकता। दृढ़ता को अभ्यास से सीखा जा सकता है। इसे इच्छा होने पर पाया भी जा सकता है। विजेता या पराजित होने की इच्छा सबसे पहले अपने भीतर पैदा होती है, जैसे मछली की मृत्यु के बाद सबसे पहले उसका सिर गलने लगता है। कोई भी इस सोच से इंकार नहीं कर सकता लेकिन कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं, जो दूसरी सोच को हावी कर देते हैं कि देखें क्या हो सकता है?

सफलता, शिकारी की एक खूबी की तरह है। एक शिकारी शिकार का तब तक पीछा करता है, जब तक उसे काबू करने का अवसर नहीं पा लेता। इस दौड़ में वह कई बार हारता है लेकिन फिर भी कोशिश नहीं छोड़ता और अपनी इच्छा पूरी करके ही दम लेता है। वह पीछा करने की विशेषता अपने माता-पिता से सीखता है और जानता है कि शिकार का पीछा करना ही उसकी नियति है। लक्ष्य का पीछा करने की यह सीखने योग्य विशेषता ही सफलता का मूल सिद्धांत है।

जो व्यक्ति अपनी पसंद के क्षेत्र में श्रेष्ठता पाने के लिए प्रयास कर रहा हो, उसे अपने लक्ष्य से समझौता किए बिना चलते रहना चाहिए। हममें से अधिकतर पीछा करने की बजाए समझौता करने की प्रवृत्ति सीख लेते हैं। ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि समझौता करने के बाद हम चैन की नींद सो सकते हैं। मनोवैज्ञानिक रूप से भी, जो अपने पास हो, उससे संतुष्ट होना आसान होता है जबकि जो हमें असल में चाहिए, उसके लिए मेहनत व प्रयत्न करने पड़ते हैं।

सफलता केवल बुद्धिमानों की जागीर नहीं है, आंकड़ों से पता चलता है कि अपने लक्ष्य का निरंतर पीछा करने वाले, सफलता को ज्यादा जल्दी पा लेते हैं। बुद्धिमता को सफलता की एक आधारभूत विशेषता कह सकते हैं। जिस व्यक्ति का बुद्धि कौशल ऊँचा है तथा सफलता के लिए प्रयास भी करता है, वह कम बुद्धि कौशल वाले व्यक्ति की तुलना में ऊँचा उठ सकता है लेकिन अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि ऐसे व्यक्ति अपने सामान्य कामकाज में इतने उलझे रहते हैं कि वे सफलता प्राप्ति से जुड़े महत्वपूर्ण लक्ष्य 'दृढ़ता' को अनदेखा कर देते हैं। आरंभ से ही ऊँचे बुद्धि कौशल वाले व्यक्तियों की सोच होती है कि वे सर्वश्रेष्ठ हैं तथा चाहने पर कुछ भी पा सकते हैं लेकिन उनके जीवन में ऐसा समय कभी नहीं आता और वे अपने से कम बुद्धिमता वाले व्यक्तियों के लिए काम करते रह जाते हैं।

1.3 अपना भाग्य स्वयं तय करें

एक बार यदि आप जीवन की चुनौतियों का सामाना करने के लिए तैयार हो जाएँ तो विश्वास रखें, कोई भी आपको आपके प्राप्त पथ से भटका नहीं पाएगा। आपकी दृढ़ता ही आपकी विशेषता है; यदि आप अपने द्वारा आरंभ किए गए कार्य का अंत देखने का निश्चय कर लें तो आप उस सोच को नहीं बदल सकते। हम जानते हैं कि कोई भी घटना स्थायी नहीं होती परंतु फिर भी हम भावनाओं को नियंत्रित नहीं कर पाते। मुझे आज भी याद है, मेरे बेटे ने कॉलेज की प्रवेश परीक्षा में टॉप किया लेकिन उसी इंजीनियरिंग कॉलेज के पहले साल की वार्षिक परीक्षा में वह फेल हो गया। मेरे जैसे व्यक्ति के लिए इस सदमे से उबरना काफी कठिन था, जिसे पूरा विश्वास था कि उसके पास किसी की भी सोच बदल देने की पैतृक क्षमताएँ हैं। मैं अपने बेटे को होस्टल पहुँचने तक सारे रास्ते बेचैन रहा। मैंने अपने बच्चे का उतरा हुआ चेहरा देख कर पूछा कि क्या वह उसी प्रतिष्ठित कॉलेज में साल की पढ़ाई फिर से करना चाहेगा या कुछ और सोचा जाए (जिसके बारे में मुझे भी पता नहीं था) उस समय वो अठारह साल का लड़का नहीं बल्कि मासूम चेहरे वाला चार साल का बच्चा लग रहा था, जिसे मैं कई बार गोद में उठा कर रविवार को पिकनिक मनाने ले जाता था। उसने मेरे सवाल का जवाब दिए बिना सिर झुका लिया और वही मेरा जवाब था।

कई बार आपको किसी के चेहरे के भावों को देख कर, उसके मन की बात जाननी होती है। मैंने बेटे से कहा कि वह सारा सामान बांध ले। हम शाम की गाड़ी में सवार हो कर, अगली सुबह अपने शहर पहुँच गए मैंने पत्नी से सामान्य बने रहने को कहा, मानना पड़ेगा कि उसमें मुझसे जल्दी संभलने की ताकत है। हमने इसे सामान्य तौर पर लिया व उसे शहर के इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिल करवा दिया। पता नहीं, वो वहाँ क्या कर पाएगा लेकिन इस समय तो वह अच्छी तरह से पढ़ रहा है। हमने उस घटना की तरफ

कभी मुड़ कर नहीं देखा और न ही पैसों के नुकसान की चिंता की हमें उस बरबाद हुए पैसे से कहीं बेहतर मिला है।

इस धरती पर परिस्थितियाँ काफी हद तक एक सी होती हैं लेकिन व्यक्ति, स्थान व समय के अनुसार उन्हें संभालने का तरीका थोड़ा अलग होता है। यदि किसी स्थान, समय या व्यक्ति के साथ किसी व्यक्ति की प्रतिक्रिया न बदले तो ऐसे व्यक्ति से सावधान रहना चाहिए क्योंकि उसकी पसंद-नापसंद काफी मजबूत होती है, वैश्वीकरण के युग में यह अच्छा नहीं है। विपरीत परिस्थितियों में ही व्यक्ति की क्षमता मापी जाती है। हम क्या हैं और क्या नहीं; यह उन परिस्थितियों पर निर्भर करता है, जिन्हें हम संभाल रहे हैं।

मैनेजमेंट संस्था में एक परंपरा चली आ रही थी कि इसके दस शीर्षस्थ छात्रों को राज्य का शीर्षस्थ उद्योग चुनता था। यह कई वर्षों से चला आ रहा था। एक बार उस औद्योगिक संस्था ने एक शीर्षस्थ लड़के को केवल इसलिए लेने से मना कर दिया कि वह धारा प्रवाह अंग्रेजी नहीं बोल पाता था।

उस समय तक एम एन सी भी भारतीय बाजार तक पहुँच चुका था। लड़का काफी परेशान हो कर, अपनी किस्मत को कोसने लगा। इस घटना के छह महीने बाद उसे एक कंपनी से बुलावा आ गया जो ऐसा ही मेधावी छात्र चाहते थे, जो अंग्रेजी में इतना प्रवीण न हो। वे एक आम भारतीय के द्वारा, आम लोगों के लिए उत्पाद लांच करना चाहते थे। उस लड़के को अपने सहकर्मियों से कहीं ऊँचा पद मिला।

कई बार अवसर तो सामने आते हैं पर हमारे पास ऐसी योग्यता नहीं होती कि हम उन्हें लपक सकें।

आपको अपने आसपास कई लोग यह कहते मिलेंगे कि वे हर बात को दिल से लगा लेते हैं, इसमें कोई बुराई नहीं पर इसका

असर बुरा हो सकता है। किसी बात का बोझ अपने सिर ले कर चलने से पछतावे के सिवा कुछ हाथ नहीं आता, जब तक हमें अपनी गलती का एहसास होता है, तब तक वापिस लौटने के रास्ते भी बंद हो चुके होते हैं। हालात हमें कई बार उग्र निर्णय लेने पर विवश कर सकते हैं लेकिन हमारी क्षमता का वास्तविक परिचय तो विपरीत परिस्थितियों में ही मिलता है। यदि हम अपनी भावनाओं पर नियंत्रण पा लें तो सुधार का और अपने आसपास के लोगों से सम्मान पाने का मौका मिल जाता है।

हालात हमें कई बार उग्र निर्णय लेने पर विवश कर सकते हैं लेकिन हमारी क्षमता का वास्तविक परिचय तो विपरीत परिस्थितियों में ही मिलता है।

आपने किसी ऐसी विधवा को देखा होगा, जिसके पति की दुर्घटना में मृत्यु हुई हो या किसी माँ ने प्रशासनिक सेवा का प्रशिक्षण पाने वाला बेटा खोया हो। अगर वे लोग इस सदमे से उबर सकती हैं, तो क्या हमारी समस्या इससे भी बड़ी है? मैं आपको 'गीता' का अनुसरण करते हुए संत बनने का उपदेश नहीं दे रहा लेकिन आपको ऐसे व्यक्ति की तरह बनने को कह रहा हूँ, जो दूसरों से अलग होता है। हमारी सोच ही हमें सबसे अलग बना सकती है और हमारे कर्मों से ही सोच प्रतिबंधित होती है।

1.4 अपने हुनर निखारें

लोग अक्सर महसूस करते हैं कि किसी विश्वविद्यालय की डिग्री ही व्यक्ति को सफल बनाती है। बेशक यह जिंदगी की बुनियादी जरूरत है लेकिन डिग्री व सफल व्यक्ति का आपस में कोई नाता नहीं है। आपने देखा होगा कि आई. आई. टी. व मैनेजमेंट के छात्र; पूरी दुनिया में सम्भावित होते हैं, लेकिन जो उच्च पदस्थ अधिकारी उन्हें चुनते हैं, उनमें से अधिकतर, ऐसी किसी संस्था से संबद्ध नहीं होते। एक बड़ा सा गोल पत्थर सड़क के बीचों बीच पड़ा था।

जिसके कारण राहगीरों को वहाँ से गाड़ियाँ निकालने में काफी दिक्कत होती थी। म्यूनिसिपल ऑफिस में शिकायत करने पर कई इंजीनियर, मजदूरों के साथ मुआयना करने पहुँचे। बहस होने लगी। किसी ने सलाह दी कि पत्थर को बारूद से उड़ा दिया जाए और उसके टुकड़े कहीं फेंक दिए जाएँ। इस प्रक्रिया में करीब बीस हजार का खर्च आता। दूसरी सलाह थी कि उसे कोने में धकेल दिया जाए लेकिन उस भारी पत्थर को धकेल कर कोने में ले जाना भी मुश्किल था। बातचीत जारी थी और मजदूर आदेश की प्रतीक्षा में थे। तभी एक बूढ़े मजदूर ने कहा:- हम एक ही दिन में इतनी जमीन खोद देंगे कि पत्थर लुढ़का कर उसमें डाला जा सके। फिर जो मिट्टी बचेगी, वह सड़क समतल करने के काम आ जाएगी। चीफ इंजीनियर को सुझाव पसंद आ गया और वैसे ही काम करने का आदेश दे दिया गया।

हमें कहीं भी प्रतिष्ठित नौकरी पाने के लिए डिग्री चाहिए लेकिन नौकरी की सफलता हमारी सामान्य बुद्धि के उपयोग पर निर्भर करती है, जिसके लिए भारत या विदेश में अब तक कोई कोर्स नहीं बना। हाँ, राँची के एक एन. जी.ओ. में राजनीतिज्ञ बनाने के लिए एक कोर्स शुरू किया है। मेरे विचार से बिहार (विस्तृत बिहार, जिसमें झारखंड, राँची भी शामिल हैं) में ऐसे कोर्स की आवश्यकता है। भारत में और कोई भी ऐसा राज्य नहीं है जो कड़ी मेहनत की कमाई और ईश्वर प्रदत्त उर्जा सोखने के लिए ऐसा कोर्स चालू कर सके। कृपया याद रखें, मैं भी एक बिहारी हूँ और मैंने देखा है कि बिहारी आई. ए. एस. या राजनीतिज्ञ बनने की कितनी इच्छा रखते हैं।

हमें अपनी सामान्य बुद्धि के आधार पर निर्णय-निर्धारण के हुनर को निखारना होगा। डिग्री व डिप्लोमा किसी व्यवसाय की अनिवार्य शर्तें हो सकते हैं पर चाहे कोई काम तकनीकी हो अथवा गैर तकनीकी उसके लिए हुनर चाहिए जो कि बारीक नजर पाने से ही हाथ आता है।

औपचारिक शिक्षा आपकी सीखने की समयावधि घटाती है। एक शिक्षित व्यक्ति को कठिन परिस्थिति को समझने में कम समय लगता है तथा अशिक्षित को थोड़ा अधिक। किंतु हम यह नहीं कह सकते कि अशिक्षित व्यक्ति कभी परिस्थितियों को समझ ही नहीं सकते। समय का यह अंतर ही शिक्षित या अशिक्षित में भेद करता है। शिक्षित व्यक्ति निर्देशों को जल्दी ग्रहण कर लेता है। पता नहीं, आप जानते हैं या नहीं कि आज भी भारत के प्रतिष्ठित व्यावसायिक घरानों में उन एकाउंटेंट के वंशज काम करते हैं, जिन्होंने शुरूआत से सारा लेखा-जोखा संभाला और आज भी वे लेखे-जोखे रखने के लिए वही लाल खाते रखते हैं, जो हर दीपावली पर बदले जाते हैं। इन व्यावसायिक घरानों के पास स्टॉक एक्सचेंज के कायदे-कानून निभाने के लिए अनुभवी सी. ए., वित्तीय सलाहकार व साफ्टवेयर तो हैं ही किंतु इनके व्यवसायों का प्रमुख कार्य वे ही संभालते हैं, जिनके पास कोई व्यावसायिक डिग्री या डिप्लोमा तो नहीं है, पर वे पीढ़ी-दर पीढ़ी यही काम करते आ रहे हैं। यह केवल विश्वास ही नहीं बल्कि उस पद्धतिबद्ध कार्य का भी परिणाम है, जो इन घरानों को वहाँ तक ले आया है, जिसकी उन्होंने कल्पना तक नहीं की थी।

**शिक्षा आपको सफलता के सोपान तक ले आती है
किंतु आपको स्वयं सीढ़ियां चढ़ कर सफलता के
फल का स्वाद चखना होगा।**

कक्षा के चालीस छात्र एक जैसी शिक्षा पाने के बाद, यदि जीवन में एक जैसी उपलब्धि चाहें तो ऐसा नहीं होता और न ही होगा कि सबको एक सी प्राप्ति हो। आपको लग सकता है कि ये वैयक्तिक अंतर है लेकिन क्यों, जबकि सबके पास तकरीबन 1400 ग्रा० का दिमाग है। शिक्षा हमें समझ तक ले जाती है। शिक्षित व्यक्ति, अशिक्षित व्यक्ति की तुलना में समस्या का समाधान शीघ्रता से कर पाता है। इसके अतिरिक्त बाकी सभी प्रतिक्रियाओं में दोनों तकरीबन एक से होते हैं।

1.5 अपनी सोच पर कायम रहें

आजकल आई आई टी में दाखिला लेने का चलन बढ़ता ही जा रहा है। प्रतिवर्ष 4 से 5 लाख छात्र; 5000-6000 सीटों के लिए आवेदन करते हैं। मेडीकल, प्रशासनिक सेवाओं व मैनेजमेंट कोर्सों के लिए भी यही अंधी दौड़ जारी है। इसमें कोई हर्ज नहीं किंतु वे अपनी ताकत का अंदाजा लगाए बिना ऐसा करते हैं और नतीजन अवसादग्रस्त हो जाते हैं। कोई भी आपको इन परीक्षाओं में बैठने से रोक नहीं सकता किंतु हमारा शिक्षा तंत्र इतना सड़ गया है कि छात्र का उचित मूल्यांकन नहीं हो पाता। यदि ऐसा हो पाता तो असफल व अवसादग्रस्त छात्रों में आत्महत्या की प्रवृत्ति पर अंकुश लग पाता।

कोई भी शिक्षा के बुनियादी प्रश्न पर गंभीरता से विचार नहीं करता, उनका ध्यान राजनीतिक प्राप्तियों की ओर अधिक होता है। “प्राचीन काल में ब्राह्मण गौ मांस खाते थे या नहीं?” कक्षा सात के छात्र को इसे पढ़ाने या न पढ़ाने से क्या फर्क पड़ेगा? युवा वर्ग की चिंता ही किसे है। हम कहते हैं कि बच्चे का मन गीली मिट्टी की तरह होता है, उसे जो भी आकार दे दो, वो वैसा ही बन जाता है। इस व्यवसाय में मैं पिछले 25 वर्षों से हूँ और मुझे लगता है कि इस निराधार धारणा का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

हम जीवन में ऐसे कई संतुष्ट व्यक्तियों से मिलते हैं, जो मनचाहा पाने के बाद, उससे बेहतर सोचते ही नहीं। आपको आत्मविकास की पुस्तकों में सिखाया जाता है कि तनाव से बचने के लिए अपनी तुलना अपने से निम्नस्तरीय व्यक्ति से करें लेकिन कभी सोचा है कि ये मानसिकता आपको कहाँ ले जाएगी? यह सही है कि कभी-कभी आप जो कर पाने के हकदार हैं, वे नहीं कर पाएँगे किंतु इसके बावजूद आपको उससे कम नहीं करना चाहिए, जो आप कर सकते हैं।

हमेशा अपने जैसे स्तर वाले व्यक्ति से तुलना करें। यदि आप एक स्कूल प्रशासक हैं तो आपको अपने क्षेत्र में सफल व्यक्तियों की

कहानियों का विश्लेषण करना चाहिए; जिन्होंने अध्यापक के रूप में करियर की शुरुआत की, प्रिंसीपल बने और फिर अपनी संस्था खोली, जो कि जल्द ही प्रसिद्ध भी हो गई। इस तरह आपको अपनी शक्ति के आकलन के सूत्र मिलेंगे, आपको लगेगा कि आपमें भी प्रतिभा है अतः इस राह पर चलने में कोई हर्ज नहीं है।

राजधानी ट्रेन अपने डिब्बों या डिब्बों में बैठी सवारियों की नहीं बल्कि इंजन की क्षमता से चलती है।

याद रखें कि एक ही ट्रेक पर सभी तरह की रेलगाड़ियाँ चलती हैं; जैसे माल गाड़ी, सवारी गाड़ी व द्रुतगामी राजधानी एक्सप्रेस। राजधानी ट्रेन अपने डिब्बों या डिब्बों में बैठी सवारियों की नहीं बल्कि इंजन की क्षमता से चलती है। दूसरे क्षेत्र में सफल व्यक्तियों की तुलना से केवल तनाव हाथ आएगा और तनावग्रस्त होते ही 85 प्रतिशत क्षमता हवा हो जाएगी।

1.6 आपका अंत नियत है

एक दिन न्यूज चैनल पर ब्रेकिंग न्यूज (पता नहीं, खबरों के साथ ब्रेकिंग शब्द क्यों लगाते हैं जबकि हर खबर ब्रेकिंग ही होती है) देख रहा था कि अधिकतर कार्पोरेट हाऊसों ने भविष्यवक्ता नियुक्त किए हैं। वे नए प्रवेशकों की कुंडलियां मिलाते हैं इनका कहना है कि कुंडली में बृहस्पति व शुक्र (भारतीय जन्म कुंडली में पौराणिक नाम) हो तो ऐसे व्यक्ति दूसरों को नियंत्रित करने के लिए होते हैं, चूंकि ये ब्राह्मण हैं इसलिए इन्हें नियंत्रित नहीं कर सकते। यदि आपको थोड़ी-सी भी पौराणिक जानकारी है तो आप जान पाएँगे कि बृहस्पति व शुक्र देवताओं की कोटि में काफी नीचे हैं व अनेक ग्रह इन्हें नियंत्रित करते हैं।

यह कारक भी भविष्य गढ़ने में सहायक होता है। कुछ लोग इसे भाग्य कहते हैं। याद रखें कि भाग्य भी उनका साथ देता है जो मजबूत वचनबद्धता रखते हैं। वचनबद्धता मतलब आपकी क्षमता भी

है। यदि आप जानते हैं कि आप कोई निश्चित परियोजना पूरी करने की क्षमता रखते हैं तो सफलता पाने के अवसर बढ़ जाएँगे पर पहल तो आपको ही करनी होगी। संभावना ये भी है कि कोई शुभचिंतक आपको आपकी क्षमता का एहसास दिलाए, जैसे हनुमान को स्मरण कराया गया था।

खास बात यह भी है कि चाहे आप स्वयं अपनी क्षमता पहचानें या कोई दूसरा याद दिलाए; आप केवल वही कर सकते हैं, जो आप कर सकते हैं। करियर के किसी भी मोड़ पर आपको संतुलन का यह मंत्र भूलना नहीं चाहिए। अपनी प्रसन्नता खो कर कुछ बेहतर पाने के लिए तनावग्रस्त होने से कोई लाभ नहीं है। माना कि आवश्यकता अविष्कार की जननी है पर आपने अन्वेषकों की कहानियाँ भी तो पढ़ी हैं। वे ऐसा कर पाए, क्योंकि वे जानते थे कि वे कर सकते हैं। वे अपनी ताकत को पहचानते थे और उन्होंने लक्ष्य प्राप्ति के लिए उसका प्रयोग भी किया।

अवसर आपको लक्ष्य के पास तो ले जा सकता है पर निशाना तो आपको ही लगाना है।

यहाँ आप अकेले हैं और सफलता या असफलता आपकी अपनी ही नियति का परिणाम है। यह आपकी कुल मानसिक व शारीरिक शक्ति है, जो आपके लिए उपलब्धियों के द्वार खोलेगी। आपको अपनी असफलताओं व उपलब्धियों को छिपाना नहीं चाहिए। असफल होने पर भाग्य को भी नहीं कोसना चाहिए, ऐसा करने से कुछ हाथ नहीं आएगा। अपनी असफलता का दोषी स्वयं को मानें व सफलता के लिए अपने शुभचिंतकों व स्वयं को धन्यवाद दें।

बैठ कर असफलता के बारे में सोचने से केवल निराशा या तनाव ही हाथ आएगा। इस तरह तो आप आगे आने वाला अवसर भी खो देंगे, जो आपके द्वार खटखटा रहा है। आप स्वयं को ये सांत्वना दे सकते हैं कि आपने अपने प्राप्य से अधिक करने की सोची। क्षण भर के लिए रुकें; लक्ष्य की राह में आने वाली बाधाओं

का मूल्यांकन करें, विश्लेषण करें कि अगला अवसर पाने पर आपको कौन-सी क्षमता बढ़ानी होगी। इतनी तैयारी के बाद कोई भी आपकी राह नहीं रोक पाएगा।

सफलता प्रसन्नता लाती है और असफलता दुख। यह कहना मूर्खता है कि असफलता व्यक्ति को सफलता की ओर धकेलती है जबकि सार यह है कि अनचाही दुखद परिस्थितियों से निकल कर, आप सफलता की राह में कुछ और कदम बढ़ा पाएँगे।

मेरे हिसाब से तो आपकी योग्यता व क्षमता ही आपका भाग्य है। भाग्य उन्हीं का पक्ष लेता है, जो अपनी क्षमता पहचानते हैं। आप 'हनुमान' हो सकते हैं पर आपके लिए 'राम' बनने की संभावना है भी और नहीं भी। अपनी सफलता की कहानी लिखने से पहले अपनी क्षमता को परखें। आपको अपनी क्षमता व योग्यता से अधिक करने की आवश्यकता नहीं है परंतु उसका अधिकतम उपयोग करना होगा।

1.7 अपनी वैयक्तिकता सिद्ध करें

भारत में, श्री टी. एन. शेषन ने भारतीयों को याद दिलाया कि नई दिल्ली में एक ऑफिस है, जिसे 'ऑफिस ऑफ द चीफ इलेक्शन कमिश्नर' कहते हैं। यह नाम भारतीय प्रजातंत्र में एक मिथक बन गया। इतिहास उन्हें याद रखता है, जिन्होंने ईश्वर से प्राप्त क्षमता का पूरा उपयोग किया हो। यहाँ मैं आंध्रप्रदेश के एलोर जिले के श्री रामा राव का जिक्र करना चाहूँगा। भारतीय जाति प्रथा के अनुसार पिछड़ी जाति के होने के बावजूद उन्होंने दूसरों से माँग-माँग कर, अपने गाँव के बच्चों की जिंदगी बदल दी। वे अपनी क्षमता पहचानते थे इसलिए उन्होंने इन बाहरी स्रोतों से मदद ली व इन्हें नियंत्रित रखते हुए सफलता पाई। जब वे प्रसिद्ध हो गए तो कई समाज सेवी संस्थाओं ने उनकी मदद करनी चाही पर वे ग्रामवासियों के लिए कुछ करते हुए अपने भाग्य के नियंता स्वयं बनना चाहते थे और उन्होंने यह सपना साकार भी किया।

इस बात से कोई अंतर नहीं पड़ता कि आपके पास संसाधन हैं या नहीं, अंतर इस बात से पड़ता है कि आपके पास सामर्थ्य है या नहीं)

हाथी अपने सामर्थ्य के बल पर ही, मरने के बाद भी सवा लाख का होता है। यदि आपके पास कुछ पाने के सभी संसाधन हैं, तो समाज के प्रति आपको योगदान क्या रहा? आत्मविश्वास की पुस्तकों की सहायता से सफल व्यक्ति अस्थायी रूप से ही अपनी छवि बना सकते हैं क्योंकि आज तक ईश्वर, जिसने सारी सृष्टि को रचा है; वही ऐसा नहीं कर सका, अन्यथा भगवान शंकर (एक पौराणिक भारतीय देवता, जिन्हें धरती का सहायक माना जाता है) को भी 'भस्मासुर' राक्षस से जान बचा कर जंगलों में न भटकना पड़ता।

समय बीत जाएगा और कभी हाथ नहीं आएगा। इस सीमित समयवधि में ही अपनी योग्यता का पूरा लाभ उठाएं। यदि आप किस्मत वाले न होते, तो आपने मनुष्य रूप में जन्म ही न पाया होता इसलिए अभाग्य होने का तो सवाल ही नहीं पैदा होता। बस केवल शुरूआत करने की देर है यह इंतज़ार न करें कि कोई बाहरी बल आपको गति देगा, यदि ऐसा हो भी गया तो उसके हटते ही, आप फिर से स्थिर हो जाएंगे। सफलता के पथ पर आगे बढ़ने के लिए अपनी इच्छा शक्ति का प्रयोग करें।

1.8 अपने ऊपर भरोसा रखें

आपको यही सोचना चाहिए कि यदि आप अच्छे नहीं हैं तो अपने साथ वाले सभी व्यक्तियों से कहीं बेहतर हैं।

अपने ऊपर भरोसा रखना शुरू करें। याद रखें कि आप कुछ भी अनुचित नहीं कर सकते। आप इन बातों से ऊपर हैं। आप सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति के रूप में जन्मे हैं। आपको यही सोचना चाहिए कि यदि आप अच्छे नहीं हैं तो अपने साथ वाले व्यक्तियों से कहीं बेहतर हैं। यदि आप अपनी क्षमता का पूर्वानुमान कर लेंगे तो उसी

के अनुसार उपलब्धि भी पाएँगे। इसके बाद आप बस सफलता पाने के सपने देखें। आप कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं, यह भावना मन में आने के बाद आप इस तरह काम करेंगे कि कोई गलती नहीं होगी। गलतियाँ तो आम लोग करते हैं। ये वो लोग हैं जो अब भी सफलता तथा नियोजन की प्रारंभिक अवस्था में हैं। आप उनमें आगे हैं, आप ये दूरी पहले ही तय कर चुके हैं, यदि आपने भी वहाँ ऐसी ही गलतियाँ की होतीं तो आप आज यहाँ न होते। आपके स्थान पर कोई दूसरा होता। आपका दिमाग तेज है और तेज दिमाग लोगों के फैसले भी तेज होते हैं। मेरे हिसाब से आपको भी अपनी श्रेष्ठता पर संदेह नहीं होना चाहिए क्योंकि ऐसा है, तभी तो आपको सफल होने के लिए चुना गया है।

मैं तो यही सलाह दूँगा कि आप अपने शब्दकोश में 'गलत व गलतियाँ' शब्दों पर सैलो टेप चिपका दें। पारदर्शी टेप लगी होगी तो ये शब्द आसानी से नहीं दिखेंगे और आप इन्हें धीरे-धीरे भूल जाएँगे; जो कि आपके लिए जरूरी है। गलतियाँ करने वाला व्यक्ति अक्सर उन्हीं पर सिर धुनता रहता है। न तो आप गलतियाँ करेंगे और न ही कीमती समय बरबाद होगा। यह बचा हुआ समय ही आपको सफलता के और निकट ले जाएगा।

किसी भी व्यक्ति का करियर बनाने में वातावरण की अहम भूमिका होती है। पौधे व जीव-जंतु भी अपनी सुरक्षा के लिए अनुकूलन करते हैं आप इस धरती पर अकेले नहीं हैं। सफलता व असफलता पर्यावरण मित्र शब्द हैं। आप 'अकबर महान' व 'अशोक महान' की सफलता की तुलना तो कर सकते हैं किंतु अकबर की सफलता की तुलना किसी एक व्यक्ति से नहीं कर सकते। यदि आप ऐसे लोगों के बीच हैं जो व्यक्तियों व उनके संपर्कों की बजाए काम की कद्र करते हैं तो आपकी सफलता का ग्राफ तेजी से ऊपर जा सकता है लेकिन प्रायः ऐसा होता नहीं है।

वातावरण भी किसी व्यक्ति की सफलता या असफलता के लिए उत्तरदायी होता है।

यहाँ रूसी मोदी का उदाहरण ठीक रहेगा। टाटा की शक्ति कहलाने वाला व्यक्ति एयर इंडिया के सी. एम. डी. के रूप में असफल रहा। भारत में रूसी मोदी को मैनेजमेंट का पर्याय माना जाता है, जिन्हें दशक के सबसे सफल सी. ई. ओ. की उपाधि भी मिली किंतु एयर इंडिया के काम के वातावरण में वे अपने मैनेजमेंट फंडा को लागू नहीं कर सके। इसी से आप अंदाजा लगा लें कि यहाँ मि. मोदी नाकामयाब नहीं रहे बल्कि एयर इंडिया उनके मैनेजमेंट विशेषज्ञता का प्रयोग करके, विश्व की नंबर 1 एयरलाइंस नहीं बन पाई।

उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण के कारण वातावरण का कारक महत्वपूर्ण होता जा रहा है। पहले तो केवल अपने ही देश में प्रतियोगिता चलती थी किंतु अब सुदूर भारत के कोनों में होने पर भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता करनी पड़ती है। यहाँ भी अच्छे चांस या अवसर का बहुत महत्व है। एक अच्छा ब्रेक आपको सफलता की ओर ले जाएगा। सफलता को सफलता खींचती है। असफलता, असफलता को नहीं खींचती। लोगों को लगता है कि कड़ी मेहनत से सफलता हाथ आती है पर मुझे ये कुछ जँचता नहीं है। कड़ी मेहनत, सफलता की ओर ले जाने वाला एक कारक हो सकती है। यदि कड़ी मेहनत ही सब कुछ होती तो मजदूर सबसे ज्यादा सफल माने जाते।

1.9 मोमेंटम इक्वेशन (संवेग समीकरण) का अनुसरण करें

कभी-कभी आपका निशाना लगता है तो कभी नहीं लगता। इसमें कोई हर्ज नहीं यही जीवन चक्र है लेकिन जब आपका समय अनुकूल हो तो पीछे हटने की बजाए, तेजी से आगे बढ़ें, उस समय प्राप्त होने

वाला बल आपको कम उर्जा व समय में अधिक प्राप्ति दे पाएगा।

यही 'संवेग समीकरण' है। जब आपको काम के अच्छे तरीके से चलने का एहसास हो तो पूरी गति से आगे निकल जाएं। इसे जीवन में हमेशा अपनाएँ। यह न सोचें कि आप जो भी करेंगे, परिणाम आपकी गणना के अनुसार होंगे। ऐसा होना भी नहीं चाहिए वरना आप अहमवादी हो जाएँगे और आपका पतन होने लगेगा। जीवन हमेशा उलझे व गुंथे हुए नतीजे देता है, यह उसका स्वभाव नहीं, वह तो व्यक्ति को संतुलित रखना चाहता है ताकि वह सामान्य जीवन जी सके।

आपने अपने शिकार की प्रतीक्षा करते जानवरों को देखा होगा। कई बार वे पीछा करते रहते हैं और सफलता पाने की प्रतीक्षा में रहते हैं। यदि वे कायमाब न रहें तो उसी समय हालात को समझते हुए, दूसरे शिकार की तलाश में जुट जाते हैं। यदि हम भी असफलता के बाद थोड़ा आत्म-निरीक्षण करें तो आशा की किरण सामने आते देर नहीं लगेगी। शर्त केवल इतनी है जब चारों ओर अंधेरा व दुख हो, तो भी आपकी आँखें खुली हों, आंसुओं से न धुंधलाएँ व स्पष्ट रूप से दिखता रहे वरना आगे आने वाला अवसर हाथ से निकल जाएगा।

सफलता के पथ में, अगर आगे रास्ता न होने का संकेत मिले तो आपको उसी समय दूसरे रास्ते की तरफ चल देना चाहिए क्योंकि इसका रास्ता बहुमार्गी होता है। जीवन में सड़क की बजाय यात्रा अधिक महत्व रखती है। कभी-कभी तेज दौड़ना है, कभी धीरे चलना है तो कभी रुकना है। एक अच्छे चालक के लिए बने सभी निर्देशों का पालन करते हुए मंजिल तक पहुँचना होगा। अपनी व्यस्त दिनचर्या व दूसरे बन्धनों के बावजूद मंजिल के प्रति पूरी तरह से सावधान रहना चाहिए।

आपको प्रतिदिन स्वयं को प्रेरित करना चाहिए। प्रेरणा हमेशा सकारात्मक नहीं होती, यहाँ आपको स्वयं उस नकारात्मकता का प्रभाव घटाना होगा कई बार आप सफलता पाने के शार्टकट से

प्रेरित हो जाते हैं तो कई बार किसी दूसरे की मदद से सब कुछ पाना चाहते हैं, इन दोनों में से किसी भी दशा में मिली सफलता क्षणिक होती है क्योंकि यहाँ आप आत्मप्रेरित नहीं होते। अपनी योग्यता को धैर्य व उत्साह से गुणा कर दें तो प्रेरणा प्राप्त होगी। यह किसी व्यक्ति में नहीं बल्कि किसी भी कार्य के परिणाम में होती है। सकारात्मक कर्म से सकारात्मक प्रेरणा प्राप्त होती है तथा नकारात्मक कर्म से नकारात्मक प्रेरणा प्राप्त होती है।

आपका चिंतन ही प्रेरणा के लिए महत्वपूर्ण कारक है। दिशाहीन प्रेरणा कहीं नहीं ले जाती और आपका कीमती समय भी व्यर्थ हो जाता है। अपनी जिंदगी में कोई न कोई सपना जरूर पालें, इसके अभाव में आपकी यात्रा अधूरी है। जब तक आपको अपनी मंजिल या लक्ष्य का पता न चले तब तक आगे नहीं बढ़ना चाहिए। ये जरूरी नहीं कि आप हमेशा बहुत बड़ा सपना देखें लेकिन यह आवश्यक है कि यह आपकी सामर्थ्य के अनुपात में होना चाहिए।

1.10 असफलता का भय दूर करें

असफलता का भय ही आपको लक्ष्य प्राप्ति की दिशा से विमुख कर सकता है।

आपको लक्ष्य के अलावा उस पथ का भी पता होना चाहिए जिस पर आपने चलना है अन्यथा दूरी व अज्ञात भय आपको आगे जाने नहीं देंगे। आपको राह में आने वाली समस्याओं पर भी विचार कर लेना चाहिए।

संभावना तो है कि वे सभी बाधाएँ राह में आएँ किंतु यह भी तो संभावना है कि कोई बाधा आए ही न और आपकी यात्रा बिना किसी बाधा के संपन्न हो। आपको पता होना चाहिए कि विश्व की अर्थव्यवस्था भी इसी संभाव्यता सिद्धांत पर टिकी है। उच्च शीर्षस्थ वित्तीय बीमा कंपनियों प्रति वर्ष इसी के बल पर करोड़ों रुपए कमा रही हैं कि उनसे बीमा कराने वाले प्रति सौ व्यक्तियों में से कितने अपना आखिरी प्रीमियम देने से पहले मर जाएँगे।

जीवन में आने वाली मुश्किलें आपको संपूर्ण बनाती हैं, वे आपकी निर्णय निर्धारण क्षमता को निखारती हैं, एक सफल व्यक्ति के रूप में आपको सबसे अधिक इसी की आवश्यकता होती है।

केवल बाधाओं व मुश्किलों के भय से किसी यात्रा को आरंभ न करना तर्कसंगत नहीं है। जीवन में आने वाली मुश्किलें आपको संपूर्ण बनाती हैं, वे आपकी निर्णय निर्धारण क्षमता को निखारती हैं, एक सफल व्यक्ति के रूप में आपको सबसे अधिक इसी की आवश्यकता होती है। जब तक आप भीड़ का एक हिस्सा हैं, कोई आपकी तरफ ध्यान नहीं देगा लेकिन ज्यों ही आप भीड़ से अलग होंगे; आपके हर छोटे-बड़े काम पर सभी की नजरें होंगी।

ऐसा नहीं कि आप ये सब नहीं जानते लेकिन आप इस सोच को नज़रअंदाज कर देते हैं क्योंकि आपको लगता है कि ऐसा आपके साथ नहीं हो सकता। घटना के होने या न होने का नियंत्रण आपके पास नहीं रहता किंतु आपको दुर्घटनाओं का सामना करते हुए स्वयं को संपूर्ण बनाना होगा। ये आपको बदल भी सकता है लेकिन आपको इसे अनदेखा नहीं करना चाहिए (क्या आपने कभी खीरे की बेल देखी है) उन पर बड़े फल आते हैं किंतु किसी सहारे के बिना उनका जीवन चक्र पूरा नहीं होता, वे केवल एकवर्षी पौधे हैं। जबकि बहुवर्षी पौधे उगने में अधिक समय लेते हैं, छोटे किंतु अधिक संख्या में फल देते हैं, वर्ष प्रति वर्ष फल देते रहते हैं तथा उनके मरने पर भी, पौधे का एक भी अंग व्यर्थ नहीं होता।

केवल सीमित अवधि के लिए सफल हो कर उपहास का केंद्र न बनें। किसी बड़े अस्थायी लाभ से छोटा स्थायी लाभ कहीं बेहतर होता है। यह स्थायी लाभ ही आपको सबसे आगे ले जाता है तथा निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा भी देता है।

•

सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखें

काम करने की क्षमता ही उर्जा कहलाती है। कोई स्थानांतरण होने पर ही 'कार्य' किया हुआ माना जाता है। जब तक आप कोई स्थानांतरण नहीं करते तो भारी बोझ के बावजूद आप कुछ नहीं कर रहे। आप सोच रहे होंगे कि मैं आपको भौतिक विज्ञान पढ़ा रहा हूँ, लेकिन याद रखें कि इस धरती पर हर क्रिया व प्रतिक्रिया का कारण व प्रभाव का संबंध होता है। किसी एक दिशा में परिस्थिति या व्यक्ति पर लगाई उर्जा, आपके लिए सकारात्मक उर्जा में बदल सकती है। उर्जा अपने-आप में सकारात्मक या नकारात्मक नहीं होती बल्कि व्यक्ति या परिस्थितियाँ ही उसे सकारात्मक अथवा नकारात्मक बनाते हैं।

उर्जा को संरक्षित करके, बाद में अपनी इच्छानुसार उपयोग में लाया जा सकता है। उर्जा एक अनवीकरणीय स्रोत है इसलिए इसे सोच समझ कर प्रयोग में लाना चाहिए। राष्ट्रों में इसी उर्जा के लिए तो संघर्ष छिड़ा है। जिस राष्ट्र के पास उर्जा के सर्वाधिक स्रोत हैं, वही सबसे शक्तिशाली है, व्यक्तिगत रूप से भी ऐसा ही है। उर्जा न तो उत्पन्न की जा सकती है और न ही नष्ट की जा सकती है, यह एक से दूसरे तक स्थानांतरित हो सकती है। प्रत्येक व्यक्ति के पास अपनी सामर्थ्य के अनुसार स्थितिज उर्जा होती है, कुछ सकारात्मक उर्जा किसी कार्य को करने के लिए गतिज उर्जा में बदल जाती है। मैं बताना चाहूँगा; यहाँ तक कि गहरी नींद में होने पर भी व्यक्ति चयापचय के लिए ऊर्जा का उपयोग करता है, जो कि नींद के दौरान शरीर के अंगों की गति व हृदय का संचालन

करती है। आपके पास अपनी क्षमता जितनी स्थितिज ऊर्जा है तथा कल आप अपनी सामर्थ्य से अधिक ऊर्जा नहीं पा सकते।

जो भी व्यक्ति जीवन में सफलता पाता है, वह अपनी संरक्षित स्थितिज ऊर्जा के बल पर ही, संतुष्टिदायक स्तर पर कार्य करता है।

सकारात्मक ऊर्जा लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में सहायक होती है तथा नकारात्मक ऊर्जा राह में आने वाली बाधाओं से लड़ती है। आप थोड़ी-सी कल्पना से इन शक्तियों को दबा तो सकते हैं पर हममें से अधिकतर इन बाधाओं से उलझ कर, यह जताने में अपना समय व सकारात्मक ऊर्जा नष्ट कर देते हैं कि हम कमजोर नहीं हैं व हमें किसी भी स्थिति पर नियंत्रण पाना आता है। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि सकारात्मक गतिविधियों की राह में आने वाली ताकतों से उलझना ही हमारा लक्ष्य नहीं है, हमें बुद्धिमतापूर्वक उन्हें इस प्रकार संभालना है कि अधिकतम ऊर्जा, लक्ष्य की सकारात्मक उपलब्धि के काम आए।

2.1 सकारात्मक ऊर्जा का संरक्षण

हमें कभी भी मुसीबतें दूर करने के लिए प्रार्थना नहीं करनी चाहिए बल्कि सकारात्मक रूप से उनका सामना करने का साहस व शक्ति माँगनी चाहिए। मुझे यह संदेश एक दोस्त ने भेजा। मुझे यह बहुत पसंद आया। मेरी ब्विटिया ने इसे पढ़ कर कहा:- वाह! फिर मुझे लगा कि इसमें कोई बात है, हमें इन शब्दों में छिपे मतलब को समझना होगा।

हमें कभी भी मुसीबतें दूर करने के लिए प्रार्थना नहीं करनी चाहिए बल्कि सकारात्मक रूप से उनका सामना करने का साहस व शक्ति माँगनी चाहिए।

सबसे पहले, क्या यह संभव है कि जीवन में कोई समस्या ही न हो? मुझे लगता है कि यह संभव नहीं है। यदि हम जीवित हैं, तो

हर पल कोई न कोई गतिविधि घट रही है, जिससे अन्य गतिविधियाँ पैदा होती हैं। प्रत्येक क्रिया की एक प्रतिक्रिया होती है, नतीजन कोई समस्या या प्रसन्नता सामने आती है। इस संसार में हम अकेले नहीं रह सकते और न ही शून्य में विचर सकते हैं।

अतः जीवन में आने वाली मुश्किलों व मुसीबतों का सामना करने के लिए साधना व शक्ति का होना अनिवार्य है यदि हम समझते हैं कि हर क्रिया या प्रतिक्रिया एक समस्या है तब हमें इस समस्या पर काबु पाने के लिए अधिक साहस और दृढ़ता की आवश्यकता होती है। यहाँ, मुझे तो लगता है कि प्रत्येक क्रिया या प्रतिक्रिया एक घटना या दुर्घटना है। चाहे भूल से या जान-बूझ कर हम या दूसरे ऐसे कार्य कर सकते हैं और फिर निश्चित रूप से उस क्रिया की प्रतिक्रिया सामने आएगी।

मेरी पत्नी ने बड़ी मेहनत से नाश्ता तैयार किया। हालांकि उसमें नमक का अंदाज़ सही नहीं था। यहाँ मेरी प्रतिक्रिया बहुत महत्व रखती है मैं उस पर बरस सकता हूँ और प्रतिक्रिया में, वह मुझ पर झल्ला सकती है या वह माफी माँग सकती है या कोई प्रतिक्रिया नहीं देती। क्या सभी मामलों में आपसी तालमेल बनाए रखना संभव है। एक अच्छा माहौल तभी कायम रह सकता है, जब आप मर्यादा बनाए रखें व आपका मन समाधान केंद्रित हो। यदि आप समाधान केंद्रित हैं तो आप नमक घटाने के लिए नाश्ते में दही, सलाद या कोई भी खाद्य पदार्थ मिला सकते हैं और आपको पत्नी के साथ भी सही तरीके से पेश आना होगा। नतीजन आपकी पत्नी भी आगे से नमक डालते समय थोड़ा ध्यान रखेगी। किसी भी मामले में 'ट्रायल एंड एटर' का सिद्धांत चलता है। हम या कोई दूसरा, जो भी करता है, उसकी प्रतिक्रिया अवश्य सामने आती है जिस पल आपकी क्रिया, वातावरण में सुधार ले आती है, वहीं से अच्छे पलों की शुरुआत होती है। प्रसन्नता कहीं बाहर नहीं,

भीतर छिपी है हमें समाधान व प्रसन्नता की कला विकसित करनी होगी।

किसी व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता, श्रेष्ठता के प्रति उसकी वचनबद्धता के अनुपात में होती है।

आपको पूरा विश्वास होना चाहिए कि आप जो भी करना चाहते हैं, उसे करने की पूरी प्रतिभा व क्षमता आपके पास है व प्रत्येक हमसे बेहतर पाने की ही उम्मीद रखता है। जब भी हम सबसे बेहतर बनने का प्रयास करते हैं तो हमारे सभी कार्य, उस दिशा में बेहतर नतीजे पाने के लिए प्रेरित होते हैं। हो सकता है कि आपने गलत काम किए हों पर उसका अर्थ यह नहीं कि आपके पास कोई मौका नहीं बचा आपको अपनी भूलों व दूसरों के व्यवहार के आधार पर निरंतर प्रयास करने होंगे। चिंता न करें। अपनी तरफ से पूरी कोशिश करें व बेहतर नतीजे ही सामने आएँगे। चाहे थोड़ा समय लगे पर मेहनत का फल मीठा व अनुकूल ही होगा। याद रखें कि हर रात की एक सुबह होती है।

संदेह व भ्रम से दूर रहें। हमेशा भरोसा बनाए रखें कि जो भी होगा, अच्छा ही होगा। हो सकता है कि कुछ ज्ञात-अज्ञात कारणों से सफलता को हम तक पहुंचने में थोड़ा समय लग जाए। हमें तो अपनी क्षमता के अनुसार, निरंतर लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिश्रमरत रहना है। फिर प्रसन्नता, सफलता तथा विजय खुद ही अपना ध्यान रख लेंगे।

2.2 विश्वास से रहें भरपूर

विश्वास ज्ञान से पैदा होता है, लेकिन ज्ञान या जानकारी स्वयं उसे लागू करने की कला नहीं सिखाते। यदि आपने उस जानकारी पर कड़ी मेहनत नहीं की तो निश्चित तौर पर उसे लागू करना भूल जाएँगे। जो व्यक्ति पूरे धैर्य के साथ, विकास पर निरंतर नजर बनाए

रखते हैं तथा वांछित उत्तरदायित्व लेते हैं; उन्हें अपने क्षेत्र का विजेता बनने से कोई नहीं रोक सकता। इसी कला से श्रेष्ठता आती है। आपको एक अच्छा व श्रेष्ठ व्यक्ति बनने का पूरा प्रयास करना चाहिए। भगवान ने हमें इंसान के रूप में बनाया है और हमें निरंतर अपने-आप को सुधारना है। मनुष्य तथा प्रकृति से प्रेम करने वालों को ही ईश्वर का प्रेम मिलता है आप इस कला से एक स्नेही व प्रिय व्यक्ति बन सकते हैं। जब आपमें कड़ा परिश्रम, ज्ञान, श्रेष्ठता व प्रिय व्यक्ति जैसी विशेषताएँ होती हैं, तो आलीशान सफलता मिलते देर नहीं लगती।

आपको ने केवल अपने व्यवहार बल्कि स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहना चाहिए। प्रतिदिन की जॉगिंग, चहलकदमी तथा योग आपको फिट रखेंगे। आपको अपनी उम्र का लिहाज न रखते हुए, खुल कर हँसना- खिलखिलाना चाहिए। यदि आप एक प्यारे इंसान होंगे; तभी ऐसा संभव हो पाएगा।

जिसका हृदय अनुग्रह से भरा है तथा आत्मा स्नेह संचरित है, वही वास्तव में महान व्यक्ति है।

भौतिक वस्तुओं से स्थायी प्रसन्नता नहीं मिलती। हमें मन के संतुलन का प्रबंधन समझना चाहिए। मान लें आज हमारे पास कार, बंगला, सुंदर पत्नी, एसी. या कोई चाहने वाला या फिर अकूत धन-संपदा आदि क्यों न आ जाए; ये सब स्थायी रूप से प्रसन्नता नहीं दे सकते। कुछ ही समय में ये वस्तुएँ अवसाद, निराशा, कुंठा तथा बोझ बन जाएँगी यह स्पष्ट है कि दुनिया का सारा धन दे कर भी प्रसन्नता नहीं खरीदी जा सकती। धनी व्यक्ति एकाकी व लोगों के उद्देश्यों के प्रति संदेही होते हैं। भौतिक वस्तुओं में धन, यश, प्रसिद्धि, संबंध व मनोरंजक साधनों को शामिल कर सकते हैं; जिनका प्रभाव क्षणिक होता है।

2.3 हमेशा प्रसन्न रहें

प्रसन्नता का हमारी मानसिक प्रवृत्ति से गहरा नाता है। व्यक्ति को अपने मन व प्रवृत्ति में संतुलन बनाए रखना होगा। व्यक्ति को प्रत्येक वस्तु की सीमा समझनी चाहिए। हर भौतिक वस्तु की अपनी अच्छाईयाँ व बुराईयाँ हैं, हमें उन्हें अपनाने से पहले शांत मन से उनका मूल्यांकन करना होगा। इन सभी भौतिक वस्तुओं का मूल्यांकन तर्क की बजाय विवेचन पर आधारित होना चाहिए। तर्क मन को किसी भी दिशा में ले जाता है जबकि विवेचन इसे सकारात्मक चिंतन की ओर ले जाता है, जिससे संतुष्टिदायक परिणाम प्राप्त होते हैं।

प्रसन्नता तभी प्राप्त होती है जब हम अपनी कमी को स्वीकारते हैं तथा यह देखते हैं कि अपने में क्या बदलाव लाना है। हालांकि जब हम लोगों की अस्वीकृति के भय से अपनी मांगों को नजरंदाज करते हैं तो हम इन सबके दास हो जाते हैं और हमारे सारे काम आडंबर बन कर रह जाते हैं।

प्रसन्नता उस व्यक्ति के हाथ आती है, जो सही व्यक्ति से सही समय पर सहायता लेने के योग्य होता है। सही व्यक्ति का चयन बहुत मायने रखता है पर कभी-कभी आपको पता नहीं होता कि सही व्यक्ति कौन हैं यहाँ तक कि अपनी मांगे स्वीकार करने पर भी हमारा अहम नहीं जाता और नतीजन इससे एक ऐसी भावनात्मक तथा बौद्धिक संपूर्णता पैदा होती है कि लोग हम पर भरोसा करेंगे। हम चालें चलते हैं, पहल करते हैं, वो बनने की कोशिश करते हैं, जो हम नहीं हैं, फिर उम्मीद रखते हैं कि हमें कोई पकड़ नहीं पाएगा। इस राह में हमें वो मदद नहीं मिल पाती क्योंकि हम गलत राह पर हैं और दिखावा कर रहे हैं कि हमारे पास तो कोई समस्या है ही नहीं।

हमें याद रखना होगा कि हमेशा कोई न कोई किसी न किसी की सहायता को तत्पर होता है। सहायता से

हमेशा वित्तीय सहायता का अर्थ नहीं लेना चाहिए।

यह कोई सलाह या मार्गदर्शन भी हो सकता है।

धरती से आकाश, अंधकार से प्रकाश, जीतने या हारने, सफल आ असफल होने, उत्साही या निराश होने, प्रसन्न अथवा दुखी होने, ताकतवर या कमजोर होने तक अनेक स्थितियाँ हैं। यदि हम प्रवृत्ति सकारात्मक बनाए रखें तो वस्तुओं को संतुलन में रख सकते हैं। यदि हम विजेता हैं तो हमें फलों से लदे वृक्ष की तरह नत होना होगा। यदि हम पराजित हैं तो स्वयं को समझाना होगा कि अभी सब कुछ खत्म नहीं हुआ। कभी न कभी तो मैं सकारात्मक मनोवृत्ति तथा संतुलित नजरिए से समस्या सुलझा ही लूँगा।

जब अच्छे लोगों के साथ बुरा होता है, तो उनका क्या होता है? ये लोग कहेंगे कि मैं शांत, सहज व सरल कहने जा रहा हूँ। मैं सही मायनों में सही काम करना चाहता हूँ। मुझे मदद चाहिए: मैं इसे अकेले नहीं कर सकता: यहाँ मैं यह कहना चाहूँगा कि मुश्किलें तो सब पर आती हैं पर हममें से बहुत कम ऐसे हालात में खुश रह पाते हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी शांत व सहज रहने वाले ही विजेता बनते हैं तथा बाकी सफलता पाने के गुर ही खोजते रह जाते हैं।

उत्तरी अफ्रीका में काफी समय पहले एक मुखिया था। वह काफी धनी था, उसकी कई पत्नियाँ व संतानें थीं, परंतु वह प्रसन्न नहीं था।

उसने सोचा:- मेरे पास सब कुछ है। मुझे खुशी पाने के लिए क्या करना चाहिए? यह मुझे नहीं पता।'

एक दिन वह नौकरों पर चिल्लाया:- मैं खुश क्यों नहीं हो सकता? मुझे खुशी पाने के लिए क्या करना चाहिए? मुझे खुशी पाने के लिए क्या करना चाहिए?''

एक नौकर ने कहा:- “ओह! मालिक! आकाश को देखें। चांद-सितारे कितने प्यारे लग रहे हैं। देखें जिंदगी कितनी अच्छी है। इससे आपको खुशी मिलेगी।”

“अरे, नहीं-नहीं” मुखिया गुस्से से चिल्लाया “जब मैं चांद-सितारे देखता हूँ तो मुझे गुस्सा आ जाता है क्योंकि मैं जानता हूँ कि ये मुझे कभी नहीं मिल सकते।”

दूसरे नौकर ने कहा: “मालिक! संगीत से मन खुश होता है। हम सुबह से शाम तक, आपकी खुशी के लिए संगीत बजाएँगे।”

मुखिया का चेहरा गुस्से से लाल हो गया।

“अरे, नहीं-नहीं! संगीत अच्छा है, लेकिन दिन-रात संगीत सुनते जाना। नहीं, कभी नहीं।”

नौकर चले गए और गुस्से से भरा मुखिया अपने संपन्न कक्ष में बैठा रहा। एक नौकर आया व झुक कर बोला:- “मालिक! मैं आपको खुशी पाने का उपाय बता सकता हूँ?”

“वो क्या है?” मुखिया ने पूछा।

“बहुत आसान है। आप किसी प्रसन्न व्यक्ति को खोजें व उसका चोगा उतार कर पहन लें। इस तरह उसकी प्रसन्नता आपके शरीर में आ जाएगी और आप भी प्रसन्न हो जाएँगे।”

मुखिया ने ऐसा आदमी खोजने का आदेश दिया। हर किसी ने खोजा पर ऐसा कोई आदमी नहीं मिला। मुखिया आज भी दुखी मन से अपने नौकरों को कोस रहा है।

प्रसन्नता तो मन की अवस्था है, यह जानते ही वह दुनिया का सबसे प्रसन्न व्यक्ति बन सकता है। हमारे साथ मुश्किल यह है कि हम कुछ भी अच्छा होने पर तो अपने-आप को बधाई देते हैं लेकिन हालात बिगड़ने पर अपने सिवा हर किसी को दोषी ठहराने लगते हैं। यह हम सबके साथ गहरी विडंबना है। हम सारी सकारात्मक उर्जा यही स्पष्ट करने में लगा देते हैं कि हम सही हैं

तथा आसपास बाकी सब गलत हैं। जरा सोचें कि ऐसा करके हमें क्या मिल रहा है। क्या हमेशा दूसरों की सहानुभूति पाने की यह तरीका गलत नहीं है? ऐसे लोगों को जिंदगी में कभी कुछ नहीं मिलता और वे अपनी असफलता का सेहरा दूसरों को पहनाते रहते हैं।

2.4 सफल होने का साहस

सफलता उनसे नाता जोड़ती है जो कोई भी सौदा करने का साहस रखते हैं। सेब के पेड़ के नीचे लेट कर, मुँह में सेब गिरने का इंतजार तो कोरी मूर्खता है, ऐसा तो कभी इत्तेफाक से ही हो सकता है। या फिर पक्षी की बीट भी मिल सकती है। हमारी रोज़मर्रा की जिंदगी में भी तो यही होता है। हमें दूसरों से ऊँचा उठने के लिए किसी न किसी चमत्कार की उम्मीद रहती है हमें लगता है कि हमें ही ये हक मिला है। ऐसे लोगों को देख कर तो अपना माथा फोड़ने को दिल करता है।

जानते हैं कि कड़ी मेहनत से ही सब मिलता है लेकिन फिर भी हम सारी जिंदगी किसी करिश्मे के इंतजार में बिता देते हैं यह अकारण गंवाया गया समय कभी लौट कर नहीं आएगा। वहीं दूसरी ओर काम को सही तरीके से करने के लिए समय घट जाएगा और फिर उसी हिसाब से नतीजे आएंगे। कुछ लोग हमेशा सही समय आने का इंतजार करते रह जाते हैं व उन्हें लगता है कि उस समय में सब कुछ उनके हिसाब से होगा जब मैंने अपनी पहली किताब पर काम शुरू किया, तो मेरे लिए एकाग्रता एक समस्या बन गई। मुझे भी दूसरों की तरह लगने लगा कि अभी लेखक बनने का सही समय नहीं आया दिन बीतने लगे; मैं अपना लैपटॉप खोलता और दिमाग में कुछ न आने पर उसे बंद कर देता। एक दिन मैंने तय किया कि पूरे एक साल तक हर रोज़ लैपटॉप ले कर बैठूँगा, चाहे दिमाग में कुछ आए या नहीं! यह तरीका काम कर गया और तीन ही महीनों में मेरी किताब सामने थी। मैं इसके मास्टरपीस

होने का दावा तो नहीं करता पर यह जो भी है, वही है जो मैं बनाना चाहता था, मैं अपने-आप को सफल मानता हूँ। यह भी सच है कि किताब छपने में पूरा साल लग गया क्योंकि प्रकाशकों के संपर्क में आने के बाद ही मैंने जाना कि उनसे पार पाना कितना मुश्किल होता है।

यहाँ भी सिर्फ जुड़ाव नहीं वचनबद्धता काम आई। हममें से ज्यादातर काम से जुड़ तो जाते हैं पर उसके प्रति वचनबद्धता नहीं निभाते, सफलता उन्हीं का साथ देती है जो सच्चे मन से काम करते हैं। कोई काम करने का फैसला करने के बाद, यदि पूरी लगन से उस दिशा में मेहनत की जाए तो नतीजे क्यों नहीं आएँगे? आपको सही समय आने की प्रतीक्षा करने की बजाए यह सोचना है कि लक्ष्य तक पहुँचने की राह में, सारा समय अच्छा व उचित ही होता है। वचनबद्ध होंगे तो असफल होने की संभावना घटती चली जाएगी।

हम अपनी ही लापरवाही से असफल होते हैं, यहाँ बाहरी कारकों का प्रभाव न के बराबर होता है। सफलता तथा असफलता हमारी सोच पर ही निर्भर करती है। हम अपनी सोच के हिसाब से ही नतीजे पाते हैं।

पिता-पुत्र रोमांचक ट्रैकिंग पर निकले। पुत्र को हल्की सी चोट लग गई तो वह चिल्लाया 'शिट'। तभी उसे भी जवाब मिला 'शिट।' गुस्से में आ कर उसने कुछ और नकारात्मक शब्द दोहराए। उसे वही शब्द सुनने को मिले। पिता सब देख रहे थे। उन्होंने पुत्र के सीखने की प्रक्रिया में हस्तक्षेप नहीं किया। इन सब से तंग आ कर पुत्र ने पिता को देखा। पिता ने बताया कि वह केवल अपने ही शब्दों की प्रतिध्वनि सुन रहा था। उन्होंने पुत्र को सकारात्मक शब्द बोलने को कहा, बदले में उसे वही सुनने को मिले। पिता ने पुत्र को समझाया कि जीवन में भी यही होता है हम जो भी कहते या दोहराते हैं, जीवन उसी की प्रतिध्वनि देता है।

आपको लग सकता है कि यहाँ मैंने अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए यह प्रसंग दिया है इससे मुझे कोई इंकार भी नहीं है पर क्या इससे आपको कोई अंतर पड़ा? यदि आप सकारात्मक सोच रखते हैं तो इससे आपको कोई अंतर नहीं पड़ेगा और अगर आपने नकारात्मक सोच पाल रखी है, तो इससे आप सकारात्मक नहीं बनने वाले। अगर किताबें पढ़ने से ही लोगों की सोच बदल सकती, तो इस धरती पर इतने कष्ट न होते। बदलाव तभी आता है, जब हम चाहते हैं, इसके सिवा कोई दूसरा सहायक नहीं होता।

2.5 दूसरों की गलतियों से सीखें

इतिहास हमें सिखाने के लिए कोई ठोस व प्रामाणिक उदाहरण नहीं देता। भारत में मुगल साम्राज्य का संस्थापक बाबर, एक महान योद्धा था। उसने चार वर्ष के शासनकाल में चार युद्ध लड़े। इन युद्धों में उसने सिद्ध कर दिया कि वह भारत में लूटमार करने नहीं बल्कि मुगल वंश की स्थापना करने आया था, जिसने आने वाले ढाई सौ वर्षों तक भारत पर राज किया। यदि आपने भारत का इतिहास पढ़ा है, तो आपने देखा होगा कि वह कितना सकारात्मक चिंतक था। युद्ध आरंभ करने से पूर्व वह अपने सैनिकों से कहता कि वे अपने देश तो लौट नहीं पाएँगे क्योंकि वे काफी दूर आ गए हैं, यदि वे युद्धभूमि में मरे तो जन्नत पाएँगे और विजयी रहे तो समृद्ध भारत पर उनका राज होगा। तब सैनिकों के पास लड़ने व जीतने के सिवा कोई विकल्प ही नहीं बचता था।

इतिहास कुछ घंटों या दिनों में नहीं बना, इसे तत्कालीन शासकों की सोच ने गढ़ा है। यह न भूलें कि प्रेरक, प्रशिक्षक व पुस्तकें केवल वर्तमान की उपज नहीं बल्कि ये पिछले वर्षों में भी थे और आगे आने वाले वर्षों में भी रहेंगे क्योंकि हमेशा लोगों को उनकी सेवाओं की आवश्यकता रहेगी ताकि वे सफलता की राह में

मार्गदर्शन पा सकें। हर दशक में सफल, असफल व्यक्ति हुए हैं, अंतर केवल इतना है कि पहले लोगों के लिए सफलता थोड़ी कठिन थी और आज आप सभी आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों व गणनाओं द्वारा अपनी राह को प्रसन्न व सरल बना सकते हैं।

एक चीज जो आज तक नहीं बदली और न ही बदलेगी, वह है मनुष्य का मनोविज्ञान। यह प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग होता है। वर्तमान तथा अतीत की सफलता व असफलता की कहानियाँ एक सी हैं, एक थीं और एक रहेंगी। प्रत्येक व्यक्ति जो असफल हुआ, वह वचनबद्ध नहीं था और प्रत्येक व्यक्ति जो जीता, उसने 'जीत' के सिवा बाकी सब भुला दिया। यह कोई छोटी बात नहीं, इस से तो भारी अंतर आ जाता है। इस अंतर को तो कोई भी देख-समझ सकता है। यदि विजेता बनना चाहते हैं तो इस अंतर को जानना होगा।

व्यक्ति हमेशा सही निशाने पर तीर मारने का दावा तो नहीं कर सकता लेकिन वह जब भी प्रयास करे, सही दिशा में करना चाहिए। सही दिशा में प्रयास का मतलब है कि लक्ष्य प्राप्ति की राह पर चलना। हम उस दिशा में नहीं जा रहे, तो यह सोच कर लक्ष्य तो नहीं बदल सकते। ऐसा सबके साथ होता है। एक बार लक्ष्य तय करने के बाद जब परेशानी आती है तो आपको लगने लगता है कि गलत लक्ष्य चुन लिया, इससे तो नतीजा पाना कठिन है। आप लक्ष्य बदलने के बारे में सोचने लगते हैं। यदि आप लक्ष्य बदलते हैं तो बेशक कुछ समय बाद फिर से लक्ष्य बदलने के हालात सामने आते हैं और आप लक्ष्य ही बदलते रह जाते हैं।

व्यक्ति हमेशा सही राह पर चलने का दावा तो नहीं कर सकता लेकिन वह जब भी चले, सही दिशा में चले

मैं एक विद्यालय के अध्यापकों के समूह के साथ कार्यरत था, जिसे एक बड़ी व्यावसायिक फर्म नियंत्रित व संचालित करती थी।

मुझे विजनेस के एन. आर. मैनेजर ने कहा कि वे उन अध्यापकों की ऊर्जा का स्तर बढ़ाना चाहते थे। वह राज्य का सबसे पुराना स्कूल था और प्रतिवर्ष बोर्ड परीक्षा में एक-दो मेरिट छात्र देता था। मुझे बताया गया कि पिछले 3-4 वर्षों से दाखिले घट रहे थे क्योंकि छात्र सेंट्रल सिलेबस लेना चाहते थे। अध्यापक नए सिलेबस के बिल्कुल विरुद्ध थे। उनका कहना था कि यदि प्रक्रिया को वहीं न रोका गया तो वे हड़ताल पर चले जाएँगे। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मुझे किसी और जानकारी की आवश्यकता होगी तो मैंने इंकार कर दिया।

मैंने स्टॉफ के साथ चाय पीते हुए बताया कि एच. आर. मैनेजर क्या चाहते हैं, फिर मैंने कहा कि उन्हें किसी भी तरह के ऊर्जा स्तर को बढ़ाने की बजाए अपने भय से ऊपर उठने की जरूरत है। वे हैरानी में पड़ गए कि मैं उनकी जरूरतों का अंदाजा लगाए बिना ही अपना विषय बदल रहा था मैंने उन्हें भरोसा दिलाया कि यदि उन्हें मेरा विषय न जंचा, तो हम उसे बदल देंगे।

मैंने सत्र आरंभ किया उन परिस्थितियों का विश्लेषण किया जिन्होंने सोसायटी के वफादार अध्यापकों को हड़ताल का फैसला लेने पर विवश कर दिया था। यह मेरे करियर के मुश्किल सत्रों में से था। मैंने एक अच्छा श्रोता बनने का फैसला लिया जो कि मैं नहीं हूँ क्योंकि कोई और विकल्प नहीं था। एक घंटे की चर्चा के बाद पता चला कि विद्यालय सरकार के अनुदान से चलता था और सोसायटी आर्थिक मदद देती थी। उन्हें अपनी नौकरी की ओर से कोई डर नहीं था। वे अपने-अपने विषयों के अनुभवी अध्यापक थे पर मूल्यांकन पद्धति में प्रदर्शन करने से डरते थे। उन्हें भाषा का भी डर था। अभी तक वे स्थानीय भाषा में पढ़ाते आ रहे थे और अब अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाना पड़ता। यह सचमुच एक समस्या थी, जिसे मैनेजमेंट समझ नहीं पा रहा था।

चर्चा के दौरान मुझे पता चला कि मैनेजमेंट के सामने लक्ष्य ही स्पष्ट नहीं था। मुझे सबसे पहले झल्लाए हुए अध्यापकों व मैनेजमेंट प्रतिनिधि से मिल कर एक लक्ष्य तय करना था। उसी समय यह भी पता चला कि पहले तो वह बिजनेस हाऊस काफी कम आर्थिक सहायता देता था लेकिन अब कमीशन रिपोर्ट के कारण वह राशि काफी अधिक हो गई थी, जिसे वे देना नहीं चाहते थे।

मैं रोग को पहचानने में सफल रहा क्योंकि अभी तक तो सभी लक्षणों पर ही काम कर रहे थे। वे स्कूल को एक ऐसे तंत्र में डालना चाह रहे थे जहाँ छात्रों से मनमानी फीस लेने पर पाबंदी न हो और अच्छी शिक्षा देने का लक्ष्य कहीं पीछे छूट जाए। मैंने एक अच्छे परामर्शकर्ता के रूप में दोनों दलों की संतुष्टि कर दी थी।

2.6 परिणाम पाने के लिए दृढ़ निश्चय

एक बार आप नतीजे पाने की ठान लें तो पाएँगे कि हालात अनुकूल होते देर नहीं लगेगी। यह सब अपने-आप, नहीं आपके निश्चय से होता है। मैंने उन अध्यापकों को लिखित में उनकी नौकरी बने रहने का भरोसा दिलाया तथा छः महीने में पूरी वचनबद्धता के साथ, नए तंत्र में प्रशिक्षण पाने का आश्वासन भी लिया। यह सब पढ़ने में जितना आसान लगता है, मेरे लिए उतना ही कठिन था। मेरे पास एक ही विकल्प था कि मैं पीछे हट जाऊँ पर मैं ऐसा करना नहीं चाहता था मेरी सकारात्मक उर्जा ने परिस्थितियों को अनुकूल बना दिया। मैं जानता था कि स्वयं को दूसरों से बेहतर साबित करने के लिए, मुझे दूसरा अवसर नहीं मिलेगा।

अपने-आप को दूसरों से बेहतर सिद्ध करने के लिए आपको दूसरा अवसर नहीं मिलेगा।

कई बार कुदरत भी आपको परखती है ताकि जान ले कि वह सही हाथों में सफलता दे रही है या नहीं! सफल होने के बाद फ़ैसला लेने की ताकत आपके पास आ जाती है, आपकी छोटी सी

भूल दूसरों के लिए परेशानी की वजह बनती है। आपका अपना आत्मसम्मान ही दूसरों के सम्मान को समझता है। जिस व्यक्ति में आत्मसम्मान की भावना की कमी होगी वह निजी अथवा सार्वजनिक रूप से दूसरों के आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाता रहेगा क्योंकि वह नहीं जानता कि इसका क्या नतीजा हो सकता है।

आपको समझना चाहिए कि जिंदगी में तो छोटी-छोटी दिक्कतें आती ही रहेंगी और आपको उन्हें प्रतिदिन इसी तरह संभालना हैं, जैसे आप सुबह उठ कर चाय पीते हैं या दाँत साफ करते हैं। यदि आप इन छोटी दिक्कतों से पार पा सकते हैं तो बेशक बड़ी मुश्किलें हल करने में भी आप पीछे नहीं हटेंगे। हर कोई, हर रोज़ समस्याओं से दो-चार होता है कई बार बात छोटी-सी होती है, जिस पर ज्यादा ध्यान नहीं देना पड़ता और कई बार वह समस्या हल होने के लिए हमारा समय व ऊर्जा चाहती है। दोनों मामलों में हमारी योग्यता की परख होती है और हार-जीत के अवसर आधे-आधे होते हैं।

यदि आप छोटी समस्याएँ आसानी से सुलझा लेते हैं तो बेशक बड़ी मुश्किलें भी आसानी से हल कर लेंगे।

हम लगातार अपने आस-पास के लोगों का मूल्यांकन करते रहते हैं। यह एक सामान्य मानसिकता है जिससे हममें से कोई भी इंकार नहीं कर सकता। हम उन्हें जानने के बाद स्वयं को उनसे बेहतर दिखाना चाहते हैं लेकिन बदकिस्मती से ऐसा करते समय हमें याद नहीं रहता कि दूसरा व्यक्ति भी तो यही कर रहा है। अगर हम सब कुछ भुला कर अपनी ही क्षमताओं पर ध्यान देते तो शायद स्वयं को सबसे बेहतर सिद्ध कर पाते। एक बात याद रखें, दूसरों को छोटा बना कर, इस बात की क्या गारंटी है कि हम उनसे बड़े हो जाएँगे।

प्रत्येक व्यक्ति के पास अनूठी क्षमता व श्रेष्ठता होती है तथा किसी भी दूसरे व्यक्ति से उसकी तुलना नहीं हो सकती, चाहे वह

उसका कितना ही निकटतम व प्रिय क्यों न हो। प्रत्येक व्यक्ति का प्रदर्शन अपने-आप में अलग होता है। यदि ऐसा न होता तो इस धरती पर केवल एक पिकासो, एक न्यूटन, एक लिंकन व एक महात्मा गांधी न होते। उनकी अनूठी सोच ने ही उन्हें सबसे अलग ला खड़ा किया। बीस चित्रकार मिल कर भी पिकासो जैसा एक चित्र नहीं बना सकते, यही उनकी खूबी थी। किसी भी सफल व्यक्ति के लिए यही सच होता है।

यदि ऐसा है, तो दूसरों के बारे में अच्छा-बुरा जानने से क्या लाभ? हमसे तो आपको कोई मदद नहीं मिलने वाली। आपको सबसे अलग बनने के लिए अपनी ही क्षमता व हुनर को निखारना होगा। आपको समझना चाहिए कि इस संसार की प्रगति अलोकप्रिय निर्णयों का ही परिणाम है। जिन निर्णयों को दूसरे स्वीकार न करें और आप भी वही करें तो, अनूठापन कहाँ गया और प्रशंसा क्यों मिलेगी? आपके उस अद्वितीय प्रदर्शन में वो प्रशंसा छिपी है, जिसकी कोई नकल नहीं कर सकता।

संसार की प्रगति अलोकप्रिय निर्णयों का ही परिणाम है।

लोग कहते हैं कि हम सफल होना सीख सकते हैं। मैं नहीं मानता कि सफलता पाने का कोई रेडीमेड फार्मूला हो सकता है। माना कि असफल होने के कुछ नियम हो सकते हैं लेकिन सफल होने के लिए तो आपको दूसरों की सोच से थोड़ा हट कर सोचना होगा व उनसे आगे निकलना होगा। यह अनोखापन ही तो किसी को लोकप्रिय बनाता है।

कुछ नया बनाने या कर दिखाने के लिए किसी ऊँचे आई. क्यू. की नहीं बल्कि आपकी अनूठी सोच और पहल की आवश्यकता है। कुछ नया व अनूठा कर दिखाने की पहल, उमंग और वचनबद्धता ही सबसे आवश्यक हैं। खाली बैठे बैठे सिर्फ सोचने से कोई नतीजे सामने नहीं आते।

2.7 सही समय पर कार्यवाही करें

किसी भी खोज के लिए समय एक महत्वपूर्ण कारक है। कई लोग एक ही सोच को अपनाते हैं पर उनमें से कुछ ही शुरूआत करते हैं और कुछ ही नतीजों तक पहुँच पाते हैं। (मैं यहाँ अब्राहम लिंकन का उदाहरण पूरक के तौर पर नहीं ले रहा, जो बीस बार पराजित होने के बाद अंततः यू. एस. ए. के राष्ट्रपति बने। 'बिसलेरी' का उदाहरण लें। आप को किसी भी शब्दकोश में इस शब्द का अर्थ नहीं मिलता उसने सादे पानी को ऐसी कीमत पर बेचना चाहा जो भारत जैसे देश में कठिन था (जहाँ 70 प्रतिशत जनसंख्या निर्धनता रेखा से नीचे है) उसने सोचा, योजना बनाई और कार्यवाही की। अब बोतलबंद पानी के सौ से भी अधिक ब्रांड पर 'बिसलेरी' सबसे ऊपर ही है।

एम. एस. ओबराय एक क्लर्क थे और वे अपने नजरिए के बल पर 'ओबराय चैन ऑफ होटल्स' खोलने में सफल रहे। एक साधारण पिता के पुत्र के. के. पटेल वाशिंग पाऊडर 'निरमा' के माध्यम से हिंदुस्तान लीवर तथा दूसरे वाशिंग पाऊडर ब्रांडों को मात देने में सफल रहे। टोपीवाला एक सौ रुपए का नोट व मैट्रिक पास का सर्टिफिकेट ले कर बंबई आए थे। आज उनका 'बिंदी' व्यवसाय का 5 करोड़ का वार्षिक टर्नओवर है। डा० शरद कुमार दीक्षित को दो बार दिल का दौरा पड़ा, शरीर के निचले अंग सही तरीके से काम नहीं करते तथा शरीर से स्वरतंत्री भी निकाली जा चुकी है, किंतु इसके बावजूद उनके खाते में निःशुल्क पैतालीस हजार ऑपरेशन शामिल हैं।

वीथोवन का उदाहरण तो अद्वितीय है, महान संगीतज्ञ बहरे थे। एल्बर्ट आइंस्टाइन एक पेटेंट क्लर्क थे, जो विश्व के महान वैज्ञानिक बने। एक साधारण स्कूल अध्यापिका गोल्लडामीर इज़राइल की प्रधानमंत्री बनीं। फ्रेंकलिन डी. रूजवेल्ट, यू. एस. ए. के

प्रेजीडेंट बनने के बाद बीमार पड़ गए, उनकी दोनों टाँगों में लकवा मार गया लेकिन वे आज भी विश्व के प्रसिद्ध राजनेता माने जाते हैं।

चिंतन के प्रति वचनबद्धता ही सफलता की ओर ले जाती है।

भारत में, धीरू भाई अंबानी का उदाहरण लें, महान औद्योगिक साम्राज्य खड़ा करने वाले श्री अंबानी, पेट्रोल पंप पर काम करते थे। एक साधारण प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिका मायावती, भारत के सबसे बड़े राज्य की मुख्यमंत्री बनीं क्योंकि वे सभी अनुभवियों को पीछे छोड़ना चाहती थीं। उन्होंने 'सामाजिक इंजीनियरिंग' का अन्वेषण किया। सभी प्रमुख राजनीतिक दल इस बारे में जानना चाहते हैं कि यह कैसे काम करती हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि जिस तरीके से सामाजिक इंजीनियरिंग के नतीजे सामने आ रहे हैं, वो समय दूर नहीं जब हमारे देशवासी एक और सशक्त महिला प्रधानमंत्री को सामने पाएँगे।

मैं नहीं कहता कि इस दुनिया में कुछ भी असंभव नहीं बल्कि मैं कहना चाहूँगा कि यदि आप वचनबद्ध हैं, तो कुछ भी असंभव नहीं है। वचनबद्धता ही आपको लक्ष्य तक जाने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह आपको मनचाहा नतीजा पाने से पहले, थककर कर सोने नहीं देती। ये नकारात्मक भी हो सकती है लेकिन फिर भी वह वचनबद्धता है 'बिन लादेन' नकारात्मक वचनबद्धता का उदाहरण है। उसने अपनी नकारात्मक प्रतिबद्धता के बल पर, धरती के शक्तिशाली राष्ट्र को भी झुका दिया जरा सोचें कि नकारात्मक प्रतिबद्धता में इतना बल है तो सकारात्मक वचनबद्धता में कितनी ताकत हो सकती है।

यदि वचनबद्धता है, तो कुछ भी असंभव नहीं है।

2.8 अपने-आप को मजबूत बनाएँ

सकारात्मक ऊर्जा, वांछित दिशा में कार्य समाप्ति के लिए असीमित शक्ति प्रदान करती है। यदि आप कुछ चाहते हैं और राह में आने वाली मुश्किलों से लड़ने को तैयार हैं तो फिर नतीजा देखें। ऐसा नहीं कि यह सब आपको उपहार में मिलेगा बल्कि इस पर आपका पूरा हक होगा।

साधारण परिवारों में जन्में सफल लोगों के अनेक प्रसंग हैं, और उनकी कहानियाँ भी अलग-अलग हैं। सफलता 'एकल गीत' प्रदर्शन है इसे 'समूह गान' के रूप में नहीं ले सकते। याद रखें कि केवल वृद्धावस्था ही उस आदर्श व्यक्ति पर वार करती है, जो कुछ नहीं करना चाहता। यदि उस व्यक्ति की जीवन ऊर्जा समाप्त हो चुकी है तो उसे आगे बढ़ाने में कोई प्रेरक शक्ति काम नहीं आती। वह इसे अपनी किस्मत के रूप में लेता है, जहाँ वह स्वयं ही अपने अंत के लिए उत्तरदायी हैं आपको दान में कोई कुछ नहीं दे सकता।

केवल वृद्धावस्था ही उस आदर्श व्यक्ति पर वार करती है, जो कुछ नहीं करना चाहता।

मुझे याद है, यूनीसेफ के भारतीय प्रतिनिधि के सामने प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों के लिए मुफ्त भोजन का प्रस्ताव रखा गया था। ताकि अधिक से अधिक बच्चे स्कूल आएँ, उस दौरान मैं बिहार में जिला प्राथमिक शिक्षा परियोजना के साथ काम कर रहा था। प्राइमरी कक्षाओं के बच्चों के स्कूल न आने की वजह से ही यह उपाय सोचा गया था। प्रतिनिधि महोदय ने प्रस्ताव से इंकार कर दिया व आलोचनात्मक स्वर में कहा कि दान दे कर, हम गरीबी नहीं मिटा सकते। उन्होंने अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए कई राष्ट्रों के उदाहरण दिए और निःसंदेह वहाँ बैठे सभी लोग उनसे सहमत हो गए।

यदि हम बदलाव लाने को तैयार हों तो बदलाव ला सकते हैं।

न्यूटन का गति का दूसरा नियम कहता है विश्राम के क्षणों में शरीर में गति की बदलाव दर, लगाए गए बल के अनुपात में होती है तथा लगाए गए बल की दिशा में ही बदलाव होता है। यही सिद्धांत हमारे जीवन पर भी लागू होती है। यदि हम बदलाव लाने को तैयार हों तो बदलाव ला सकते हैं। यदि हम बदलाव लाना ही न चाहें तो दुनिया की कोई भी ताकत हमारी सोच नहीं बदल सकती। किसी भी काम को करने की तत्परता बहुत मायने रखती है। यदि यह किसी बाहरी कारक के कारण है तो उसके हटते ही तत्परता भी समाप्त हो जाएगी।

कुछ खास करने की इच्छा व चाहत भी सचमुच अनूठी होती है। हर कोई कुछ अलग करने की चाहत रखता है लेकिन बहुम कम लोग उस इच्छा को कुछ करने के जुनून में बदल पाते हैं। यदि कुछ पाने की तड़प पैदा हो जाए तो व्यक्ति अपने उद्देश्य पूर्ति से पहले नहीं रूकता। आपको ऐसे अनेक व्यक्तियों के उदाहरण मिल जाएंगे, जो अच्छे से अच्छे विचार को भी कार्य रूप नहीं दे पाते, बीच में ही छोड़ देते हैं।

गुलाम वंश के महान शासक कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुतुबमीनार बनाने की सोची व मृत्युपर्यंत उस पर काम किया। उसके बाद उसके दामाद अलतमश ने उसके सपने को साकार किया। इसे ही वचनबद्धता कहते हैं। कुछ पाने की ठान लें तो उसे पाए बिना चैन न लें; जो सोच लें, उसे कर दिखाएँ। कोई विचार तभी तक एक विचार है, जब तक आपके पास है। यदि उसे मारना चाहते हैं तो चार लोगों के बीच बता दें। ये चार लोग कोई बाहरी नहीं, आपके अपने व निकटतम ही होंगे।

यदि किसी विचार को मारना चाहें तो मीटिंग में उसे चर्चा का विषय बना दें।

लोग कुछ ही मिनटों में आपके विचार की धज्जियाँ उड़ा देंगे। उन्हें लगेगा कि आप अपने-आप को ऊँचा व अलग दिखाने के

लिए अनावश्यक रूप से उनका इस्तेमाल कर रहे हैं। उन्हें यह भी लगता है कि पता नहीं आप सफल होंगे या नहीं! यदि आविष्कारों व सफल व्यक्तियों ने भी यही गलती की होती तो वे उस मुकाम तक न पहुँच पाते, जहाँ तक वे पहुँचे।

के. के. पटेल की सफलता अद्वितीय थी। यदि उन्होंने लोगों के सामने कह दिया होता कि वे इतने बड़े ब्रांड के सामने अपना वाशिंग पाऊंडर लाना चाह रहे हैं तो लोग उन्हें ऐसा करने से रोकते और बाजार में 'निरमा' जैसा ब्रांड न आ पाता। ये उन सभी लोगों की कहानियों में से एक है, जो थोड़ा हट कर सोचने का साहस रखते हैं।

जब मैंने कुछ लिख कर छपवाने के बारे में सोचा तो किसी ने भी मुझे नहीं सराहा। मेरे अपनों ने भी कहा कि किताब लिखना कोई खेल नहीं, इसके लिए बड़ी रचनात्मकता की आवश्यकता होती है। आरंभ में मुझे भी यही लगा किंतु मेरे पास शाम के दो घंटे खाली होते थे और मैं उनका सही इस्तेमाल करना चाहता था। मुझे लगा कि किताब न भी छपी तो मैं सामग्री को किसी दूसरे रूप में इस्तेमाल कर लूँगा या पत्रिकाओं में छपने के लिए लेख दूँगा। अपने लेखन की परख के लिए, मैंने एच. आर. डी. जैसी पत्रिकाओं में लेख भेजे, जब वे प्रकाशित हो गए तो मुझे विश्वास हो गया कि मैं सही दिशा में जा रहा था।

कहानी यहीं खत्म नहीं होती। बीस से भी अधिक प्रकाशकों ने मेरी पहली पुस्तक को नकार दिया। उनमें से तीन ने तो काट्रैक्ट जैसी औपचारिकताएँ भी पूरी कर ली थीं, फिर साल से ज्यादा लटकाने के बाद मेरी परियोजना को नामंजूर कर दिया। मैं अपने लेखन पर डटा रहा। मुझे लगा कि अगर सचमुच मेरे लेखन में दम है तो हो सकता है कि बच्चे मेरी मृत्यु के बाद इसे छपवा सकें। मैंने कई जगह पढ़ा था कि लेखक की मृत्यु पश्चात् उसकी किताब छपी और 'बेस्टसेलर' किताब बन गई। एक और विचार ने मुझे

काम से जोड़े रखा। मुझे लगा कि जब मेरी अंगुलियाँ लैपटॉप पर चलने लायक नहीं रहेंगी तो ये मेरे पढ़ने के काम आएँगी पर इनमें से कोई भी सोच सच नहीं हुई और उसी शृंखला की तीसरी पुस्तक आपके हाथ में है। मैं इनके बेस्टसेलर होने का दावा तो नहीं करता पर दो ही सालों में मेरी दोनों पुस्तकों के चार व पाँच संस्करण बाजार में जा चुके हैं।

मैं यह भी नहीं कहना चाह रहा कि मेरे सर्वश्रेष्ठ लेखन को प्राकशकों ने किसी बैर भाव से छापने से मना किया। पर हमें भूलना नहीं चाहिए कि केवल दो प्रकार के व्यक्ति ही असफल होते हैं एक वे जो सिर्फ सोचते हैं और कुछ नहीं करते और दूसरे वे जो बिना सोचे-समझे काम करते हैं। पहले सोचें, परिणामों पर विचार करें, यदि वे आपकी सहनीय सीमा में आते हों तो तत्काल काम शुरू कर दें, सफलता आपकी होगी। इसे अनुमानित जोखिम मोल लेना कहते हैं। जीवन में कुछ पाना हो तो उससे जुड़े खतरों व जोखिम का अंदाजा पहले ही होना चाहिए।

केवल दो प्रकार के व्यक्ति ही असफल होते हैं, एक वे जो सिर्फ सोचते हैं और कुछ नहीं करते और दूसरे वे जो बिना सोचे-समझे काम करते हैं।

हर सीढ़ी पर पैरों के निशान बनाते हुए सीढ़ियाँ चढ़ें। इससे आपको पहचान की संतुष्टि मिलेगी। अपनी ऊर्जा के साथ गतिशील बने रहने की ताकत मिलेगी। कुछ लोग ऊँची छलांगें लगा कर सीढ़ियाँ टाप जाते हैं। ऐसा करने में कोई हर्ज नहीं लेकिन याद रखें कि हम यहाँ अनुमानित जोखिम की चर्चा कर रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति में इसकी संभावना अलग-अलग होती है, जो कि समय व अन्य कारकों के समानुपातिक भी होती है।

कुछ धावक शुरू में सारी ऊर्जा लगा कर, सबसे आगे तो निकल जाते हैं पर अंत में इतना थक जाते हैं कि दौड़ पूरी नहीं कर पाते। पहले-पहल किसी की तारीफ आगे बढ़ने की प्रेरणा देती

है लेकिन ज्यों ही कोई उसे पछाड़ता है तो उसकी सकारात्मक उर्जा घटने लगती है और फिर वहाँ तालियों की गड़गड़ाहट भी नहीं मिलती। तालियाँ तो हमेशा और हमेशा विजेता के लिए होती हैं। कोई व्यक्ति प्रशंसा का पर्याय नहीं हो सकता। जो व्यक्ति या टीम अपनी गति बनाए रखते हैं, वे ही विजेता कहलाते हैं।

कुछ लोग पूरी गति व समर्पण भाव से काम शुरू तो करते हैं किंतु धीरे-धीरे उनका उत्साह व गति घटने लगते हैं इसके दो ही कारण हो सकते हैं। या तो उन्होंने गलत लक्ष्य चुना या उनकी प्रकृति बहुमुखी है। वे दूसरों की देखा-देखी काम आरंभ तो करते हैं पर सकारात्मक उर्जा व एकाग्रता के अभाव में पूरा नहीं कर पाते। जो व्यक्ति जानता है कि वो क्या कर रहा है, और काम पूरा होने पर उसकी योग्यता क्या होगी, केवल वही विजेता हो सकता है। यदि इनमें से कोई भी तस्वीर धुंधली हो तो सफल होने के अवसर घट जाते हैं।

2.9 अपने कार्यों के प्रति दृढ़ रहें

सफलता एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। केवल धैर्यवान व्यक्ति ही सफलता के फल का स्वाद चख सकता है। हममें से प्रत्येक के पास वह धैर्य तथा साहस है किंतु हम उपलब्धि की दिशा में प्रयास ही नहीं करते। कुछ पाने का प्रयास करते समय व्यक्ति को अपने सीखने की गति की नहीं बल्कि अपनी जानकारी की समझ होनी चाहिए। सीखने की गति तो एक ऐसी खूबी है, जिसे अभ्यास से पाया जा सकता है।

‘समझ’ आपके ज्ञान का परिणाम है, सीखने की गति का परिणाम नहीं।

आपकी प्राथमिकता यही हो कि परिणाम पर विचार किए बिना, लक्ष्य की दिशा में काम किया जाए। पूरी लगन से किए गए काम का नतीजा अवश्य मिलता है। समय का प्रश्न हो सकता है। कुछ लोगों को ज्यादा प्रयास करने पड़ सकते हैं तो कुछ लोग कम

प्रयासों में ही परिणाम पा लेते हैं, ऐसा कभी नहीं होता कि कोई परिणाम ही सामने न आए। अपने प्रिय व आदरणीय अध्यापक से चर्चा के दौरान मैंने बुद्धिमान व कमजोर छात्र का अंतर पूछा तो उन्होंने बड़ा हास्यपद उत्तर दिया। हालांकि उस उत्तर में एक निहितार्थ छिपा था। उन्होंने कहा कि बुद्धिमान छात्र परीक्षा के पाँच मिनट बाद अपना विषय भूल जाता है जबकि कमजोर छात्र परीक्षा आरंभ होने से पाँच मिनट पहले सब भूल जाता है।

वैसे तो बुद्धि की क्षमता काफी मायने रखती है लेकिन मैंने अपने करियर के दौरान पाया कि निर्णय निर्धारण क्षमता ज्यादा महत्वपूर्ण होती है। बुद्धिमान छात्र के पास अपने बुद्धि कौशल के कारण अनेक विकल्प होते हैं किंतु वह असफलता के भय से उन्हें लागू नहीं कर पाता। ऐसे छात्रों को अपनी छवि बिगड़ने का भी काफी भय होता है, इसलिए समस्या के समाधान में भी उन्हें परेशानी होती है।

आपके आसपास के उदाहरणों से मेरे इस विचार की पुष्टि हो जाएगी। आप कुछ गलत किए बिना, सही नहीं कर सकते और अगर कर सकते हैं तो आप लाजवाब हैं, आपका क्या कहना? मैं तो मानता हूँ कि जो लोग कुछ नहीं करते, सिर्फ उन्हीं से गलतियाँ नहीं होतीं। विमान दुर्घटनाएँ अक्सर होती रहती हैं, व हम सब इस बारे में जानते भी हैं। कभी-कभी ये आतंकवादियों के कारण होती हैं लेकिन अक्सर इंसानों की गलतियों से होती हैं तो क्या हमें सभी विमान बंद करके रख देनी चाहिए। भारत में साँप काटने से अनेक लोग मरते हैं क्योंकि यहाँ लोगों को नंगे पाँव चलने की आदत है, तो क्या इससे हमें पारितंत्र के रक्षक साँपों को जान से मारने का वारंट मिल जाएगा।

जो लोग कुछ नहीं करते, कभी गलतियाँ नहीं करते।

गलतियों के भय से, निर्णय लेने से नहीं घबराना चाहिए अन्यथा हमारी प्रगति वहीं थम जाएगी और हम ऐसे हालात में आ

जाएँगे, जहाँ कोई भी निर्णय लेने की आवश्यकता ही नहीं बचेगी। हमें याद रखना चाहिए कि एक अच्छा फैसला कई बुरे विचारों का नतीजा होता है और ये बुरे विचार कम अक्ल व बुद्धिमान; दोनों व्यक्तियों के मन में आ सकते हैं। सफलता पाने के लिए केवल मध्यम दर्जे की सफलता चाहिए। यहाँ तक कि चेतन भगत भी इसी सोच को मान्यता देते हैं।

सफलता के लिए बुद्धिमता से अधिक अध्यवसाय की आवश्यकता होती है। आप किसी बुद्धिमान व्यक्ति के सदा सफल होने का दावा नहीं कर सकते किंतु किसी अध्यवसायी के सदैव सफल होने के अवसर ज्यादा होते हैं। दृढ़ता आपकी योग्यता है, यदि आप अपने प्रति सच्चे हैं तो इससे इंकार नहीं कर सकते। इस धरती के प्रत्येक व्यक्ति को सफल होने का समान अवसर व अधिकार प्राप्त है।

भारत में आई. ए. एस. (भारतीय प्रशासनिक सेवा) को काफी सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है, इससे जुड़े लोग काफी बुद्धिमान भी माने जाते हैं क्योंकि उन्हें देश के उच्च नियुक्ति बोर्ड के अधिकारी चुनते हैं। मैं इससे इंकार नहीं करता पर एक स्थिति के बारे में सोचें। अधिकतर बुद्धिमान छात्र बारहवीं की परीक्षा के बाद मेडिकल या आई.आई.टी. में चले जाते हैं। कृपया ध्यान दें मैंने कहा 'सारे' नहीं, अधिकतर छात्र) परंतु ये 'अधिकतर' ही करीब 90 प्रतिशत होते हैं। अपनी इंजीनियरिंग या मेडीकल की डिग्री पाने के बाद इनमें से कुछ फिर आई ए एस बनना चाहते हैं किंतु यह संख्या इतनी नहीं कि तल से इंकार के लिए अंतर कर सके।

आपको यह अच्छी तरह समझ जाना चाहिए कि आप गलतियाँ किए बिना जिंदगी से कुछ नहीं पाएँगे।

2.10 सभी पेशे अच्छे होते हैं

सफलता कोई एक बार हाथ आने वाली वस्तु नहीं है। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जो गलतियाँ करने में यकीन रखने वालों के साथ चलती है। आपको समझना चाहिए कि जीवन में गलतियाँ किये बिना कुछ नहीं पा सकते। जो गलतियाँ करने से नहीं डरते, वही सफल होते हैं बस शर्त इतनी है कि उन्हें अपनी गलतियाँ दोहरानी नहीं चाहिए। मेरे विस्मार्क का दावा है कि लोगों को दूसरों की गलतियों से सबक लेना चाहिए क्योंकि जिंदगी गलतियाँ करके सीखने का मौका नहीं देती।

मुझे वह महिला अध्यापिका याद हैं जो एक प्रशिक्षण सत्र के बाद मेरे पास आई थीं। उन्होंने कहा कि वह कभी भी अध्यापिका नहीं बनना चाहती थीं क्योंकि वे विश्वविद्यालय में हमेशा अपने विषय में प्रथम स्थान पाती थीं। उन्होंने दो बार आई. ए. एस. के लिए प्रयास किया पर असफल रहीं। इससे वे अवसादग्रस्त हो गईं तथा समय बिताने के लिहाज़ से अध्यापिका बन गईं। मैंने उनकी सारी बात सुनने के बाद थोड़ा गहराई से सोचा तो एक हकीकत सामने आई- उन्होंने कहा कि वे समय काटने के लिए अध्यापिका बनीं, हममें से अधिकतर लोग यही सोचने की गलती करते हैं कि वे समय काट रहे हैं जबकि वास्तव में समय उन्हें काट रहा होता है।

मैंने उन्हें यकीन दिलाना चाहा कि अध्यापन का पेशा भी बुरा नहीं है, यदि आप चाहें तो यहाँ भी अपनी योग्यता दिखा सकती हैं। उनकी कुंठा का मुख्य कारण यही था कि तृतीय श्रेणी में पास अध्यापिकाओं से उनकी तुलना होती थी, उन्हें आई. ए. एस. में पास न होने की इतनी कुंठा नहीं थी। मैं करीब तीन सत्रों में उन्हें एहसास दिला पाया। कि हर पेशे में असीम संभावनाएँ होती हैं बस उन्हें सामने लाने वाला चाहिए।

मैंने उन्हें इस पेशे से जुड़े विख्यात व्यक्तियों के उदाहरण दिए, जिन्होंने कुछ भी सोचे बिना अपने-आप को समर्पित कर दिया। मैंने उन्हें अध्यापन से जुड़े उदाहरण देने की बजाएँ हालात के हिसाब से समझाया।

करीब पाँच साल पहले राजस्थान सरकार ने दिल्ली-जयपुर नेशनल हाईवे-8 पर वोल्वो बसें चलाने का फैसला किया। तय हुआ कि वे नए ड्राइवर नहीं रखेंगे, राज्य सरकार की बसें चलाने वाले ड्राइवरों में से ही नियुक्ति होगी। उन्होंने अर्जियाँ मंगवाई। करीब तीन हजार लोगों में से छत्तीस को चुना गया। उन ड्राइवरों को वोल्वो बसों की बहुत थोड़ी जानकारी थी। वे उन ड्राइवरों से मिले, जो पर्यटकों को दिल्ली व मुंबई से जयपुर लाते थे। उस समय वोल्वो बसें मुंबई-पूना हाईवे पर चल रही थीं। रास्ते में चाय-नाश्ते के लिए बसें रोकने पर वे लोग वोल्वो बस ड्राइवरों से जानकारी लेते जबकि उनके दूसरे साथी बेकार की गपबाजी या ताश खेलने में समय बिताते। समय के सही इस्तेमाल से उन्हें काफी फायदा हुआ। वोल्वो के बारे में पर्याप्त जानकारी के बाद उन्हें भी वोल्वो का ड्राइवर बनने का अवसर प्राप्त हुआ। यह अवसर उनके लिए बदला हुआ माहौल और पाँच गुना वेतन व भत्ता लाया। हर पेशे में आगे बढ़ने व फलने-फूलने की संभावना होती है। अच्छा काम करने वाले लोगों की हमेशा जरूरत होती है और हमेशा उनकी आपूर्ति मांग से कम ही रहती है।

मुझे पाँच साल तक उस महिला से मिलने का समय नहीं मिला। फिर मैंने उन्हें अहमदाबाद के आई. आई. एम. के प्रशिक्षण कार्यक्रम में देखा, जिसे सी. बी. एस. ई. ने अपने प्रधानाचार्यों के लिए रखा था। वे एक नए रूप में मेरे सामने थीं। आपका विचार या नजरिया दुनिया बदल सकता है। उन्हें बदलें, दुनिया बदल जाएगी। आपके विचार या नजरिया ही आपकी नियति है। चाहे कितने भी प्रशिक्षण सत्र क्यों न ले लें, जब तक अपनी

सोच नहीं बदलेंगे, कुछ हाथ नहीं आएगा। प्रशिक्षण सत्र तो केवल आपको चिंतन प्रक्रिया से जोड़ते हैं।

**आपके विचार ही दुनिया बनाते हैं। उन्हें बदलें,
दुनिया भी बदल जाएगी।**

ऐसा नहीं कि लोग अपने विचार बदलने को तैयार नहीं लेकिन यह कुछ उस स्थिति की तरह है; जब हम किसी शव को अंतिम संस्कार के लिए ले जाते हैं, तो मन में यही विचार आता है कि यह जीवन नश्वर है, हमें यहाँ से खाली हाथ जाना है। हमें कोई गलत काम नहीं करना चाहिए लेकिन उस स्थान की सीमा से बाहर आते ही हम फिर से पहले वाले इंसान बन जाते हैं और भूल जाते हैं कि हमने क्या तय किया था। जब हम सकारात्मक चिंतन के लिए किसी प्रशिक्षण सत्र या किताब का सहारा लेते हैं, तब भी यही होता है। विषय के साथ रहने तक तो हम स्वयं को बदलने का भरोसा दिलाते रहते हैं लेकिन उसके ओझल होते ही हम पुरानी चिंतन प्रक्रिया पर लौट आते हैं और दावा करते हैं कि प्रशिक्षण सत्र या किताब किसी काम के नहीं है। जिस तरह भोजन में पौष्टिक तत्वों की मात्रा होने से हम पर कीटाणुओं का हमला नहीं होता तथा हम वृद्धावस्था में भी स्वस्थ रहते हैं उसी तरह सकारात्मक चिंतन हमें प्रतिदिन ऊर्जान्वित बनाए रखता है। यह हमें लगातार याद दिलाता है कि हम कोई आम आदमी नहीं हैं

हम दुनिया में हर किसी को नहीं बदल सकते पर उन्हें काफी हद तक अपने अनुकूल तो कर ही सकते हैं।

एक राजा अपनी पुत्री को बहुत प्यार करता था। उसने अपनी बिटिया को किसी भी दुख से बचाने के लिए एक ऐसे देश में भेज दिया, जो अपनी सुंदरता व शानदार इमारतों के लिए जाना जाता था। सड़कें भी साफ-सुथरी और अच्छी बनी हुई थीं। राजा ने कभी बेटी को अपने देश नहीं बुलाया। वह स्वयं ही वहाँ जा कर उसका हाल-चाल पूछ आता।

एक बार बेटी ने अपने देश लौट आने की इच्छा प्रकट की तो राजा की रातों की नींद उड़ गई। उसे अपनी राजधानी की सड़कों की खस्ता हालत का अंदाजा था। वह सोच रहा था कि उसकी बेटी इन उबड़-खाबड़ सड़कों पर कैसे चलेगी। उसे चोट लग गई तो राजा सह नहीं पाएगा।

अगले दिन दरबार में भी राजा काफी परेशान दिखा प्रधानमंत्री को राजा का यह विचार पसंद नहीं आया कि सारी सड़कें फिर से बनवाई जाएँ। इससे तो बाकी के विकास कार्य रुक जाते।

उसने राजा को सलाह दी कि राजकुमारी के पैरों से एक खास तरह की धातु बांध दी जाए ताकि वह खराब सड़कों पर आराम से चल सकें और उन्हें चोट न आए। तब तक जूतों की खोज नहीं हुई थी राजा को अपने मंत्री का यह अमूल्य सुझाव पसंद आ गया।

हमें समझना चाहिए कि कुछ हद तक हम अपने आप को तो बदल सकते हैं लेकिन उन्हें नहीं बदल सकते, जिनका हमारी उपलब्धियों से कोई लेना-देना नहीं है। मैनेजमेंट में हमेशा संगठन के अनुसार बदलने का सुझाव दिया जाता है, संगठन किसी एक व्यक्ति की सोच के हिसाब से कभी नहीं बदलेगा।

एक बार अपनी सोच बदल कर देखें, कई समस्याएँ तो वहीं खत्म हो जाएँगी और आप कई बुरी क्रियाओं व प्रतिक्रियाओं से मुक्ति पा लेंगे।

प्रतिदिन प्रेरित हों

ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी में छः नेत्रहीन रहते थे। एक दिन वे आपस में बहस करने लगे कि हाथी दिखने में कैसा होता है। उन्होंने हाथी को तलाशने का फैसला किया। उन्हें एक पालतू हाथी के पास ले जा कर खड़ा कर दिया गया।

पहले अंधे व्यक्ति ने हाथी के चौड़े हिस्से को छू कर कहा- “हाथी तो सख्त, खुरदरी व पलस्तर की दीवार जैसा है।” दूसरे व्यक्ति ने हाथी का दाँत थाम कर कहा-: शर्त लगा लो, हाथी रोलर जैसा होता है।” तीसरे ने हाथी की पूँछ पकड़ ली और बोला:- तुम दोनों गलत हो, हाथी तो रस्सी जैसा है।”

अब चौथे व्यक्ति की बारी थी। उसने हाथी की सूँड को हाथ लगाया; वह चिल्लाया:- मूर्खों हाथी तो किसी रंगने वाले जंतु जैसा है,” पाँचवें ने हाथी का कान छुआ। वह चिल्लाया, “हाथी तो काफी हद तक पंखे जैसा है।” छठे व्यक्ति ने हाथी की टाँग पकड़ कर घोषणा की:- हाथी तो मजबूत खंभे जैसा है।” विवाद कभी समाप्त नहीं हुआ क्योंकि प्रत्येक हाथी के एक अंग को ही पूरा मानने का दावा करता था।

इस कहानी का अपने-आप में कोई अर्थ नहीं किंतु कहानी की व्याख्या इसे सार्थक बनाती है। जीवन भी उस हाथी की तरह है और हाथी को छूने वाला प्रत्येक व्यक्ति हस्तक्षेप करता है पर उनमें से किसी के भी पास हाथी को समग्र रूप में देखने की क्षमता नहीं है।

हमारा जीवन सभी उतार-चढ़ावों के साथ, अलग-अलग लोगों को अलग-अलग तरीके से दिखता है, चाहे वे हमारे कितने भी आत्मीय क्यों न हो। कभी-कभी हमें लगता है कि हम ऐसा या वैसा करते तो ज्यादा बेहतर होता पर प्रश्न यह पैदा होता है कि आपको ऐसा करने से रोका किसने था? आप स्वयं अपने भाग्य निर्माता हैं। माना कि कोई बात माँ-बाप पूरी नहीं कर पाए तो आपने उसे समय की माँग क्यों नहीं माना? बीती बातों पर क्या रोना? इस धरती के अधिकतर लोग महसूस करते हैं कि उन्हें वो सब नहीं मिला, जिसके वे हकदार हैं पर उनमें से बहुत कम को एहसास होता है कि यह उनका अपना दोष है, जिसके लिए कोई दूसरा उत्तरदायी नहीं है।

हमेशा सबसे बेहतर पाने व कोई समझौता न करने का परामर्श दिया जाता है। ऐसा तभी संभव हो सकता है जब आप प्रतिदिन सकारात्मक प्रेरक बल द्वारा प्रेरित हों। यह प्रबलन आपकी सकारात्मक चिंतन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। सकारात्मक प्रबलन के बिना, आप जीवन में कुछ भी घटने की कल्पना तक नहीं कर सकते।

आप घटनाओं की व्याख्या कैसे करते हैं, आपकी 95 प्रतिशत भावनाएँ इसी पर निर्भर करती हैं।

प्रत्येक स्थिति में कुछ न कुछ सकारात्मक पाने का खेल खेलें। आप घटनाओं की व्याख्या कैसे करते हैं, आपकी 95 प्रतिशत भावनाएँ इसी पर निर्भर करती हैं आप स्वयं अपनी नियति हैं तथा आपकी सोच ही आने वाला कल बनाएगी। प्रत्येक क्रिया की कोई न कोई प्रतिक्रिया भी सकारात्मक होगी और इसका विपरीत भी सत्य है। यदि सकारात्मक प्रतिक्रिया चाहते हैं तो सकारात्मक क्रिया करना सीखें।

सकारात्मक चिंतन मस्तिष्क का संतुलित आहार है तथा नकारात्मक चिंतन मस्तिष्क का कुपोषण है। हमें नकारात्मक चिंतन से मस्तिष्क

को बचाना चाहिए क्योंकि यह कभी सफलता का वातावरण नहीं बनने देगी। कोई व्यक्ति जो किसी दूसरे को हराना चाहता है उसकी यह नकारात्मक सोच जो ऐसा नहीं कर पाएगी क्योंकि वह विपरीत दिशा में खिंचा चला जाएगा। सकारात्मक उर्जा से प्रेरित व्यक्ति न केवल विजेता बनता है बल्कि राह में आने वाली प्रत्येक समस्या का समाधान भी कर पाता है।

चिंतन एक ऐसा व्यवहार है, जिसे सीखा जा सकता है, इसका प्रतिदिन का अभ्यास आपको कुशल बना देगा। किसी भी घटना या परिस्थिति के उजले व सकारात्मक पहलू को देखने की कोशिश करें। पानी से भरे आधे गिलास को कभी भी 'आधा खाली' नहीं 'आधा भरा हुआ' गिलास कहें। आपको लगेगा कि कहना आसान है किंतु करना कठिन होता है। माना आप सही हैं लेकिन आप उन लोगों जैसे क्यों बनें जो कथनी व करनी में अंतर रखते हैं। उपदेश तो कुछ देते हैं और करते कुछ हैं। आपको सकारात्मक चिंतन की आदत स्वयं डालनी है।

आप काँटे के बिना गुलाब का सपना नहीं देख सकते लेकिन आप गुलाब तोड़ते समय काँटा कभी नहीं तोड़ते।

रोज़मर्रा की जिंदगी में हमारा अनेक ऐसे लोगों से सामना होता है, जिन्हें हम पसंद नहीं करते। आपको याद रखना चाहिए कि इस धरती पर हम किसी भी वस्तु को रद्दी या व्यर्थ नहीं कह सकते। प्रत्येक सजीव या निर्जीव की अपनी महत्ता है। हमारी सोच ही किसी को भी सार्थक या निरर्थक बनाती है। आप काँटे के बिना गुलाब का सपना नहीं देख सकते लेकिन आप गुलाब तोड़ते समय काँटा कभी नहीं तोड़ते। ठीक इसी तरह आप कभी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं पाएँगे, जिसमें कोई भी खूबी न हो। हमें उस व्यक्ति की उन खूबियों को अपनाना चाहिए, जो हमारे काम की हों तथा बाकी पर ध्यान नहीं देना चाहिए। पसंद-नापसंद के खाने बनाने की

बजाए व्यक्तिगत चरित्रों की पसंद-नापसंद के साथ जीवन का अनुभव लें।

आपका रवैया ही व्यवहार को गढ़ता है, व्यवहार कर्मों को आकार देते हैं और कर्मों के आधार पर ही सकारात्मक या नकारात्मक परिणाम सामने आते हैं। यदि सकारात्मक परिणाम चाहते हैं तो आरंभ से ही सकारात्मक सोच को अपनाने की आदत डाल लें। अभ्यास से इसे भी सीख सकते हैं तथा मनोवांछित परिणाम पा सकते हैं। अपनी सोच के स्वयं स्वामी बनें।

3.1 दिवास्वप्न देखें

दिवास्वप्न सफलता में बदल सकते हैं। सपनों से मेरा तात्पर्य उन सपनों से नहीं है, जिन्हें हमारा अवचेतन मस्तिष्क रात को सोते समय देखता है, ये वो सपने हैं, जिन्हें हम पूरे होशोहवास में देखते हैं इसे आप 'हवाई किले बनाना' भी कह सकते हैं। राजस्थान के उदयपुर का 'ट्री हाऊस' ऐसे ही दिवास्वप्न का साकार रूप है। जूलियस सीज़र की प्रसिद्ध पंक्तियाँ हैं:- मैं आया, देखा और जीत लिया।" इसी में किसी वस्तु को चाहने व पूरी प्रतिबद्धता के साथ पाने का संकेत छिपा है।

हममें से अधिकतर दिवास्वप्न देखने के आदी होते हैं ये कोई विशेषता नहीं है। हाँ, उन सपनों के पीछे भागने में आपकी विशेषता छिपी है।

हममें से अधिकतर दिवास्वप्न देखने के आदी होते हैं। ये कोई विशेषता नहीं। हाँ, इन सपनों के पीछे भागने में आपकी विशेषता छिपी है। पी. वी. आर. में फिल्म देखते समय दर्शक, पर्दे पर दिख रही हीरोइन जैसी पत्नी पाने का सपना देखता है लेकिन थियेटर से बाहर आते ही उसे यह सब याद भी नहीं रहता। दृश्य प्रभाव समाप्त होते ही क्षणिक स्वप्न भी कहीं खो जाता है।

इसे हम 'मतिभ्रम' कहते हैं। हममें से अधिकतर मतिभ्रम के शिकार हैं। हम किसी को कोई काम करते देखते हैं तो लगता है

कि ये तो हम भी कर सकते हैं, तब हम यह भूल जाते हैं कि उस व्यक्ति ने कितनी ऊर्जा व परिश्रम उस कार्य में लगाया है। केवल किसी वस्तु को देखने से उसकी प्राप्ति नहीं होती, उसे पाने के लिए अथक प्रयास भी करने पड़ते हैं।

इसी मतिभ्रम के कारण युवाओं में आत्महत्या व अवसाद की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। हम अपनी प्रत्येक इच्छा की पूर्ति चाहते हैं, जब वह पूरी नहीं होती तो भाग्य को दोषी ठहराते हैं। जैसे भाग्य कोई व्यक्ति है जो अपनी मर्जी से लोगों को अपना वरदान देने के लिए चुनता रहता है। वास्तव में ऐसा नहीं होता। इस दुनिया में कुछ भी पाने की कीमत अदा करनी पड़ती है। इस धरती पर कुछ भी निःशुल्क नहीं है और न ही इच्छाओं से आपकी उदरपूर्ति होने वाली है। आपको प्रकृति से व्यंजन के अनुसार सारी सामग्री बटोरनी होगी, फिर अथक प्रयासों के बल पर उसे पकाना होगा, तभी एक स्वादिष्ट व्यंजन तैयार हो पाएगा।

हम यह क्यों भूल जाते हैं कि हमसे बेहतर पाने वाले व्यक्ति के पास चार हाथ या दो सिर नहीं होते? क्या हम उस व्यक्ति की तरह हैं, जो अपने भाग्य से मिलने के बावजूद अभागा ही रह गया।

एक लकड़हारा जंगल से लकड़ियाँ काट कर शहर में बेचता। उसी से उसकी आजीविका चलती थी। एक दिन उसने ज्यों ही एक छोटे पेड़ को काटना चाहा तो एक आवाज़ सुनाई दी:— रूको, अगर तुम मेरा घर बरबाद नहीं करोगे, तो मैं तुम्हें वरदान दूंगी।

तुम कौन हो, क्या भगवान हो? लकड़हारे ने यहाँ-वहाँ देखकर पूछा—

उत्तर आया, मैं वनदेवी हूँ तथा वरदान देने की क्षमता रखती हूँ।

लकड़हारे ने सोचा कि वरदान माँगने से पहले पत्नी से सलाह कर लेना ठीक रहेगा इसलिए वह एक दिन का समय माँग कर आ गया। पति-पत्नी सोच-सोच कर हार गए तो उन्होंने एक दोस्त से सलाह लेने का निर्णय लिया। दोस्त ने कहा:— तुम दो की जगह चार

हाथ क्यों नहीं माँगते? इस तरह तुम्हारी आमदनी दुगनी हो जाएगी।”

लकड़हारे ने यही वरदान माँग लिया। उस दिन उसने सचमुच रोज़ की तुलना में दुगनी लकड़ियाँ काटीं पर जब लोगों ने चार हाथ वाला आदमी देखा तो उन्हें लगा कि शायद वहाँ कोई चार हाथ वाला राक्षस आ गया। तब उन लोगों ने राक्षस को मारने में देर नहीं की।

असामान्य माँगों का अंत भी असामान्य ही होता है। आपके आसपास के सफल लोग इस सिद्धांत को प्रमाणित करेंगे। उनके पास कोई जादुई चिराग नहीं था, केवल दृढ़ संकल्प शक्ति ही उनकी प्रेरणा बनी। उनके लिए यह कोई नियोजित यात्रा नहीं थी किंतु वे राह में आने वाली हर समस्या को सुलझाते गए और मंजिल तक जा पहुँचे। बस उनमें एक ही बात सबसे अलग थी, दूसरों से कुछ बेहतर पाने की इच्छा। उन्होंने सपने देखे व उन सपनों का विश्लेषण करके, लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में कदम बढ़ा दिया। यह उनका भाग्य नहीं था किंतु उन्होंने अपनी सामर्थ्य व क्षमता से इसका सृजन किया। पहले किसने सपना देखा, इससे ज्यादा यह महत्व रखता है कि उसे पहले आरंभ किसने किया। आपका अपना रवैया ही आपको दूसरों से अलग बना सकता है।

‘रवैया’ तथा ‘व्यक्तित्व’ भी ‘अनुभव’ तथा ‘योग्यता’ जितने ही महत्वपूर्ण हैं।

3.2 अपनी प्रवृत्तियों में बदलाव लाएँ

रवैया तथा व्यक्तित्व भी ‘अनुभव’ व ‘योग्यता’ जितने ही महत्वपूर्ण हैं। इसलिए किसी भी कार्य को अपनी सामर्थ्य के अनुसार चुनें व कार्य करें। रवैए की आधारशिला पर ही सफलता का महत्व खड़ा होगा। सकारात्मक मानसिकता वाला व्यक्ति, शंकालु व्यक्ति की तुलना में कहीं सक्षम होता है। आप अपनी दोनों हथेलियाँ रगड़ें; कमजोर तथा वृद्ध होने के बावजूद ताप महसूस होगा। यह कोई बाहरी उष्मा नहीं बल्कि आपके शरीर की स्थितिज ऊर्जा है, जो हमेशा आपके साथ होती है।

आपको इस ताप को महसूस करना होगा। यही प्रकृति का मौलिक नियम है। कोई भी सकारात्मक कार्य शुरू करें, परिणाम सकारात्मक ही होंगे। गणितीय सूत्रों में भी एवं को चाहे जोड़ें या गुणा करें, नतीजे + ही मिलते हैं। इसी प्रकार सकारात्मक सोच से सकारात्मक परिणाम ही सामने आते हैं तथा किसी भी अवस्था में आप नकारात्मक नतीजे नहीं पा सकते।

ऐसा नहीं है कि आज आप यहाँ कुछ नया पढ़ रहे हैं, बल्कि यहाँ आपको अपने भीतर छिपी क्षमता के प्रयोग की याद दिलाई जा रही है। अभी इतनी देर नहीं हुई कि आप इसका मानसिक चित्रण न कर सकें। जिस दिन से आप इसकी शुरुआत कर देंगे, उसी दिन से आप उन लोगों से बेहतर कर पाएँगे, जिन्होंने आपसे पहले शुरुआत की थी। केवल किसी काम में शामिल होने से कुछ नहीं होता, उसके प्रति लगाव ही, काम को आगे ले जाता है जुड़ाव से केवल मध्यम नतीजे सामने आते हैं, इससे व्यक्ति बेहतर परिणाम नहीं पा सकता।

आपके रवैए से भी काफी गहरा प्रभाव पड़ेगा। यदि किसी डॉक्टर के पास सलाह लेने के लिए जा रहे हैं और उसकी क्षमता के प्रति शकित हैं तो हो सकता है कि इस रवैए से आपको आराम न आए आपको कभी भी अपने रवैए या मनोवृत्ति पर संदेह नहीं करना चाहिए क्योंकि यही तो आपका प्रेरक बल है कई बार हम दूसरों के सामने अपनी मान्यताओं व रवैयों का झूठा चित्रण करने के लिए शब्दों का खेल खेलते हैं। प्रभाव डालने के लिए खेले गए इस खेल में हमारे पास शर्मिदा होने के सिवा कोई उपाय नहीं बचता।

आपकी वास्तविकता ही आपके रवैए को विकसित करेगी। हर वस्तु के प्रति सकारात्मक रवैया, सफलता की राह प्रशस्त करेगा। जब तक आपकी सोच सकारात्मक नहीं होती तब तक आपसे सफल होने की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

आपका रवैया; आपके मूल्यों, विश्वास तथा अपेक्षाओं को प्रकट है। आपका रवैया ही मूल्य गढ़ता है और आप मूल्य तंत्र के अनुसार ही कार्य करते हैं।

सकारात्मक रवैए से सकारात्मक मूल्य विकसित होते हैं और नकारात्मक रवैया, मूल्य तंत्र को नष्ट-भ्रष्ट करके; सही या गलत, किसी भी तरीके से कुछ पाने के लिए विवश कर देता है।

हममें से बहुत कम, गलत तरीकों से लक्ष्य पाने के लोभ को रोक पाते हैं, यदि पा भी लें तो कुदरत इतनी सरलता से निर्णय निर्धारण क्षमता नहीं सौंपती।

रवैया तथा भरोसे का स्तर ही आपको आगे या पीछे ले जाता है। रवैया आपकी विशेषज्ञता या ज्ञान जितना ही महत्व रखता है। नकारात्मक सोच को किसी भी कीमत पर, अपने ऊपर हावी न होने दें। हमेशा यही कहें:- मैं सबसे बेहतर करूँगा व सफल रहूँगा।' नकारात्मक सुझाव, रवैए पर भी गलत प्रभाव डालता है। स्वयं को याद दिलाएँ कि कई बार सफलता न मिलने पर, अपेक्षाएँ आपको अनुचित साधन अपनाने के लिए लुभा सकती हैं। यह याद रखें कि किसी सौदे में हारना तो प्राकृतिक है किंतु एक इंसान के तौर पर नीचे नहीं गिरना चाहिए।

एक उचित पहल, रवैया व मजबूत मूल्य तंत्र अंततः आपको सफलता व लक्ष्य तक ले जाएँगे। कोई भी समस्या सुलझाते हुए शांत व सहज भाव बनाए रखें। समस्या सुलझाने से पहले उसका अध्ययन करें। पहले सरल हिस्से से आरंभ करें। इस तरह आपको दूसरा कठिन हिस्सा सुलझाने की प्रेरणा प्राप्त होगी।

आप सही हैं या गलत, यह आपके सिवा कोई दूसरा तय नहीं करेगा। इसका निर्णय करने के लिए आप स्वयं ही पारखी हैं। समय व स्थान के सिवा कुछ भी सही या गलत नहीं होता। मान लें कि आप किसी को रिश्त देते हैं तो ये गलत है, लेकिन यदि आप अस्पताल में किसी अनजान दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को भर्ती कराने के

लिए लाइन में लगे हैं और वहाँ तत्काल सहायता पाने के लिए रिश्त देते हैं, तो मेरे हिसाब से यह गलत नहीं है ये हालात ही आपको सही या गलत करने पर मजबूर करते हैं और जो काम आप करेंगे, वे हमेशा आपके साथ रहेंगे। हो सकता है कि गलत काम करते समय आपको महसूस न हो लेकिन शायद बाद में आप अपने गलत कामों को न भुला पाएं।

आपने ऐसे व्यक्ति भी देखे होंगे, जो अपनी असफलता के लिए तंत्र या दूसरे लोगों को दोषी ठहराते रहते हैं। जरा सोचें, अगर किसी ने आपको मात दी भी है तो इसलिए कि वह आपसे बेहतर है और बेहतर पाने का हकदार भी है। फिर अच्छी गाड़ी चलाने वाला अच्छा चालक नहीं होता; बल्कि अच्छा चालक वह होता है, जो सड़क पर गलत गाड़ी चलाने वाले ड्राइवर से अपनी गाड़ी का बचाव भी करता है। जब भी कुछ बेहतर पाने का प्रयास करें तो आपको प्रत्येक से तथा प्रत्येक स्थिति से सावधान रहना चाहिए। यदि आप कुछ बेहतर पाना चाह रहे हैं तो आपको सिद्ध करना होगा कि तमाम मुश्किलों व तकनीकों के बावजूद आप सबसे बेहतर पाने की ताकत रखते हैं।

**रवैया तथा विश्वास ही आगे या पीछे ले जाते हैं
रवैया कहीं ज्यादा मायने रखता है। यह आपके ज्ञान
या विशेषज्ञता जितना ही महत्वपूर्ण है।**

आपको हमेशा यह नहीं देखना चाहिए कि देखने वाले क्या कहेंगे, वरना सही तरीके से आगे बढ़ना मुश्किल हो जाएगा। हाँ, इतना ध्यान अवश्य रखें कि कि आप जो भी करें, वह स्वाभाविक हो। आप से बेहतर जज कोई नहीं हो सकता। यदि आपने स्वयं को परखने की आदत डाल ली तो मैं पक्के यकीन से कह सकता हूँ, कि आप कभी गलत नहीं हो सकते।

3.3 हर किसी की परवाह न करें

आपको जीवन में अनेक ऐसे व्यक्ति मिलेंगे जो सही-गलत की परख किए बिना आपकी आलोचना करेंगे। आप उनकी तरफ ज्यादा ध्यान दिए बिना आगे चलेंगे, तो निश्चय ही सबसे अलग नतीजे पाएंगे। यह निर्णय आपके भविष्य को भी काफी हद तक प्रभावित करेगा।

एक बार दो मेढ़क कुएँ में गिर गए। पास से गुजर रहे मेढ़कों ने कहा:- प्यारो! कुँआ इतना गहरा है कि तुम्हारा बाहर आना मुश्किल है”, फिर वे दयावश रोने लगे। एक मेढ़क ने यह सुना तो हिम्मत हार कर बैठ गया। उसने कुएँ से निकलने की कोई कोशिश नहीं की। दूसरा मेढ़क बहरा था। उसे लगा कि बाकी मेढ़क उसे बाहर आने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। उसने सारी ताकत बटोरी और एक ऊँची छलांग में बाहर आ गया।

कभी-कभी आलोचना की तरफ कान न देकर भी बेहतर नतीजे पाए जा सकते हैं। मैं भारत के बड़े औद्योगिक घरानों में से एक के साथ शैक्षिक परियोजना पर काम कर रहा था, मेरे मित्र मुझसे अपनी समस्याएँ कहते व मैं उनके हल तलाशता। मेरे अधिकतर मित्र स्कूल व कॉलेज के प्रिन्सिपल के तौर पर काम कर रहे हैं तथा संतुष्ट हैं। जब भी हम मिलते तो हर कोई आदतवश स्कूल प्रबंधन की निंदा करता कि वे स्कूल छात्रों की भलाई से जुड़ी मांगों की परवाह नहीं करते ऐसा केवल निजी रूप से संचालित संस्थाओं में नहीं था, सामुदायिक व सरकारी शिक्षा संस्थाओं में भी यही हाल था।

मैं ऐसी चर्चा का हिस्सा कभी नहीं बना किंतु मैं भी उनमें से एक था इसलिए वे मुझे नजरंदाज नहीं कर सकते थे। मैं अक्सर उनके तर्कों को नहीं काटता था लेकिन जब वे कहते कि उन्होंने संस्था के लिए कितना कुछ किया, उसे नई ऊँचाईयों तक पहुँचाया पर फिर भी मैनेजमेंट उन पर भरोसा नहीं करता। तब मैं उनसे एक

आसान सा सवाल पूछता कि क्या उन्होंने यह सब समाज सेवा के तौर पर किया या इस काम पारिश्रमिक लिया? कभी-कभी मैं उन्हें ये सुझाव भी देता कि यदि वे संस्था से प्रसन्न नहीं हैं तो उसे बदल लें पर आज तक मेरे किसी भी मित्र ने संस्था नहीं बदली।

ऐसा नहीं कि मेरी संस्था में कभी कोई समस्या नहीं आई, चाहें आपका पद व ओहदा कितना ही ऊँचा क्यों न हो, समस्याएँ तो आती ही हैं, आपको यह भी याद रखना चाहिए कि आपको उनके लिए भी भुगतान किया गया है। मेरा तो मानना है कि किसी संस्था में काम करते समय आपको सारे लक्ष्य अपने वरिष्ठों के सामने रख देने चाहिए और फिर भी यदि वे किसी काम को खास तरीके से करना चाहें तो सही-गलत भुला कर, काम को उसी तरीके से करें क्योंकि यह आपके काम का एक हिस्सा है। यदि आप मेरे मत से सहमत नहीं हैं तो यही सुझाव दूँगा कि रक्तचाप व तनाव बढ़ा लेने की बजाए वह जगह छोड़ दें क्योंकि ऐसा होने पर तो वैसे भी आप बेहतर तरीके से काम नहीं कर पाएँगे और वर्षों से बनी छवि धूमिल हो जाएगी।

आपमें अनचाही परिस्थितियों से निबटने का साहस व ताकत है परंतु क्या व किसके लिए? एक बार असंतुष्ट होने पर, आप गलत निर्णय ले सकते हैं या पक्षपाती हो सकते हैं। कर्म ही तो आपका व्यक्तित्व रचते हैं। कार्यक्षेत्र में आपका व्यक्तित्व कार्य करता है। आसपास काम करने वाले, व्यक्तित्व के अनुसार ही आपकी धारणा बनाते हैं ऐसा नहीं कि आप हमेशा अपनी छवि के प्रति ही चिंतित रहें क्योंकि इससे कोई खास मदद नहीं मिलने वाली।

लोगों का आत्म सम्मान व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सफल लोगों के व्यक्तित्व की विशेषताएँ कुछ खास नहीं होती परंतु उनके कर्म उसे गढ़ते हैं। आप कोई विचार मन में ला कर उसके, अनुसार कार्य करते हैं तो वह आपके व्यक्तित्व का एक

हिस्सा बन जाता है। लोगों का आत्मसम्मान व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कुल मिला कर, हममें से अधिकतर लोग अपनी वास्तविक व्यक्तित्व विशेषताएँ नहीं दिखा सकते। तथा आपके सिवा कोई भी दूसरा आपके व्यक्तित्व को नकारात्मक गुण नहीं दे सकता।

सफलता तथा असफलता तुलनात्मक हैं। हो सकता है कि कोई दूसरा व्यक्ति एक सफल व्यक्ति को सफल न माने। आपको इस बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए लेकिन आपको स्वयं को तो संतुष्ट करना ही होगा कि आपने प्राकृतिक नियमों को मापदंड मानते हुए सफलता अर्जित की है। आपको कुछ तयशुदा नियमों के अनुसार चलना होगा। आपको अपने मापदंड स्वयं तय करके, उन तक पहुँचना होगा।

3.4 दूसरों की आलोचना से बचें

पता नहीं, क्यों अधिकतर लोग अक्सर दूसरों को अपने से भी ज्यादा जानने का प्रयास करते हैं। किसी को थोड़ा जानना ही बेहतर है, इससे आपको पता चल जाता है कि वह आपसे थोड़ा कम ही है या आप यह जान कर तनाव में भी आ सकते हैं कि वह आपसे बेहतर है। किसी भी दशा में, जब तक आप उससे कुछ सीखते नहीं, यह सब बेकार है लेकिन हम किसी को जानते समय कभी नहीं देखते कि यह अनिवार्य है भी या नहीं। मेरे लिए तो ये समय की बरबादी से अधिक कुछ नहीं है।

मुझे रेल गाड़ी से सफर करना अच्छा लगता है यदि मौका मिले तो मैं उड़ान भरने की बजाए ट्रेन से जाना पसंद करता हूँ लेकिन समयाभाव में ऐसा हो नहीं पाता। मैंने विभिन्न स्थानों की यात्रा की है और मेरा मानना है कि जन्मस्थान व भाषा अलग होने के बावजूद प्रत्येक भारतीय एक है। पिछले कुछ समय में कई घटनाएँ घटीं व प्रांतवाद के बारे में भी काफी कुछ कहा गया, लेकिन मेरा मानना

है कि स्वभाव से सभी भारतीय एक हैं। हो सकता है कि वे अलग-अलग बोलियाँ हों या उनके खानपान की आदतें अलग-अलग हों, लेकिन हम सभी मौका पाते ही काम छोड़ कर; किसी व्यक्ति या तंत्र की आलोचना करने में समय नहीं लगाते, चाहे उन्हें व्यक्ति या हालात की कोई समझ हो या नहीं!

अधिकतर भारतीयों के लिए नौकरी, शादी, एक-दो बच्चे, घर, कोई चौपाया वाहन ही काफी है, यहीं उनके जीवन का अंत हो जाता है। अपने परिवार में संतुष्ट होने के बाद उन्हें दुनिया में किसी की आवश्यकता नहीं रहती। इस तरह हम कहीं नहीं जा पाते और फिर भी स्वयं को श्रेष्ठ मानने का दावा करते हैं। उनके पास तीन घंटे की फिल्म देखने या टी. वी. के सामने बैठने का समय तो है पर खेतों में जाने का समय नहीं है।

तभी आज भी हमारे देश में सरकारी नौकरी को सबसे अच्छा माना जाता है क्योंकि यह कोई अतिरिक्त मांग नहीं रखती।

हमारे देश में अनुभव को वर्षों से गुणा किया जाता है। यह कभी भी नौकरी के वर्षों के रूप में नहीं जुड़ता। पहली दशा में आप केवल नौकरी के दौरान प्राप्त अनुभव का आकलन कर रहे हैं जबकि दूसरी दशा में आप हर वर्ष कुछ न कुछ नया पाते हैं। दूसरी दशा में थोड़ी कठिनाई इसलिए है क्योंकि आपको लगातार अन्वेषण करना पड़ता है और नौकरी के दौरान हमारे पास समय की ही कमी होती है।

हमने अपनी राजनीति को 'गंदे खेल' का नाम दे दिया है और वो भी खेले बिना.....

हमें अपने राजनेताओं को गालियाँ देने का पूरा हक है, हमने राजनीति को 'गंदे खेल' का नाम दे दिया है। दरअसल हमने खेले बिना ही अपनी हार कबूल कर ली है क्योंकि हम स्वयं को इस खेल के योग्य नहीं मानते। ऐसा नहीं कि हम जन्मजात पलायनवादी हैं लेकिन वर्षों से बनी सोच के कारण हम ऐसा बर्ताव करने लगे

हैं। हम मानते हैं कि राजनीति गंदे लोगों का खेल है लेकिन तब हम भूल जाते हैं कि इस तरह तो हम अप्रत्यक्ष रूप से अपने स्वतंत्रता सेनानियों को कोस रहे हैं, जिनके बिना हम स्वतंत्र राष्ट्र होने का दावा नहीं कर पाते।

ऐसा नहीं कि हम जन्म से ऐसे ही थे, लेकिन हमारी सोच बिगड़ गई है। हम हर बात को संदेह की दृष्टि से देखते हैं, क्योंकि हमें इसी तरह प्रशिक्षित किया गया है। सुबह से ले कर रात तक हम कवेल नकारात्मक समाचार व निर्देश सुनते हैं। हम ट्रेन से यात्रा करते हैं तो हर कंपार्टमेंट में क्या करें व क्या न करें के निर्देश मिलते हैं। इससे हमारा भरोसा टूटता है लेकिन इसकी परवाह किसे है। अपने बच्चों को यह समझाना ठीक है कि वे सब पर भरोसा न करें लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं कि इस धरती पर सभी प्राणी बुरे हैं। ऐसा तो सबके लिए खतरनाक होगा और समय हमें कभी क्षमा नहीं करेगा।

इसी अविश्वास ने तथाकथित विकसित देशों को सामाजिक, आर्थिक व मानसिक रूप से बिगाड़ दिया है और हम भी वही कर रहे हैं। ऐसा नहीं कि यही वक्त बुरा है और हमारे पूर्वज बड़े सुखी और प्रसन्न थे, इतिहास के पन्ने पलटें तो जान जाएँगे कि हममें से ज्यादा बेहतर कौन रहा? अपने-आप से ईमानदारी से पूछें कि क्या आप उनके जैसा जीवन जी पाएँगे, मुझे पूरा यकीन है कि आपका जवाब 'न' में होगा। मैं किसी समय की वकालत नहीं कर रहा बस आपको एक परिपक्व सोच देना चाहता हूँ कि आपको अपने बच्चों का जीवन नर्क नहीं बनाना चाहिए।

3.5 हर व्यक्ति और वस्तु बुरे नहीं हैं

एक सफल व्यक्ति आँखें मूंद कर विश्वास या अविश्वास नहीं करता पर वह नई घटना व परिस्थिति का कारण तलाशता है। आप एक सफल व्यक्ति हैं और नई ऊँचाईयाँ छूने को तत्पर हैं तो आप

भी मेरी बात से सहमत होंगे। आप यह भी सोच रहे होंगे कि मुझे कैसे पता चला? यह बहुत आसान है। आपने शेल्फ पर पड़ी किताबों में से इस किताब को पढ़ने के लिए चुना, इसी से पता चलता है कि आप एक सफल व्यक्ति हैं और अभी आपकी मंजिल का अंत नहीं आया। आप जैसे व्यक्ति को उत्तरदायी बनना होगा अन्यथा सफलता गलत हाथों में चली जाएगी, जो कि न्याय नहीं होगा।

विश्वास तथा अविश्वास दोनों सापेक्ष हैं। ये आपका व्यक्तित्व गढ़ते हैं, इसी के अनुसार सोच रखने पर सफलता या असफलता के परिणाम सामने आते हैं।

विश्वास तथा अविश्वास दोनों सापेक्ष हैं। ये आपका व्यक्तित्व गढ़ते हैं, इसी के अनुसार सोच रखने पर सफलता या असफलता के परिणाम सामने आते हैं। आपने कहावत सुनी होगी 'जो बोओगे, सो काटोगे' 'बोए पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से पाए।' यदि आप सोचते हैं कि सब बुरे हैं तो अपने आस-पास सभी बुरे लोग ही पाएँगे, इसके लिए आपको किसी दूसरे व्यक्ति या तंत्र को दोषी ठहराने की बजाए स्वयं को ही दोषी ठहराना चाहिए। अपने पूरे कार्यकाल के दौरान मैं बहुत कम ऐसे लोगों से मिला, जिन पर मैं अविश्वास कर सकता था लेकिन आज मैं यहाँ हूँ क्योंकि मैंने अपनी संगति में आने वाले लोगों पर भरोसा किया और उन्होंने मुझ पर अपना भरोसा बनाए रखा।

विश्वास या अविश्वास केवल एक मानसिक अवस्था नहीं है, जब किसी के बारे में कोई राय बन जाती है, तो उसे तोड़ना बड़ा मुश्किल हो जाता है। हर किसी को बुरा मानने से तो कहीं बेहतर है कि हम किन्हीं एक या दो के हाथों धोखा खा लें। इस तरह कम से कम नकारात्मक सोच तो हावी नहीं होगी। प्रत्येक से धोखा खाने की बजाए कुछ लोगों के हाथों छले जाना कहीं बेहतर होगा।

हमारे देश के लोगों की मानसिकता ही नकारात्मक है। यह उनका नहीं, बल्कि उनके पालन-पोषण का दोष है, जिसने उनके

व्यक्तित्व को इस तरह रचा है। इसी वजह से हम किसी भी घटना या व्यक्ति के सकारात्मक पहलू को देख ही नहीं पाते, जबकि कोई व्यक्ति या घटना ऐसी नहीं होती, जिसमें कोई न कोई सकारात्मकता न छिपी हो। हमें उस व्यक्ति में छिपी सकारात्मकता को खोज कर उससे लाभान्वित होना होगा, उसकी आलोचना से हमारे हाथ कुछ नहीं आएगा।

कोई भी युद्ध जीतना हो तो पहले अपने रवैए को सकारात्मक बनाना होगा, यदि कुछ गलत हो भी जाए तो इसे स्वाभाविक मान कर जल्द से जल्द भूल जाना होगा, ताकि पूरी उमंग व जोश से एक नई शुरूआत हो सके। हमें उन कूड़ा बीनने वालों का वह गुण अपनाना चाहिए जिससे वे कूड़े में से भी अपने काम की चीजें छोट कर आजीविका चलाते हैं। जीवन की इतनी लंबी यात्रा करनी है तो सकारात्मकता के बिना कैसे बात बनेगी। कोई भी 100 प्रतिशत सही या गलत नहीं हो सकता तथा हमें बेहतर से भी अच्छे नतीजे पाने के लिए केवल सही पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

3.6 हमेशा सकारात्मक सोचें

हमेशा सकारात्मक सोचें तथा महसूस करें कि इस धरती पर हर व्यक्ति व वस्तु अच्छी है। यदि कुछ मनचाहा न भी घटे तो इसे एक दुर्घटना के रूप में लें जो कहीं भी, किसी के भी साथ हो सकती है। दुर्घटना तो दुर्घटना है, उसे किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं है एक सकारात्मक चिंतक जमीन पर खड़ा है। नकारात्मक चिंतक आरंभ से जमीन पर है, आप ऐसे व्यक्ति के लिए कुछ बेहतर सोच ही नहीं सकते। वे वही है, जो है; कोई भी प्रेरक, चिंतक या पुस्तक उन्हें बदल नहीं पाएगी। उन्हें यूँ ही छोड़ देना चाहिए वरना वे दूसरों को बिगाड़ कर अपने दल में मिला सकते हैं।

कोई भी नकारात्मक या सकारात्मक सोच के साथ पैदा नहीं होता यदि आपके परिवार में सभी अविश्वासी हैं तो आप भी उसी माहौल में पलेंगे और आपके व्यक्तित्व में भी यही अविश्वास पैठ जाएगा। इससे आपका आत्म-सम्मान घटेगा व आपकी गिनती उन लोगों में होने लगेगी जो अपने संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति से समर्थन चाहते हैं।

यदि ऐसा हो भी तो निराश न हों, सुधार की संभावना भी है मैं आपको नेपोलियन का अनुसरण करने को नहीं कहता, जिसने कहा था:- “इस संसार में कुछ भी असंभव नहीं है। औसत प्रतिभा, महत्वाकांक्षा व शिक्षा प्राप्त व्यक्ति यदि स्पष्ट केंद्रित लक्ष्य पा ले तो वह समाज के कई जीनियस लोगों को मात दे सकता है। सकारात्मक रवैए के साथ भी यही सच है। सफल होने के लिए, कोई बहुत अधिक बुद्धिमता या निपुणता नहीं चाहिए। आपको अपने आसपास ही अनेक ऐसे सफल व्यक्तियों के उदाहरण मिल जाएँगे। यह दृढ़ संकल्प, लक्ष्य के प्रति लगन व सकारात्मक सोच का कमाल होता है।

कोई भी औसत प्रतिभा, महत्वाकांक्षा व शिक्षा प्राप्त व्यक्ति यदि स्पष्ट केंद्रित लक्ष्य पा ले तो वह समाज के अनेक बुद्धिमानों को मात दे सकता है।

आप स्वयं को एक सफल व्यक्ति कहना शुरू कर दें और फिर अपने व्यक्तित्व में अंतर देखें। सकारात्मक बातें सोचने से आप सकारात्मक ऊर्जा पाते हैं जो आपको सकारात्मक कर्मों के लिए ही प्रेरित करती है। ऐसा नहीं कि आप केवल अच्छे मूड में ही ऐसा सोच सकते हैं, जब सब कुछ आपके अनुसार न हो रहा हो, तब भी आप सकारात्मक सोच सकते हैं।

मेरे जीवन में भी समय का एक ऐसा दौर आया जब हमेशा मेरी बात मानने वाले मेरे भाई मेरी निंदा पर उतर आए, बिटिया ने मेरी पसंद के लड़के से विवाह करने से इंकार कर दिया, बेटा

इंजीनियरिंग के आखिरी सत्र में एक पेपर पास नहीं कर सका, मेरी परियोजनाएँ दूसरों के हाथों में चली गईं, चेयरमैन मुझसे बेहतर नतीजों की उम्मीद कर रहे थे और मैं उनकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतर पा रहा था, इससे अधिक नकारात्मकता और क्या हो सकती है? कुछ समय के लिए तो मुझे लगा कि मैं रॉबिन शर्मा का संत बन जाऊँ, जो अपनी फरारी बेच कर जंगल में चले गए। यह सोच पूरे एक सप्ताह तक रही व मैं स्वयं को नियंत्रित करने की स्थिति में नहीं था।

मेरी पत्नी पूरे एक सप्ताह से मुझे देख रही थी। उसने पूछा:- यदि मैं आज मर जाऊँ तो क्या होगा?” यह मेरी एक पुस्तक का शीर्षक भी है, जो आत्मविश्वास की अच्छी पुस्तकों में गिनी जाती है। कुछ देर के लिए मुझे लगा कि जो स्त्री आज तक मेरे निर्देशों पर चलती आई है, हो सकता है कि वह मुझे आरामदायक अनुभव न दे पा रही हो।

मैं अक्सर उससे उन किताबों की चर्चा करता हूँ, जिन्हें मैं अक्सर पढ़ता रहता हूँ। एक दिन रॉबिन शर्मा की किताब पर चर्चा के दौरान उसने अचानक पूछा:- क्या आपने कभी सोचा कि रॉबिन शर्मा ने किसी भी किताब में अपनी पत्नी का जिक्र क्यों नहीं किया?” मुझे उस वक्त झुंझलाहट हुई कि इतने गंभीर मसले के बीच ऐसा मुद्दा उठाने को क्या जरूरत है। यह सच था कि रॉबिन ने कहीं भी अपनी पत्नी का जिक्र नहीं किया। अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिहाज़ से मैंने कहा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन यह प्रश्न मेरे अवचेतन में दबा रह गया।

उस रात उसने मुझसे कहा कि जब इतना बड़ा लेखक, अपनी पुस्तक में, पत्नी का जिक्र करना भूल सकता है तो आप सब कुछ भुला कर ऐसा जीवन क्यों नहीं जी सकते, जो केवल हम दोनों के लिए हो। उसने समझाया कि मेरे भाई स्वतंत्र जीवनयापन कर रहे हैं और बच्चे भी पढ़ाई पूरी कर चुके हैं इसलिए हमें उनकी

जिंदगी, उनके हिसाब से जीने के लिए छोड़ देना चाहिए। फिर उसने कहा कि जब हमारा विवाह हुआ था तो मैं एक साधारण अध्यापक था और आज जो भी हूँ, जहाँ भी हूँ, वह किसी के लिए भी गर्व का विषय हो सकता है।

ऐसा नहीं कि यह किस्मत है, दरअसल जिंदगी में सब कुछ गणित की तरह नहीं घटता, जरूरी नहीं कि यहाँ दो और दो का जोड़ हमेशा चार ही हो। जीवन कभी-कभी अनपेक्षित बोनस देता है और कभी-कभी मूल भी ले लेता है। यही अनपेक्षित घटनाएँ जीवन को जीने योग्य बनाती हैं। अनपेक्षित परिणामों के बिना जीवन जीने योग्य नहीं रह जाएगा क्योंकि सब कुछ पूर्वनिर्धारित होने से जीवन की रचनात्मकता और कौतूहल कहीं खो जाएगा।

3.7 सफलता कम से कम संसाधन चाहती है

आपने ध्यान दिया होगा कि समय बदलते देर नहीं लगती। कोई इस बात की गारंटी तो नहीं दे सकता कि आप जीवन में हमेशा सफल होंगे, पर आपके भीतर विजेता बनने की चाह अवश्य होनी चाहिए। आप केवल अपनी ही सोच तथा विचारों से प्रेरित हो सकते हैं।

आपके विचार ही आपको विचारक बनाते हैं और आप सफल जिंदगी जीने के सारे गुर पा लेते हैं। जब मेरी जिंदगी में सब कुछ थम-सा गया था या मेरे हिसाब से नहीं हो रहा था तब मैं असहाय हो गया था (जबकि इसी विषय पर मेरी किताबें बिक रही थीं) हम लोग अक्सर ऐसा सोचते हैं कि जो किसी दूसरे के साथ घट रहा है, वह मेरे साथ नहीं होगा जबकि ऐसी घटनाओं के किसी न किसी रूप में सबके साथ घटने की संभावना होती है।

इस बात की गारंटी तो नहीं दे सकते कि आप जीवन में हमेशा सफल होंगे लेकिन आपके भीतर विजेता बनने की चाह होनी चाहिए।

मैं दिन-रात अपने भीतर से लड़ता रहा ताकि किसी समझौते तक पहुँच सकूँ, उस मानसिकता को पा सकूँ, जो पहले थी लेकिन कोई ठोस नतीजा सामने नहीं आ रहा था। ऐसा नहीं था कि मेरी पत्नी के इस रचनात्मक विचार ने मेरी जिंदगी बदल दी थी। ऐसा दावा रॉबिन शर्मा ने अपनी किताब 'I bought the monk Ferrar' में किया था लेकिन उस विचार ने मुझे काफी हद तक सुकून दिया।

मुझे बच्चों से ज्यादा परेशानी इस बात की थी कि वे बचपन से मेरी सुनते आए थे और अब वे बड़े हो गए हैं तथा उन्हें अपनी भलाई के बारे में सोचने का संवैधानिक अधिकार है। इसकी बजाएँ में अब भी उनसे बच्चों की तरह पेश आ रहा था और उनकी पसंद-नापसंद की परवाह किए बिना अपनी मर्जी थोप रहा था। अपने करियर के दौरान में छात्रों के साथ स्वयं रिवर्सल थ्योरी (reversal Theory) का साक्षी था, जिसमें जीवन में सब कुछ बेहतर पाने वाला मेधावी छात्र कुछ नहीं बनता और कक्षा का सबसे नालायक छात्र पाँच-छः वर्ष के अंतराल के बाद एक सफल नवयुवक के रूप में सामने आता है।

यहाँ तक कि अपने परामर्श सत्रों में भी यही उदाहरण दोहराता था लेकिन जब अपनी बारी आती है तो कुछ भी उम्मीद के हिसाब से नहीं हो पाता।

आपको लगता है कि आप सब जानते हैं और सारी स्थितियाँ संभाल सकते हैं किंतु हमेशा सब कुछ आपके सोचे-समझे तरीके से नहीं होता। हम हमेशा यह एहसास नहीं कर पाते कि संतुष्टि एक सापेक्ष शब्द है, हो सकता है कि मैं आप या और कोई, बिना चाहे इसे न पा सके। वो कहावत याद है न दूर के ढोल सुहावने होते हैं। यह केवल मतिभ्रम है, पास जाने पर कुछ भी हाथ नहीं आता। यह सिर्फ मेरे या आपके नहीं बल्कि सबके साथ होता है फर्क इतना है कि कोई इस बात को जल्दी समझ लेता है और किसी को समझने में काफी समय लग जाता है।

होली के अवसर पर एक विशाल डिपार्टमेंटल स्टोर में घोषणा की गई कि यहाँ सेल से दूल्हा खरीदने वाले को 80 प्रतिशत छूट के अलावा शहर के पौश इलाके में तीन बैड रूम फ्लैट का बोनस भी मिलेगा। उस स्टोर में छः मंजिलें थीं और शर्त केवल इतनी थी एक मंजिल से निकलने के बाद दोबारा वहाँ वापिस नहीं आने दिया जाएगा और खरीदारी का सिर्फ एक ही अवसर मिलेगा। सबसे ऊपरी मंजिल से वापसी का रास्ता था।

एक महिला अपने लिए उपयुक्त दूल्हा चुनने गई। पहली मंजिल पर लिखा था:- ये सब दूल्हे नौकरी करते हैं। बोर्ड पढ़ कर उसने सोचा कि वे दूल्हे ब्वायफ्रेंड से तो बेहतर हैं परंतु हो सकता है कि दूसरी मंजिल पर इससे भी बेहतर कुछ हो। दूसरी मंजिल पर लिखा था:- ये दूल्हे नौकरी करते हैं तथा इन्हें बच्चों से भी बेहद प्यार है। महिला को ये बात पसन्द आई पर वो बाकी मंजिलें भी देखना चाहती थी। तीसरी मंजिल पर लिखा था, “ये दूल्हें नौकरी में हैं, बच्चों को चाहते हैं, दिखने में सुंदर हैं तथा घरेलू कामकाज में भी हाथ बँटाते हैं, महिला को ये बात भी पसंद आई पर वो पांचवीं मंजिल भी देखना चाहती थी। वहाँ लिखा था:- ये दूल्हें नौकरी में हैं, अपने बच्चों को चाहते हैं, दिखने में सुंदर हैं, घरेलू कामकाज में हाथ बँटाते हैं और अपने जीवनसाथी की हर बात भी ध्यान से सुनते हैं, इन खुबियों ने तो महिला का दिल जीत लिया और उसने छठी मंजिल पर भी जाने का फैसला कर लिया।

वह छठी मंजिल पर गई तो वहाँ लिखा था:- आप ग्राहक संख्या 123456789 हैं। इस मंजिल पर कोई दूल्हे नहीं हैं व इससे सिद्ध होता है कि आपको संतुष्ट करना बहुत मुश्किल है। इस शॉपिंग मॉल में आने के लिए शुक्रिया। हम फिर कभी आपसे मिलना चाहेंगे। ऐसा नहीं कि ये सिर्फ महिलाओं के साथ ही होता है, यहाँ लिंग भेद निरर्थक है। ये प्रसंग तो हर किसी पर खरा उतरता है हमें सचमुच नहीं जानते कि हम क्या चाहिए लेकिन कुछ

न कुछ बेहतर की तलाश में लगे रहते हैं। सबसे बेहतर पाने की कोशिश करने में कोई बुराई नहीं लेकिन हमें इस बेहतर के बारे में पता होना चाहिए, व बेहतर पाने के चक्कर में लगातार विकल्पों को नकारना नहीं चाहिए। सफलता एक निरंतर चलने वाली यात्रा है, यह कभी कोई मंजिल नहीं हो सकती।

हमें याद रखना चाहिए कि पहला कदम बढ़ाए बिना सीढ़ी के ऊपर तक नहीं पहुँचा जा सकता। हो सकता है कि यह इतना स्तरीय न हो लेकिन आगे जाने के लिए अनिवार्य है। वांछित गुणवत्ता पाने तक हमें अपने प्रत्येक कदम को सुधारते रहना चाहिए। यहाँ तक कि इसके बाद भी, हम यह नहीं कह सकते कि आगे सुधार की संभावना नहीं है। टेलीकम्यूनिकेशन के क्षेत्र में होने वाले निरंतर सुधार को ही लें। वैल संप्रेषण से ‘आई, फोन’ तक की तीन वर्षीय यात्रा और फिर ‘केज़न’ ये अब तक बेहतर हैं लेकिन आने वाले कल में इनसे भी कुछ और बेहतर होगा। यदि ऐसा नहीं होता तो यह सभ्यता का अंत होगा। जब तक सभ्यता रहेगी, इस क्षेत्र में सफलता की यात्रा जारी रहेगी।

यह केवल किसी एक क्षेत्र का ही उदाहरण नहीं है, प्रत्येक क्षेत्र में आप ऐसा ही पाएँगे। सफलता की यात्रा में एक छोटा-सा कदम बढ़ाएँ और लक्ष्य तक पहुँचने की संभावना बढ़ जाएगी यही छोटा कदम, आपको अगला बड़ा कदम उठाने के लिए प्रेरित करेगा। यह भी याद रखें कि सफल व्यक्ति के लिए सफलता की कोई एक मंजिल नहीं होती क्योंकि कुछ अधिक पाने की संभावना हमेशा बरकरार रहती है।

3.8 सफलता एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है

सफलता एक ऐसा मंत्र है, जिसे आपको लगातार अपनाना होगा। ये काम आपके दिल से होना चाहिए, ये आपको दूसरों से कुछ बेहतर कर दिखाने की याद दिलाता रहेगा। यह सफलता है,

और कुछ नहीं। जब आप दूसरों से बेहतर करने के आदी हो जाएँ तो स्वयं को इस सफलता पर बधाई दें। यहाँ याद रखें कि आपकी थमने की बजाए, पूरे दम-खम और तेजी के साथ आगे बढ़ना है। याद रखें कि अपनी सामर्थ्य के अनुसार निरंतर गतिशीलता ही परिणाम देगी, बस आपको अपने ऊपर भरोसा रखना होगा।

दूसरों से लड़ने या सीख देने में प्रवृत्त न हों अन्यथा शत्रु को आपकी सामर्थ्य का पता चल जाएगा।

इस कार्य के दौरान दूसरों से लड़ने या सीख देने में प्रवृत्त न हों अन्यथा शत्रु को आपकी सामर्थ्य का पता चल जाएगा। आपका सामर्थ्य ही, आपकी क्षमता है। यदि हर अलां-फलां व्यक्ति के सामने क्षमता प्रदर्शन करते रहे तो कुछ हाथ नहीं आएगा। हाँ, आप उपहास के केंद्र अवश्य बन जाएँगे। आपको अपनी बेहतरी व प्रयोग के लिए क्षमता दी गई, शेखियाँ बधारने के लिए नहीं! इससे आपको कुछ नहीं मिलेगा और आप जैसे व्यक्ति को यह सब करना शोभा नहीं देता।

इस सांसार में कुछ भी ऐसा नहीं, जिसकी उपयोगिता न हो। ईश्वर के पास निरर्थक वस्तुएँ बनाने का समय नहीं है।

बात सिर्फ इतनी है कि कई बार हम अपनी रूढ़िवादी सोच की वजह से किसी व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु की उचित उत्पादकता का अनुमान नहीं लगा पाते। कुदरत का यह कानून समझने वाला व्यक्ति ताज पहनता है। सफलता एक गणितीय समस्या की तरह है। कक्षा में सभी छात्रों को एक ही अध्यापक, एक ही पुस्तक से पढ़ाता है किंतु इसके बावजूद उन सबमें सवाल हल करने की भिन्न-भिन्न क्षमता होती है। यदि आप ध्यान दें, तो एक बात और भी आश्चर्यचकित कर देने वाली है। आपको जान कर हैरानी होगी कि पर्याप्त समय मिलने पर अधिकतर छात्र समस्या हल कर लेंगे।

जीवन की समस्याएँ भी इसी वर्ग में आती हैं। पहले समस्याएँ हल करने वाले अधिकतम लाभ पाते हैं। व्यक्ति की निरंतरता व क्षमता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जीवन की किसी कठिन समस्या को हल करते ही आप इस अंतर को महसूस कर पाएँगे। लोग कहेंगे कि कल तक आप उनमें से थे किंतु आज आप अचानक अलग हो गए हैं।

यही जीवन की वास्तविकता है, जिसे प्रत्येक को समझना चाहिए।

जीवन में ऊँचे बुद्धि कौशल वाला व्यक्ति ही दौड़ में आगे होगा, यह आवश्यक नहीं, अपने कार्य को निरंतर करने वाला व्यक्ति भी विजेता होता है पराजित उससे इसलिए ईर्ष्या नहीं रखते कि वह जीत गया बल्कि उन्हें इस बात की ईर्ष्या होती है कि वे गति का मूलभूत सिद्धांत भूल गए थे:- एक समान गति से चलने वाली वस्तु अधिकतम संवेग पाती है।” आपको विश्लेषण करने पर आश्चर्य होगा कि अनेक वैज्ञानिक सिद्धांत व नियम जीवन में भी खरे उतरते हैं।

एक व्यक्ति कार में कहीं जा रहा था कि तेज वर्षा होने लगी। अचानक कार का टायर पंक्चर हो गया और उसे पंक्चर बदलने के लिए रुकना पड़ा। वह कार का पहिया बदलने लगा उसने ज्यों ही चारों पेंच खोले, वे पेंच हाथ से छूट कर पास वाली नाली में जा गिरे। नाली में बारिश की वजह से पानी भरा पड़ा था। यह सारी घटना एक पागलखाने के बाहर घट रही थी। उस व्यक्ति की परेशानी देख, एक मरीज ने पास आ कर कहा कि वह बाकी तीनों टायरों से एक-एक पेंच निकाल कर इसमें लगा ले ताकि घर पहुँच सके।

वह व्यक्ति इतनी समझदारी की बात सुन कर हैरान रह गया और बोला:- यार! तुम्हें यहाँ क्यों रखा है? तुम तो बड़े बुद्धिमान हो।’ मरीज ने उत्तर दिया:- मेरा सुझाव तो सामान्य बुद्धि की बात थी, और कुछ नहीं था।”

3.9 सफलता अचानक हाथ नहीं आती

यदि आपके हाथ अचानक कोई लाटरी लगे या आप रातोरात चाय के ढाबे वाले से कंपनी के मालिक बन जाएं लेकिन इस तरह अचानक हाथ आई सफलता टिकाऊ नहीं होती। आपने ध्यान दिया होगा कि ऐसे अधिकतर मामलों का बड़ा दुखदायी अंत होता है क्योंकि अचानक मिलने वाली सफलता व्यक्ति को अहंकारी बना देती है, उसका आरंभ ही उसके लिए अंत बन जाता है।

धीरे-धीरे मिलने वाली सफलता आपको धीरे-धीरे शारीरिक व मानसिक रूप से तैयार करते हुए परिपक्व बनाती है ताकि आप सफलता पाने के बाद एक सामान्य व संतुलित जीवन जी सकें। एक नब्बे वर्षीय वृद्ध की 50 करोड़ की लाटरी लगी। वह दिल का मरीज़ था। हर किसी को यही चिंता थी कि इतनी बड़ी खुशखबरी सुन कर कहीं उसे दिल का दौरा न पड़ जाए। उन्होंने उसके पारिवारिक डॉक्टर से सलाह ली। उन्होंने कहा कि डॉक्टर ही वृद्ध को लाटरी मिलने की खबर दे ताकि कुछ गड़बड़ होने पर वह संभाल सके।

अगली सुबह डॉक्टर और वृद्ध चाय पीने बैठे तो डॉक्टर ने बातों ही बातों में कहा:- सर! अगर आपकी 50 करोड़ की लाटरी निकल जाए तो आप क्या करेंगे? वह एकदम से यह खबर नहीं देना चाहता था। वृद्ध ने हँस कर कहा:- करूँगा क्या, उसमें से आधे आपको दे दूँगा। आपने दो बार मेरी जान बचाई है, और मेरी सेवा की है।” अफसोस! डॉक्टर की वहीं जान निकल गई।

सफलता आपको सब कुछ दे सकती है लेकिन आपको उसे स्वीकारने व हजम करने योग्य बनना होगा, जो कि अधिकतर मामलों में नहीं होता। अचानक मिलने वाली सफलता से हाथ आई खुशी पर नियंत्रण पाना कठिन होता है। सफलता को स्वीकार करने के लिए तत्पर रहना भी बहुत महत्व रखता है तथा शारीरिक हाव-भाव से इसका पता नहीं चलना चाहिए।

जीवन में आपको कहीं पहुँचना है तो कहीं न कहीं से तो आरंभ करना ही होगा। यह कहीं ही तो आपका लक्ष्य है, जो एक समय का भोजन पाने जितना छोटा या हजारों व्यक्तियों को प्रतिदिन भोजन कराने जितना बड़ा भी हो सकता है। परंतु दूसरे लक्ष्य तक जाने से पूर्व, पहले लक्ष्य को पाना होगा। वही आपको दूसरा लक्ष्य पाने के लिए विवश करेगा। यदि आप किसी बात पर दृढ़ नहीं रह सकते तो सब कुछ हाथ से निकल जाएगा। आपका पहला पक्ष ही भावी पक्ष को निश्चित करेगा। हो सकता है कि उस समय आपको भविष्य दिखाई न दे किंतु वह तो हमेशा उसी में छिपा होता है।

यदि आप किसी बात पर दृढ़ नहीं रह सकते, तो सब कुछ हाथ से निकल जाएगा।

मनुष्य स्वभाव से ही चुनाव प्रिय है तथा इसी स्वभाव के चलते, वह कई अवसर गँवा देता है। चयन करने में कोई बुराई नहीं किंतु काम करते समय यदि पहले पड़ाव पर ही ध्यान न दिया तो पछताने के सिवा कोई रास्ता नहीं बचेगा। ऐसा नहीं कि हम इसे जानते नहीं, पर बहुत कम लोग इसे गंभीरता से लेते हैं। आपने अनेक ऐसे व्यक्ति देखे होंगे जो पूरी दुनिया को दोषी ठहराते हुए कहते हैं कि अगर उन्हें मौका मिलता तो, वे भी कुछ कर दिखाते। मानो मौका या अवसर मिटाई का कोई टुकड़ा है, जो उनके हाथ पर रख दिया जाता।

इस दुनिया में कोई भी आपको रास्ता दिखाने के लिए खाली नहीं बैठा है। इस दुनिया में हमेशा आपका सामना दो तरह के मूर्खों से होगा। पहले वे जो बिना माँगे सलाह देते हैं तथा दूसरे वे, जो इन सलाहों को नहीं लेते। यदि कुछ मुफ्त हो भी, तो वह उत्पादकता के विरुद्ध हो सकता है। या तो आपको स्वयं कुछ करना होगा या दूसरों की सुननी होगी व उनकी सलाह पर चलना होगा। पहले मामले में आप नेता व दूसरे में अनुयायी होंगे। यह आप पर निर्भर करता है कि आप क्या बनना चाहते हैं और कहाँ पहुँचना चाहते हैं।

इस धरती पर सदा से लोग थे, हैं और रहेंगे किंतु उनमें से बहुत कम को एक से दूसरी पीढ़ी में, तथा उनमें से कुछ को एक से दूसरी सदी में जाने का अवसर मिलता है। यदि वे आरंभ से ही चाहें, तभी ऐसा संभव हो पाता है। कभी-कभी समय उन्हें तेजी से चलने को विवश करता है और कभी-कभी वे स्वेच्छा से समय को नियंत्रित कर लेते हैं। वे हमेशा ऐसे साधारण व्यक्ति रहे, जिन्होंने मनचाहे तरीके से दूसरों को बदला या कभी-कभी अपनी कीमत पर भी बदलाव लाना चाहा। यदि आप भी ऐसा बनने को तैयार हैं तो अपनी दुर्बलता के बावजूद इच्छा पूर्व कर सकते हैं।

3.10 प्रत्येक समस्या का समाधान होता है

हमें बचपन से यह सुनने को विवश किया जाता है कि जीवन फूलों की सेज नहीं है तथा शांत व प्रसन्न जीवन जीने के लिए कुछ और भी चाहिए। यह कहावत हमेशा मेरी चिंतन प्रक्रिया में हस्तक्षेप करती आई है। मेरा मानना है कि कोई किसी दूसरे की कीमत या मेहनत पर अपने लिए शाही स्वागत क्यों चाहे? बिना मेहनत के हाथ आई वस्तु से, प्राप्ति की संतुष्टि नहीं मिलती और कुछ समय बाद इससे प्रसन्नता भी नहीं मिलती। जबकि अथक प्रयासों से प्राप्त की गई छोटी सी उपलब्धि भी बड़ी संतुष्टि का कारण होती है।

प्रत्येक व्यक्ति की उपलब्धि का उद्देश्य नाटकीय रूप से अलग होता है तथा यह उस व्यक्ति के अपने ऊपर भरोसे व चरित्र में गुंथा होता है। यदि अपने ऊपर भरोसा होगा तो किसी वस्तु को पाने की इच्छा भी बलवती होगी समस्याएँ तो जीवन का एक अंग हैं, हमें इनसे नहीं घबराना चाहिए। जीवन में जितनी समस्याएँ हल करेंगे, निर्णय निर्धारण क्षमता में उतनी ही वृद्धि होगी। दरअसल समस्याएँ निर्णय लेने की क्षमता को संवारती हैं व स्वयं को उस व्यक्ति से बेहतर पाते हैं, जिसके पास हल करने के लिए कोई समस्या ही नहीं है।

हमें समझना चाहिए कि बिना चाबी का कोई ताला नहीं होता और बिना हल के कोई समस्या नहीं होती। यदि दूसरों से कुछ बेहतर पाना चाहते हैं तो निडर होकर समस्याओं का सामना करें और अपनी समस्याओं के लिए दूसरों को दोषी न ठहराएँ। आपको उस व्यक्ति का धन्यवाद देना नहीं भूलना चाहिए जो आपको जीवन की ये पहेलियाँ सुलझाने के योग्य बना रहा है तथा एक नई पहचान बनाने का मौका दे रहा है।

बिना चाबी के कोई ताला नहीं होता और बिना हल के कोई समस्या नहीं होती।

मनुष्य स्वभाव से ही यह मानता है कि समस्याएँ उसके अपनों की ही देन हैं, जो उसे उसकी उपलब्धियों के बावजूद मुश्किलों में देखना चाहते हैं। दरअसल हममें से अधिकतर लोग ऐसी ही नकारात्मक सोच विकसित कर लेते हैं तथा यकीन ही नहीं कर पाते कि हमारे साथ भी कुछ अच्छा हो सकता है। ये नकारात्मकता इतनी गहराई तक हमारे भीतर पैठ जाती है कि हम रोज़मर्रा के जीवन में आने वाली समस्याओं की उपयोगिता को भी नकार देते हैं।

यकीन करें या न करें, आपको कोई भी ऐसा सफल व्यक्ति नहीं मिलेगा, जिसकी समस्याएँ किसी और ने सुलझाई हों। यह सच है कि सफल होने के बाद आप छोटे-मोटे कामों के लिए किसी को भी काम पर रख सकते हैं परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि इसके बाद आप आराम फरमाएँगे, आपको जीवन तथा व्यवसाय की बड़ी समस्याओं से निबटना ही होगा। एक सफल व्यक्ति के जीने का यही तरीका है। दरअसल सफलता आपकी समस्या समाधान प्रवृत्ति का प्रत्यक्ष परिणाम है।

जितनी जल्दी, जीवन के इस दृश्य को जान लेंगे, अपनी सफलता के लक्ष्य की ओर बढ़ पाएँगे। जीवन में आने वाली समस्याओं के कारण सफलता का यह मोर्चा सदा आपका नहीं

रहता। यह कुछ-कुछ पहेलियाँ सुलझाने की तरह है। आप अपने मानसिक स्तर की जांच के लिए सरल से कठिन पहेलियों तक जा सकते हैं और यह अनंत तक चलता है। जीवन में समस्याओं के साथ भी यही होता है। यह प्रार्थना न करें कि जीवन में समस्याएं न आएँ, प्रार्थना करें कि वे तत्काल हल हो जाएँ ताकि आपके जीवन को नया रूप मिल सके।

अपना संसार स्वयं रचें

धरती के प्रत्येक जीवित प्राणी के पास अपनी इच्छानुसार सृजन की व कुछ कर दिखाने की क्षमता है, चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ क्यों न हों। इन लोगों में कोई अंतर नहीं, कवेल काम करने के तरीके अलग-अलग हैं। सपने आँखें बंद करके नहीं देखे जाते, सच्चे सपने तो हमारी आँख लगने ही नहीं देते।

**सपने वे नहीं होते, जिन्हें हम नींद में देखते हैं।
असली सपना तो हमें सोने ही नहीं देता।**

एक बार हम कुछ पाने की ठान लें तो हमारे सारे प्रयास उसे पाने में जुट जाते हैं और हम उर्जा से भरपूर हो जाते हैं इसके पीछे प्रेरक बल की सहज प्रवृत्ति छिपी है। जागती आँखों से देखे गए सपने हमारा कल गढ़ते हैं व हमारा अपना संसार रचने में सहायक होते हैं।

किसी व्यक्ति के जीवन की बुद्धिमता उसके पालन-पोषण व वातावरण पर निर्भर करती है। आपको ध्यान देना होगा कि इस दुनिया में आप जो चाहते हैं, वो पाते हैं पर हो सकता है कि आपको वो न मिले, जिसकी आप इच्छा रखते आए हैं। 'मांग' और 'इच्छा' के बीच गहराई का ही तो फर्क है। कोई एक व्यक्ति एक दिन का भोजन छोड़ सकता है, या हो सकता है कि दूसरा इसरो के नए अंतरिक्षयान में बैठ कर अंतरिक्ष में जाने का मौका गँवा बैठे। जीवन में हम जो नहीं पाते, वह हमारी प्राप्तियों के अनुपात में होता है। हम ऐसी चीज़ को नहीं छोड़ सकते, जो हमारे पास पहले से है

या उससे मिलती-जुलती कोई वस्तु है। यदि किसी के पास मारुति 800 है तो वह 'मारुति ज़ेन' को तो नहीं पर 'होंडासिटी-लक्ज़री कार' को जरूर मिस करेगा।

प्रत्येक सफल व्यक्ति ने इस धरती पर, सबके बीच एक नया संसार रचा है। उस व्यक्ति के संसार का आकार व आकृति ही उसकी नियति तय करेंगे। जितना बड़ा सपना, उतना बड़ा सृजन क्योंकि उसे बहुत सी बातों पर ध्यान देना होगा। अपनी संतुष्टि के स्तर पर कुछ कर पाने का फैसला भी एक बड़ी सोच में छिपा है, जो दूसरी सोच को भी साथ खींच लाती है।

सफलता अपने-आप में कोई ऐसी वस्तु नहीं, जिसका कोई उत्सव मना सके, इसके प्रभाव ही किसी व्यक्ति को दुखी या प्रसन्नचित्त बना सकते हैं। इससे उस व्यक्ति में ऊँचा उठने की भावना जागती है। आपने ऐसा कोई व्यक्ति नहीं देखा होगा, जो अपने-आप से भी ऊपर न उठना चाहता हो पर बेहतर की उपलब्धि उसके अपने-आप में भरोसा रखने से ही प्राप्त होती है। उसका अपने ऊपर जितना मजबूत भरोसा होगा, काम उतना ही बेहतर होता जाएगा।

हममें से अधिकतर अपना भार हल्का करने की बात करते हैं, बहुत कम लोग ही प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें भार उठाने की ताकत दे। हम भूल जाते हैं कि ईश्वर में विश्वास रखने से पर्वत नहीं छोटा होगा बल्कि यह भरोसा हमारे चढ़ने में सहायक हो जाएगा। प्रत्येक व्यक्ति की सोच अपने-आप में अलग होती है तथा नतीजा भी उसकी सोच व भरोसे के ही अनुपात में होता है। सकारात्मक चिंतन हमेशा प्रसन्नता देता है तथा पुरस्कृत करता है जबकि नकारात्मक चिंतन में इसके विपरीत होता है।

**भगवान में भरोसा रखने से पर्वत छोटा नहीं हो जाता
बल्कि यह भरोसा चढ़ने में सहायक होता है।**

यह दुनिया जो आज है, आज से पहले भी थी और सभी सफल व्यक्तित्व इसी की देन है। चाहे आप विजेता हों या पराजित; संसार सबके लिए सदा एक सा रहेगा। इस संसार में कुछ सकारात्मक पाने वाले व्यक्ति को भी पराजित की तरह ही मुश्किलों व हिम्मतों का सामना करना पड़ता है। पूरी दुनिया से अपनी तरह भला बर्ताव पाने को उम्मीद कुछ ऐसी ही है मानो किसी चीते से यह उम्मीद करना कि वह शाकाहारी व्यक्ति को नहीं खाएगा।

इस दुनिया में आपकी उपलब्धि; अपने-आप पर भरोसा व अपनी सोच का नतीजा है किसी दूसरे से इसका कोई संबंध नहीं है। प्रतियोगी आपसे कहीं शक्तिशाली व बुद्धिमान हो सकता है पर हो सकता है कि उसमें आप जैसी तत्परता न हो। एक अच्छा तैराक वह नहीं होता जो सारी चालें जानता हो, बल्कि ऐसा व्यक्ति होता है जो झट से क्रिया की प्रतिक्रिया देना जानता हो।

4.1 अपने ऊपर भरोसा बनाए रखें

मैं राजस्थान के सुदूर कोने में, एक बड़े भारतीय औद्योगिक संस्थान की शैक्षिक परियोजना पर कार्य कर रहा था, वहीं मेरी भेंट एक ऐसे व्यक्ति से हुई, जिसने कभी रेलयात्रा तक नहीं की थी पर स्थानीय रूप से वह प्रतिष्ठित माना जाता था। उसने अपने प्रयासों से गाँव को एक आदर्श गाँव में बदल दिया था। किंतु राज्य या केंद्र सरकार की ओर से पुरस्कार मिलने पर, अपने स्थान पर किसी दूसरे को भेज देता था। इससे मुझे एक कहानी याद आ गई, जिसे आप भी पढ़ना चाहेंगे-

अमरीका में एक किसान पिछले दस वर्ष से बढ़िया मक्का की फसल के लिए पहला पुरस्कार पा रहा था। टी. वी. चैनल रिपोर्टर ने अपने चैनल को ब्रेकिंग न्यूज़ देने के लिए, बात की तह में जाने का फैसला किया। वह किसान से मिला तो किसान ने कहा कि वह फसल की बुवाई के समय उसके साथ रहे।

एक दिन टी. वी. रिपोर्टर ने देखा कि किसान ने अपने पड़ोसियों को भी बोने के लिए वही मक्का दिया, जिससे वह स्वयं बुवाई कर रहा था। रिपोर्टर की हैरानी देख कर किसान ने सभी दोस्तों को चर्चा के लिए बुला लिया। उसने सबका परिचय दे कर कहा:- ये मेरे पड़ोसी दोस्त हैं और हम सभी मक्का बोते हैं हर किसी में कोई न कोई खूबी है, जैसे मुझे अच्छे बीज की पहचान करना आता है। मेरे पड़ोसी को मौसम का अच्छा अंदाजा है। दूसरा खेत जोतने में होशियार हैं हम सभी मक्का की फसल उगाने में बेजोड़ हैं। हम सभी अपनी सामग्री और अनुभव बाँटते हैं इसलिए पिछले दस सालों से हम ही अच्छी फसल का पुरस्कार पाते आ रहे हैं। हम पुरस्कार बाँटते हैं और मिल कर खुशी मनाते हैं इसलिए जलन का भी सवाल नहीं पैदा होता। रिपोर्टर यह सुन कर हैरान रह गया। यह तो उसके पेशे के बिल्कुल उलट था, जहाँ हर कोई आगे बढ़ने के लिए दूसरे की टाँग खींचने को तैयार रहता है।

आप आसपास दौड़ रहे सभी व्यक्तियों को हरा कर विजेता बन सकते हैं, इससे आपका सम्मान भी होगा लेकिन अपने साथ-साथ दूसरों को भी जिताएँगे तो व्यक्तिगत प्राप्ति से कहीं अधिक संतुष्टि मिलेगी। एक कमजोर आदमी ऐसी सोच नहीं रख पाता क्योंकि उसे अपने ही स्तर की चिंता पड़ी रहती है। पहले तो आपको सबकी सहायता करने की संतुष्टि मिलेगी, दूसरे आप विजेताओं के समाज में जीएँगे। ऐसा तभी हो सकता है, जब आप ईमानदारी से जान लें कि आप क्या हैं।

ऐसा तभी हो सकता है, जब आप जान लें कि यह दुनिया सबकी जरूरतें पूरी करने के लिए तो है, पर लालच की पूर्ति के लिए नहीं है। नीड (जरूरत) और ग्रीड (लालच) के सिद्धांत को जान कर आप स्वयं को बेहतर तरीके से जान पाएँगे क्योंकि यह सब लोगों के लिए अलग-अलग होगा और कभी-कभी समय व स्थान में बदलाव के बावजूद एक ही व्यक्ति के लिए भी अलग होगा।

आपको प्रसिद्ध ग्रंथ रामायण का वह प्रसंग तो याद ही होगा जब सभी सागर किनारे बैठे चर्चा कर रहे थे कि श्रीलंका जा कर सीता का पता लगाने की क्षमता किसमें है। हर किसी को परखा गया पर सागर लांघने की शक्ति किसी में नहीं थी। हनुमान एक ओर बैठे थे, तभी उन्हें किसी ने उनकी सामर्थ्य का स्मरण करवाया और वे इतना मुश्किल काम स्वयं करने को तत्पर हो गए। वहाँ उन्हें ताकत की याद दिलाने वाले उपस्थित थे क्योंकि बिना किसी प्रतियोगिता के, सभी एक ही लक्ष्य प्राप्ति में जुटे थे।

इस संसार में ऐसा कुछ भी नहीं, जो आप चाहें और पूरा न हो सके, बस आपको अपनी लगन को सच्चा बनाना होगा। एक बार यदि जुट गए तो आपकी सामर्थ्य भी उसी दिशा में आगे बढ़ने के लिए सहायक होगी। जितनी गहराई से काम में डूबेंगे नतीजे उतने ही बेहतर होंगे। आपकी क्रिया ही तो उपलब्धि की प्रतिक्रिया को निश्चित करेगी। यदि ऐसा न कर सके तो कुछ हाथ नहीं आएगा। मैंने अपनी जिंदगी में कुछ खोया और उस कमी को पूरा करने के लिखने लगा, नतीजे के रूप में, यह किताब आपके सामने है, जिसे आप पढ़ रहे हैं। मैं इस पुस्तक का लेखक हूँ। यह बता कर मैं अपने लेखन को अच्छा या बुरा नहीं जताना चाहता पर इससे इतना तो साफ हो जाता है कि मुझमें लेखन की प्रतिभा है। इस जन्मजात प्रवृत्ति के बिना चाह कर भी कुछ नहीं हो सकता।

4.2 आपके पास जो है, उसी में प्रसन्न रहें

इस सदी की दूसरी बड़ी मंदी ने सबको यह मानने पर मजबूर कर दिया है कि भारतीय संस्कृति ही बेहतर है, जो परिवार को भावी बचत के लिए विवश करती है; यह प्राचीन समय के उस महान व्यक्तित्व की तरह नहीं जो एश्वर्य से जीने में विश्वास रखते थे, चाहे ऋण ही क्यों न लेना पड़े। यह व्यक्तित्व कोई और नहीं 'चर्चाक' थे, उनका दर्शन था कि आप इस धरती पर खाली हाथ

आए हैं और खाली हाथ ही जाएँ इसलिए यहाँ जितना समय भी रहो, ऐश करो।

अमरीका इस मंदी की मार को ज्यादा झेल रहा है, क्योंकि वहाँ के लोग आप से अधिक व्यय करते हैं। वे बैंकों तथा वित्तीय संस्थानों से कर्जा लेते समय यही सोचते हैं कि समय कभी नहीं बदलेगा। इस पृथ्वी का सबसे सभ्य देश, जिसने अधिकतर विकासशील देशों को नई राह दिखाई; वह ऐसी सोच रख सकता है, यह मानना कठिन है पर नतीजा आप सबके सामने है। यदि आपकी इच्छा पूर्ति नहीं हो पा रही तो यह आपके हक में ही है। इसका मतलब है कि आपका आने वाला कल, आज से बेहतर होगा। यह उस भारतीय मानसिकता का सूचक है, जो भावी बचत में विश्वास रखती है तथा 'जरूरत' व 'इच्छा' में फर्क करना जानती है।

यदि आपकी इच्छा पूर्ति नहीं हो पा रही, तो यह आपके हक में ही है। इसका मतलब है कि आपका आने वाला कल, आज से बेहतर ही होगा।

समय हाथ से निकल जाने पर पछताना, कोरी मूर्खता है क्योंकि आप बीते समय को लौटा नहीं सकते। जिस दिन आप अपनी प्राप्तियों में ही प्रसन्नता पाना शुरू कर दें, उस दिन जश्न अवश्य मनाएँ क्योंकि उस दिन आप सफल जीवन का रहस्य पा लेंगे। हमारे पास जो नहीं है, उसके बारे में सोच कर जीवन को दुखी बनाने से कोई लाभ नहीं है।

एक मछुआरे का परिवार में झगड़ा को गया। वह नाराज़ हो कर मछली पकड़ने निकल पड़ा, अभी सुबह नहीं हुई थी। वह समय काटने के लिए नदी किनारे घूमने लगा। तभी उसका पैर एक थैले से टकराया, जिसमें चमकीले पत्थर पड़े थे। वह एक-एक करके उन पत्थरों को पानी में फेंकने लगा। वह आखिरी पत्थर फेंकने ही वाला था कि आकाश में सूरज निकल आया। उसने

देखा कि पत्थर चमचमा रहा था। दरअसल वे पत्थर नहीं बेशकीमती हीरे थे।

वह फूट-फूट कर रोने लगा। उसे यकीन नहीं आ रहा था कि उसने अपने हाथों से हीरे पानी में फेंक दिए। तभी एक महात्मा वहाँ आए तथा उसके दुख का कारण पूछा। फिर वे बोले:- मेरे प्यारे बेटे, रोना बंद करो। तुम्हें तो खुश होना चाहिए। तुम्हारी किस्मत अच्छी है कि यह हीरा तुम्हारे हाथ में है वरना तुमने इसे भी पानी में फेंक दिया होता। यह हीरा तुम्हारी पूरी जिंदगी बदलने के लिए काफी है। जो तुम्हारी हाथ से निकल गया, उसका तुम्हारे लिए क्या मोल? जो है, उसका उत्सव मनाओ।

प्रसन्नता आपकी चिंतन प्रक्रिया की अनुपातिक होती है। प्रसन्नता पाना चाहते हैं तो उसे अपनी सोच में शामिल करें। आपकी सोच, सामर्थ्य से भी कहीं ऊँची है कई बार आप भी देख कर हैरान होते होंगे कि विपरीत परिस्थितियों के बावजूद आपने जो भी सोचा, वही घटित हुआ। यह और कुछ नहीं केवल आपके उत्पादक चिंतन का फल था, जिसने नतीजे को अनुकूल बना दिया।

यदि आपने सही तरीके से काम करना सीख लिया तो परिस्थितियाँ अनुकूल हों अथवा प्रतिकूल, चिंतन प्रक्रिया हमेशा आपके नियंत्रण में रहेगी। कई बार हम अपनी आवश्यकता व इच्छा में अंतर नहीं कर पाते। उचित व त्वरित प्रतिक्रिया के लिए हमें पूरी तरह स्पष्ट होना चाहिए कि हमें किसकी सचमुच आवश्यकता है या हम सही मायने में क्या चाहते हैं।

केवल उसी के बारे में सोचें, जो आपने खो दिया या जो आपने पाने का प्रयास किया।

एक प्रसन्न व्यक्ति वातावरण में भी सकारात्मक ऊर्जा प्रवाहित करता है व इस प्रकार अपना व दूसरों का जीवन प्रसन्न तथा आरामदायक बना देता है। अच्छा व सकारात्मक चिंतन खुशहाल

लोगों के पास जल्दी पहुँचता है क्योंकि वे हमेशा खुले दिल से विचारों को अपनाते हैं। वे विचारों को अपनाने के लिए तैयार होते हैं, जिससे शेष प्रक्रिया में अपने-आप तेजी आ जाती है।

खुश रहना या न रहना; यह नितांत व्यक्तिगत निर्णय है तथा व्यक्ति ही इसका नियंत्रक है। इस व्यवहार को सीख भी सकते हैं। व्यक्ति निरंतर अभ्यास से स्वयं को सदा प्रसन्न रखना सीख सकता है तथा दूसरों को भी प्रसन्न रख सकता है। जब आप स्वयं को नियंत्रण में रखते हैं, तो चाहे हालात कैसे भी क्यों न हों, कोई भी आपको अप्रसन्न नहीं कर सकता। इसी में महान-ग्रंथ 'महाभारत' का सार छिपा है। यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि व्यक्ति को कर्मफल की चिंता नहीं करनी चाहिए। कर्म तो आपके नियंत्रण में हैं परंतु फल पर आपका नियंत्रण नहीं है।

हर कर्म के लिए प्रक्रिया अलग-अलग हो सकती है किंतु किसी व्यक्ति विशेष की एक-सी प्रक्रियाएँ, अवचेतन मन में पड़े कर्मों को भी प्रभावित कर सकती हैं। कोई भी काम शुरू करने से पहले, सभी नकारात्मक चिंतन व पूर्वाग्रहों से मुक्त होने का परामर्श दिया जाता कभी-कभी हम किसी व्यक्ति या हालात के इतने प्रभाव में होते हैं कि जो वे हमें सोचने पर विवश कर देते हैं। हम उस के अलावा कुछ और सोच ही नहीं सकते, अपने समूह में सबसे सफल होना चाहते हैं तो प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद खुशहाल रहने की आदत डालें ताकि आप सकारात्मक चिंतन को आकर्षित करते हुए, वैसे ही परिणाम भी पा सकें। यह संभव है, आप ऐसा कर सकते हैं। पर पहले आपको इसे स्वयं नियंत्रित करना सीखना होगा, तभी वांछित परिणाम सामने आएँगे। नियमित अभ्यास से आप अपनी सोच के हिसाब से नतीजे पा सकते हैं।

4.3 वही करें, जो सही लगे

कई संगठनों के साथ काम करने के दौरान, एक बार मेरी भेंट एक 26 वर्षीय युवा से हुई, जिसने पहले ही वर्ष में तकरीबन आठ लाख की पूंजी से विद्यालय खोला था। उसके पिता रियल एस्टेट के व्यवसाय में थे। मैनेजमेंट डिग्री लेने के बाद उसे लगा कि मंदी के दौर में स्कूल खोलना ही सबसे बेहतर धंधा रहेगा। किसी ने मुझे उससे मिलवाया और उसने भेंट का समय तय कर लिया। वह मेरे घर आया और हम परियोजना पर चर्चा करने लगे। उसे पूरा भरोसा था कि पैसे के बल पर सब कुछ खरीदा जा सकता है। वो गलत नहीं था क्योंकि उसने अपने जीवन में आरंभिक वर्षों तथा व्यवसाय के आरंभ में यही तो देखा था।

चर्चा के बाद, जब उसे मेरे परामर्श की फीस पता चली तो वह आश्चर्यचकित रह गया। उसकी मुद्रा से साफ झलक रहा था कि उसके स्कूल में करीब एक महीने तक चलने वाले उस शैक्षिक कार्य के लिए काफी भारी रकम की माँग की जा रही थी। उसने मुझे यकीन दिलाना चाहा कि मैं काफी बड़ी रकम की माँग कर रहा हूँ और वो मुझे कई दूसरे लोगों के नाम-पते भी दे सकता है, जो मुझसे काम करवाना चाहेंगे। ये आम धारणा है कि शिक्षाविद् अनुभव के लिए कोई बड़ी रकम के हकदार नहीं बनते मैंने उससे कुछ नहीं कहा लेकिन मैं अपनी आदत से लाचार हूँ, मैं अपने संपर्क में आने वाले व्यक्ति को सही शिक्षा देने का आदी हूँ। मैंने उसे एक कहानी सुनाई।

प्रसिद्ध चित्रकार पिकासो, तेज़ चहलकदमी के बाद थोड़ा आराम कर रहा था। तभी वहाँ एक महिला प्रशासिका आई जो उससे अपना पोर्ट्रेट बनवाना चाहती थी। पिकासो इंकार करना चाहता था लेकिन उस महिला की भावनाओं की कद्र करते हुए उसने झट से पोर्ट्रेट बना दिया व 1000 डॉलर के पारिश्रमिक की

मांग की। अब उस महिला के हैरान होने की बारी थी। पिकासो को उस महिला का पोर्ट्रेट बनाने में पाँच मिनट से भी कम का समय लगा था। इतने कम समय के लिए इतनी बड़ी रकम सुन कर महिला चकित थी। तब पिकासो ने कहा

“मैडम! पाँच मिनट की मेहनत के तो पाँच डॉलर ही हैं पर बाकी उस अनुभव के लिए हैं, जो मैंने पाँच मिनट में काम खत्म करने के लिए पाया है।”

महिला को बात समझ आ गई। उसने अगले ही दिन 1000 डॉलर का चेक भेज दिया।

बेशक वो लड़का काफी समझदार निकला। उसने मेरी बात समझ ली। हमने एक साथ चार परियोजनाओं पर काम किया और अब भी वह कभी-कभी मज़ाक करता है कि मैंने भारी रकम ली है। हालांकि वो ये सब मज़ाक में कहता है लेकिन कोई भी अंदाज़ा लगा सकता है कि यह सोच उसके अवचेतन में बसी है, जो मौका पाते ही बाहर आ जाती है। एक अध्यापक होने के नाते मैं उसे समझाने का प्रयास करता हूँ कि शिक्षा ही सभी सामाजिक परिवर्तनों का गढ़ है, एक व्यवसाय के तौर पर यह किसी भी मंदी से ऊपर है, चाहे वह 2008-2009 का दौर हो या 1929-1930 का। इसकी आवश्यकता तो प्रत्येक को, सब जगह व हर समय रहेगी।

यदि इस समाज में आप लोगों की कही बातों व सोच पर ध्यान देते हैं तो आप काम से गए क्योंकि ये तथाकथित ‘लोग’ आपकी कोई परवाह नहीं करते। आप उनके लिए समय बिताने का साधन भर हैं, जो कि उनके पास काफी होता है। जिसने भी मेरे कार्यक्रम में भाग लिया होगा, वह जानता है कि मैं ऐसे लोगों का कड़ा आलोचक हूँ जो किसी की भी प्रगति के लिए प्रतिक्रियात्मक बल का कार्य करते हैं व कभी भी अपनी हरकतों पर शर्मिंदा नहीं होते। किसी को धकेल कर गिराना और फिर उस

पर हँसना, एक निष्ठुरता है तथा किसी भी दृष्टि से इसे मानवीय कृत्य नहीं कहा जा सकता।

ऐसे व्यक्तित्व तो हर स्थान पर मौजूद होते हैं व ऐसे लोगों से बच कर रहना चाहिए। वही करें, जो सही लगे, तर्कसंगत हो तथा समाज के नियमों के अनुसार हो। आपको किसी की प्रसन्नता के लिए या नकारात्मक आनंद पाने के लिए कोई कार्य नहीं करना चाहिए। आपको हमेशा अपने काम को तर्कसंगत ठहराने के लिए तत्पर रहना चाहिए, ऐसा किसी दूसरे के लिए नहीं बल्कि अपने-आप को भरोसा दिलाने के लिए करना होगा।

आपका सामना अनेक ऐसे व्यक्तियों से होगा, जो आपके अपने ऊपर बने भरोसे को तोड़ना चाहेंगे, वे आपसे कुछ पाना नहीं चाहते, आपको अपने जैसा बनाना चाहते हैं। वे असफल व्यक्ति अपने सिवा, प्रत्येक को अपनी असफलता का दोषी ठहराते हैं व सहानुभूति बटोरना चाहते हैं, वे किसी दूसरे को सफल होते नहीं देख सकते, वे अपने आलस व अक्षमता के कारण किसी असफलता के बल पर ही राज करना चाहते हैं।

मैं जिस युवा लड़के की बात कर रहा था, वह हमारे उसी शिक्षा तंत्र की देन हैं, जो उन्हें सिखाता है कि जो इच्छा हो, उसे पा लो, किंतु वह उन्हें ‘आवश्यकता’ और ‘इच्छा’ में अंतर करना नहीं सिखाता। जब कभी हमें उसके घर में एक कप चाय पीने के लिए फुर्सत के पल मिलते हैं तो वह मुझे कुछ बताने के लिए आग्रह करता, कभी-कभी थोड़ी आजादी लेते हुए सुझाव भी देता कि मुझे भी इन तथाकथित भगवानों की तरह दुकान खोल लेनी चाहिए, जो बड़ी बेशर्मी से अपने सच्चे भक्तों के सामने गाते हैं, मैं तो लुट गया तेरे प्यार में, हाय! रे जोगी। ये गाने बुरे नहीं लेकिन एक प्रतिष्ठित व आदरणीय व्यक्तित्व को हालात व समय को समझना चाहिए।

उचित व तर्कसंगत हमेशा उचित ही होता है, यह किसी व्यक्ति या समय के बदलने से नहीं बदलता। जो इसे जान जाता है, वही विजेता बनता और दूसरों को भी अपना अनुयायी बनने पर विवश कर देता है। इसके अनुयायी किसी भय से नहीं बल्कि प्रेरित हो कर, उसके पीछे चलते हैं।

4.4 किसी का भरोसा मत तोड़ो

कोई व्यक्ति अपनी वचनबद्धताओं को किस रूप में लेता है, इसी आधार पर वह विजेता या पराजित होता है विजेता कभी धोखेबाज नहीं होते और धोखेबाज कभी विजेता नहीं हो सकता।

एक दिन मेरे मित्र ने पूछा:- यदि मैं एक दिन तुम्हारा भरोसा तोड़ दूँ, तो क्या होगा?' मैंने झट से उत्तर दिया:- विश्वास रखना मेरा अपना निर्णय है, अधिकार है और मुझे उचित ठहराना तुम्हारा निर्णय है।'' आपको भी जीवन में अनेक ऐसे व्यक्ति मिलेंगे, जो अपना भरोसा और वादा निभाने के इतने पाबंद नहीं होंगे। उन्हें लगता है कि केवल दुर्बल व्यक्तित्व ही अपनी अक्षमता को ढांपने के लिए ये सब करते हैं। लेकिन हकीकत में इसके विपरीत होता है। केवल वही व्यक्ति वादा तथा भरोसा निभा सकते हैं, जिनका सशक्त व बेबाक व्यक्तित्व होता है। केवल बहादुर व्यक्ति ही किसी को माफी दे सकता है, तथा इसके विपरीत सामान्य परिस्थितियों में नहीं होता।

अपने-आप को एक ऐसे व्यक्तित्व में ढालें, जो कभी भी किसी को नीचा गिराने या धोखा देने की कोशिश न करे। आप इतने मजबूत हों कि स्वयं को दूसरों से बेहतर साबित करने के लिए चालें न चलनी पड़ें। लोगों को पता चलने दें कि आप अपने नैतिक मूल्यों की कितनी परवाह करते हैं। हो सकता है कि इन्हीं मूल्यों की वजह से कभी थोड़ी हानि भी उठानी पड़े लेकिन कुल मिला कर, दीर्घकाल में आप ही विजेता घोषित होंगे।

लोगों को लगता है कि वे दूसरों के लिए काम करते समय अपने मूल्यों की रक्षा नहीं कर पाएँगे, ऐसी सोच रखना गलत है। आपके नियोक्ता को पता हो कि आपने अपना समय बेचा है, आत्मसम्मान नहीं। वह उस समय सीमा में आपसे कोई भी काम करवा सकता है लेकिन ऐसे दबाव में जीने की बजाए, उस जगह को अलविदा कहना ही बेहतर होगा, तभी आपके चेहरे पर प्रसन्नता लौट पाएगी।

आपको अपने आसपास से ही जाने कितने उदाहरण मिल जाएँगे। आप स्वयं अपनी नियति नहीं हैं तथा किसी दूसरे के हाथ में भी इसका नियंत्रण नहीं होना चाहिए। आपकी यह स्पष्ट सोच होनी चाहिए कि अगर कोई वस्तु कड़ी मेहनत के बाद भी आपकी नहीं है तो वह अनैतिक साधन अपनाने से भी आपकी नहीं होगी। हो सकता है कि उस समय आपको अपनी मेहनत का फल न मिल रहा हो, उसे अपना भाग्य मान कर; पूरे भरोसे व लगन के साथ काम को जारी रखें, कोई भी नतीजे को आप तक पहुँचने से नहीं रोक सकता। यदि इस समय मध्यम नतीजे आ रहे हैं, तो कोई बात नहीं, आने वाले समय में सारी पूर्ति हो जाएगी।

जो किताब आप इस समय पढ़ रहे हैं, वह इस उदाहरण का ज्वलंत प्रमाण है। जब मैं पहली पुस्तक 'व्हाट इफ यू डाइ टूमरो' पर काम कर रहा था तो मुझे यकीन नहीं था कि मैं उसे पूरा भी कर पाऊँगा या नहीं क्योंकि मैं और भी कई कामों में उलझा हुआ था। मैंने किसी तरह उसे पूरा किया और बीस से भी अधिक प्रकाशकों से वापसी के बाद वह प्रकाशित हो गई। वे लोग किताब में थोड़ी-बहुत फेर-बदल चाहते थे, जिनके लिए मैं सहमत नहीं था।

'क्रैक द शैल दैट कवर्स यू' से मैंने जाना कि चाहो तो तुम कुछ भी कर सकते हो। मेरे ही पेशे से जुड़े मित्रों ने कहा कि मैं किस्मत का धनी हूँ, किस्मत से ही मुझे सब मिल रहा है। मैं कभी भी नास्तिक होने का दावा नहीं करता लेकिन मेरा मानना है कि

जिस तरह बिल गेट्स द्वारा बना कंप्यूटर सही तरीके से काम कर रहा है, उसी तरह इस संसार को भी किसी ने सही तरीके से चलाने के लिए प्रोग्राम किया होगा। आप प्रोग्रामर को विभिन्न उपासना साइटों पर खोज कर, प्रसन्न करने का प्रयास कर सकते हैं पर मैं उसे खुश नहीं करना चाहता क्योंकि मैं जानता हूँ कि यदि कोई है तो वह मुझे दस घंटे की जी-तोड़ मेहनत के बाद कंप्यूटर पर काम करते देख खुश हो रहा होगा।

जब तक आप अपने दिए वादे की कद्र नहीं करते हैं और उसे नहीं निभाते हैं, तब तक आप दूसरों से भी आदर नहीं पा सकते, जो व्यक्ति अपने प्रति ईमानदार नहीं, वह दूसरों के लिए ईमानदारी कैसे निभा सकता है। आप चाहें न चाहें, लेकिन हममें से अधिकतर, दूसरों के प्रति तो भला बर्ताव करते हैं परंतु अपने व अपने परिवार के सदस्यों के साथ सही तरह से पेश नहीं आते। ऐसे में हम कहते हैं कि मंच पर खड़े होकर भाषण देना तो आसान है पर किसी मुद्दे को व्यावहारिक तौर से प्रयोग में लाना उतना ही कठिन है।

जो व्यक्ति अपने प्रति ईमानदार नहीं, वह दूसरों के लिए ईमानदारी कैसे निभा सकता है?

इसके पीछे कारण यह है कि हम सब एक दोहरे व्यक्तित्व के साथ जीते हैं; दूसरों के साथ कुछ और अपने साथ कुछ और। हम झूठ पर झूठ बोलते समय भूल जाते हैं कि इन्हें याद भी रखना पड़ेगा क्योंकि अगर हमने कुछ गलत कर दिया तो पिछला झूठ खुलते देर नहीं लगेगी जबकि सच बोलने वाले को ऐसा कुछ याद रखने की आवश्यकता नहीं होती, चाहे वह हमारे अनुकूल हो अथवा दूसरों के।

मूल्यों के प्रति ईमानदारी आपके चरित्र को अद्वितीय बनाती है लोग सदा ऐसे अद्वितीय चरित्र के विषय में जानने को उत्सुक रहते हैं। क्योंकि वे भी उस व्यक्ति जैसी लोकप्रियता पाना चाहते हैं मूल्य

ऐसा कोष है, जिन पर आप सदा गर्व कर सकते हैं। इस तरह आप बिना किसी निवेश के स्वयं को अमर बना सकते हैं। यहाँ निवेश में एक कीमत छिपी है, जिसमें मूल्यों को ध्यान में रखते हुए समस्या-समाधान का कौशल छिपा है। इस धरती के हजारों-हजार लोगों में से कुछ ही अमर हो पाते हैं। यदि आप भी अपने मूल्यों के साथ चलें तो उनमें से एक हो सकते हैं।

4.5 अपने व्यवहार के स्वामी बनें

आप एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जन्मे हैं, जो आज़ाद था और आज़ाद रहना चाहता है। ऐसा तभी हो सकता है, जब आप अपने साथ घटने वाली प्रत्येक घटना के प्रति आभार व धन्यवाद का रवैया विकसित कर लें, क्योंकि वर्तमान परिस्थिति में आपका हर अगला कदम आपको बड़ी व बेहतर उपलब्धि की ओर ले जाएगा। इस धरती के लोगों को कुल मिला कर दो वर्गों में बाँट सकते हैं। एक वर्ग चाहता है कि संसार में सबको उनके साथ भलाई से पेश आना चाहिए क्योंकि वे भले हैं। ये कुछ ऐसा ही है मानो चीता उन शाकाहारियों को न खाए। दूसरे वर्ग में ऐसे व्यक्ति आते हैं जिन्हें लगता है कि दुनिया में जो भी बुरा घटेगा, वह केवल दूसरों के साथ ही होगा। उन्हें लगता है कि जब वे किसी का बुरा नहीं करते तो उनके साथ भी बुरा नहीं हो सकता। इस सोच के अनुसार वे उस अच्छे चालक की तरह हैं, जो सोचता है कि वह एक अच्छा ड्राइवर है इसलिए कोई उससे नहीं टकराएगा।

किसी व्यक्ति का रवैया ही उसकी ऊँचाई तय करता है।

व्यक्ति का रवैया ही उसकी ऊँचाई तय करता है। एडमंड हिलेरी माउंट एवरेस्ट पर इसलिए चढ़ सके क्योंकि उनके मन में कुछ खास करने की इच्छा थी, जो कि तब तक किसी के मन में

नहीं आई थी। ऐसा नहीं कि जब तक कोलम्बस ने अमरीका की खोज नहीं की, अमरीका इस पृथ्वी पर था ही नहीं। यह पृथ्वी पर तो था पर संसार के नक्शे में नहीं था। कोलम्बस में कुछ खास कर दिखाने की प्रवृत्ति ही अमरीका को संसार के सामने लाई। यह कोई साधारण रवैया नहीं बल्कि दृढ़ संकल्प था, जिसने कोलम्बस को अमरीका की खोज का सपना पूरा किए बिना और हिलेरी को दुनिया की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचने से पहले, चैन नहीं लेने दिया।

वैसे तो सभी में यह रवैया पाया जाता है लेकिन वो लगन कुछ खास ही होती है, जो इंसान को संपूर्णता के वांछित स्तर तक लाने से पहले सांस नहीं लेने देती। संपूर्णता का यह वांछित स्तर प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग होता है तथा समय की भी इसमें अहम भूमिका होती है। आपने कई ऐसे व्यक्ति देखे होंगे, जो बड़ी खुशी से किसी काम का आरंभ तो करते हैं किंतु एकाग्रता के अभाव में उसे लंबे समय तक नहीं निभा पाते। ऐसा नहीं कि वे तयशुदा लक्ष्य तक नहीं पहुँचेंगे परंतु उनका ध्यानाकर्षण का स्तर इतना कम होता है कि वे झट से दूसरे काम के पीछे पड़ जाते हैं। उन्हें लगता है कि हम दूसरे लक्ष्य को पाना आसान होगा जबकि वास्तविकता में ऐसा नहीं होता, हर काम की एक निश्चित समयावधि होती है।

ऐसे व्यक्तियों का रवैया काफी विविध होता, वे अपने रचनात्मक रवैए के बावजूद अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते। वे यह नहीं समझ पाते कि सफलता को सफलता खींचती है तथा कुछ कम महत्वपूर्ण पा लेने से, बड़े लक्ष्य की प्राप्ति में कोई बाधा नहीं आती। जब आप कुछ पा लेते हैं, तो वह आपको और भी तेजी से बड़े लक्ष्य तक जाने के लिए प्रेरित करता है।

ऐसा नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति आपको व आपके नजरिए को आसानी से स्वीकार लेगा। आपको याद रखना चाहिए कि धीरू भाई

अंबानी और बिल गेट्स को भी अपनी सोच के लिए, लोगों के उपहास का केंद्र बनना पड़ा था क्योंकि उनके विचार समय से कहीं आगे थे और आम आदमी के लिए उन्हें पचाना आसान नहीं था। ऐसा हमेशा होता है और जो लोग अपने विचारों पर डटे रहते हैं, वे प्रत्येक के लिए चिंतन का स्रोत बन जाते हैं।

आपका अपने व अपनी सोच के प्रति रवैया ही, भविष्य गढ़ता है। आपकी सोच पूरी तरह से स्पष्ट होनी चाहिए तथा मन में किसी भी प्रकार का संदेह आते ही, उसका निराकरण कर देना चाहिए ताकि आप आने वाली पीढ़ियों के लिए जानकारी का स्रोत बन सकें। हो सकता है कि लोग आपके स्थिर व कड़े रवैए की वजह से आपको मूड़ी समझें पर आपको थोड़ी हिम्मत से काम लेना होगा। सफलता के पथ पर तो अकेले ही चलना पड़ता है क्योंकि भीड़ भरा रास्ता तो ज्ञात मंजिल की ओर ही ले जाता है, जो कि शायद आपकी सफलता की मंजिल न हो।

जो सफल व्यक्ति हुए हैं, उन्होंने अपने रवैए को इसी हिसाब से ढाला है। ऐसा नहीं कि आपको दूसरों के विचारों पर ध्यान ही नहीं देना चाहिए, लेकिन साथ ही आपको अपनी व्यक्तिगत चिंतन शैली बरकरार रखनी चाहिए ताकि आप किसी को भी चोट पहुँचाए बिना कुछ खास कर सकें।

4.6 आलोचना से न घबराएँ

यदि किसी व्यक्ति की कोई आलोचना नहीं करता तो वह उन लोगों में से है, जिन पर कोई ध्यान नहीं देता या जिनमें याद रखने लायक कोई बात नहीं होती। हम उन्हीं लोगों की निंदा करते हैं, जो दूसरों से अलग होते हैं और यह अलग होना ही उन्हें अनूठा बना देता है। ऐसा नहीं कि ये लोग हमेशा उत्पादक होते हैं तथा समाज की मदद करते हैं पर अधिकतर मामलों में इनकी सोच, समाज के आम आदमियों से थोड़ा हट

कर होती है वे अपने-आप में भरोसा रखते हैं तथा आलोचकों की संगति में स्वयं को आरामदेह पाते हैं।

जाल और इमरान दो हीरो थे। प्रेस में उनकी काफी निंदा होती थी। एक दिन जाल को इतना गुस्सा आया कि उसने आलोचक को दुगनी कड़ी भाषा में पत्र लिख दिया। नतीजन उन दोनों के संबंधों में गहरा तनाव आ गया और हमेशा के लिए संबंध टूट गए।

इमरान ने इस विषय में विचार किया, अगले दिन तक उसकी तिलमिलाहट घट गई थी। फिर उसने आलोचक को पत्र लिखा कि वह उसे प्रदर्शन में आई कमी जताने के लिए धन्यवाद देता है तथा उसकी आलोचना का स्वागत करता है। इस उत्तर से आलोचक भी पिघल गया और वे दोनों पक्के मित्र बन गए।

आलोचना भी कई बार काफी रचनात्मक व सहायक हो सकती है जबकि प्रशंसा में छिपी चापलूसी से हमें कोई सबक नहीं मिलता।

सभी अन्वेषकों का योगदान स्मरण करें, तो उन सबमें एक बात सामान्य रूप से पाएँगे। समाज ने उन्हें स्वीकार नहीं किया था तथा अधिकतर मामलों में उनके अविष्कार मृत्यु के बाद ही लोकप्रिय हुए। केवल यही नहीं, उच्चस्तरीय कार्पोरेट घरानों को भी दूसरी-तीसरी पीढ़ी में ही पहचान मिली। पहली पीढ़ी के दौरान वे विचार शैशवावस्था में थे तथा लोगों के लिए परी-कथाओं से काल्पनिक थे। उन्होंने अपनी सोच व दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ आरंभ किया व इसे अपनी उत्तरजीविता का प्रश्न बना दिया।

विचार में कोई प्राण नहीं होते, व्यक्ति का दृढ़ संकल्प इनमें प्राण-प्रतिष्ठा करता है।

सन् 2001 में गर्मी की छुट्टियां थीं, मैं अपने ऑफिस में बैठा, कुछ नई योजनाओं को लागू करने के बारे में सोच रहा था। पी. ए. ने बताया कि स्वागत कक्ष में एक महिला मेरी प्रतीक्षा कर रही है,

जिसे अहमदाबाद के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट के प्रोफेसर ने भेजा था। प्रोफेसर पंद्रह दिवसीय 'स्ट्रेटिजिक लीडरशिप मैनेजमेंट' कार्यक्रम में मेरे कोर्स डायरेक्टर रहे थे। वह अल्पदिवसीय कार्यक्रम सी. बी. एस. ई. ने अपने चुने हुए प्रधानाचार्यों के लिए आयोजित किया था ताकि नए बन रहे विद्यालयों के निरीक्षण के लिए दल बनाया जा सके।

एक नवयुवती अपनी सहेली के साथ मिलने आई थी। उसने बताया कि उन्होंने आई. आई. टी. कानपुर से बी. टेक पूरा किया और CAT के माध्यम से आई. आई. एम. में दाखिला भी मिल गया। आई. आई. टी. व CAT ; दोनों में उनका रैंक दस में था, वे सूरत के एक व्यावसायिक परिवार से हैं। इस शिक्षा के बावजूद वे मुझसे नया स्कूल खोलने के बारे में राय लेने आई थीं। बाद में बातचीत से पता चला कि विदेश में अच्छा वेतन व पद मिलने के बावजूद उन्होंने उसे ठुकरा दिया। अपनी इस अनूठी सोच को अंजाम देने के कारण परिवार का भी कोई समर्थन नहीं मिल रहा था।

अपनी पढ़ाई के दौरान उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में एक परियोजना पर काम किया था और वहीं से उनके दिमाग में एक स्कूल खोलने का विचार आया। उन्होंने मेरे सामने ऐसे-ऐसे तर्क रखे कि पिछले दो दशकों से इस क्षेत्र में काम करने के बावजूद, मैंने कभी उनके बारे में सोचा तक नहीं था। उनका मानना था कि उद्योगों द्वारा शिक्षा की ऐतिहासिक उपेक्षा व नेतृत्व के अभाव में ही शिक्षा के क्षेत्र में संकट के बादल छा गए हैं। अब शिक्षा एक सामाजिक दायित्व है तथा उद्योगों के लिए विविध प्रतिभा की मांग भी है, अब वो समय आ गया है कि उद्योग इस दिशा में कुछ सक्रिय कदम उठाएँ।

उन्होंने कहा कि शिक्षा के स्तर के विषय में भ्रम हैं कि यह दान है अथवा व्यवसाय। इस क्षेत्र में सामान्य निवेश के सब रास्ते

बंद हैं और यह कुल मिला कर ट्रस्टो, निजी फंड आदि पर निर्भर हैं। इसे केवल बैंक से भवन-निर्माण के लिए ही ऋण मिल पाता है। इस तरह व्यवसायियों व सार्थक उद्योगों के लिए इसके प्रवेश द्वार बंद हैं।

वे मुझसे सलाहकार के रूप में मदद चाहती थीं और मैं उनसे इतना प्रभावित हुआ कि किए जाने वाले काम को जाने बिना ही उनके प्रस्ताव पर हामी भर दी। उसके तीन-चार साल बाद तक मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा; पता नहीं वे मुझसे कुछ सीख सकीं या नहीं।

घर छोड़ना, पविार का समर्थन न मिलना, बैंक से मिले ऋण से स्कूल खोलना जैसी बातें भले ही सुनने में रोचक न लगें किंतु उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में एक नए युग का आरंभ किया जहाँ लोग स्कूलों को सिर्फ आय प्राप्ति का साधन मानते आए हैं।

उन्होंने अपनी योजना पर काम किया और किसी भी निंदा की परवाह नहीं की। उन्हें अपनी सफलता पर पूरा भरोसा था स्कूल खोलने के छः साल के भीतर ही, उन्होंने उसे अहमदाबाद, गांधीनगर की बेहतर शैक्षणिक संस्थाओं में ला खड़ा किया। वे किसी दूसरे वित्तीय क्षेत्र में काम करके डॉलर कमा सकती थीं किंतु उन्होंने सफलता पाने के लिए नया रास्ता चुना व स्वयं को अपनी आलोचना सुनने के लिए तैयार किया।

4.7 समाधान का हिस्सा बनें

आप प्रतिदिन कितने ऐसे लोगों से मिलते होंगे, जो दावा करते हैं कि वे जन्मजात समस्या हल करने वालों में से हैं और उनकी निर्णय निर्धारण क्षमता भी गजब की है। उन्हें लगता है कि बिगड़ा फोन सुधारने से ले कर, बच्चे के दाखिले तक सारी परेशानियों के लिए लोगों को उनके पास ही आना चाहिए क्योंकि वे समस्याओं के हल तलाशने में होशियार हैं। यदि उनका घरेलू

जीवन देखें तो आप पाएँगे कि वे घरेलू मोर्चे पर पीठ दिखा कर भाग जाते हैं और यही मानते हैं कि वे समाज सेवा कर रहे हैं तो भगवान स्वयं उनकी परेशानियाँ दूर करेंगे, जो कि उनके यहाँ होती ही नहीं है।

समस्याएँ तो सार्वभौमिक हैं। इस धरती पर जब तक जीवन रहेगा; समय तथा व्यक्तियों के बावजूद परेशानियाँ भी बनी रहेंगी। इनसे हमारी निर्णय निर्धारण क्षमता निखरती है और जीवन में थोड़ा नया स्वाद आता है। ये सच्चे दोस्त की तरह हमारी क्षमता व योग्यता का एहसास दिलाती हैं। हम मानें, न मानें; समस्याओं के बिना जीवन एक ऐसा व्यंजन होगा; जिसमें स्वाद ही न हो।

दूसरी तरह के लोग भी दुनिया में मौजूद हैं, जो स्वयं दूसरों के लिए मुसीबतें पैदा करते हैं और फिर उन्हें हल करने की कोशिश करते हुए, अपनी श्रेष्ठता दर्शाते हैं। वे अपने-आप को 'स्मार्ट' लोगों की श्रेणी में बनाए रखना चाहते हैं। उनकी मार्केटिंग जबरदस्त चलती है, यहाँ तक कि समझदार लोग भी उन्हें अपने से ज्यादा मान देते हैं। बस वे इतना भूल जाते हैं कि जैसे हम समस्या पैदा करते हैं, वैसे उसे सुलझा नहीं सकते यही समस्या समाधान मनोवृत्ति की बुनियाद है।

हम जैसे समस्या पैदा करते हैं, वैसे उसे सुलझा नहीं सकते।

किसी दूसरे के दुख में, उसकी परेशानी दूर करने में कोई बुराई नहीं है लेकिन अपने-आप को सारी समस्याएँ हल कर देने वाला मानना गलत है, यहाँ तक कि शैक्षिक तथा दूसरे अनुभवों से परिपूर्ण व्यक्ति भी ऐसा नहीं कर सकता। यहाँ तक कि किसी एक क्षेत्र के बारे में भी सब जानने का दावा आपकी अक्षमता जाहिर करता है। सफलता चाहने वाले को ऐसी सोच से बचना चाहिए। सब कुछ जानने का दावा करने वाला रवैया, अंत में आपको कहीं नहीं ले जाता है।

यदि आप तेजी से दौड़ कर, साथ वालों से आगे निकलना चाहते हैं तो आपको उन लोगों से बेहतर सोचना होगा लेकिन आपको कभी भी स्वयं को सबसे बेहतर नहीं मानना चाहिए। समय अपनी गति से बदलता है और आपको भी बदलना चाहिए लेकिन यह तभी संभव होगा, जब आप जीवन के किसी भी मोड़ पर, समस्या का अंग बनने की बजाए समाधान का हिस्सा बनें।

इतिहास में नाम कमाने वाले व्यक्तियों ने सदा समस्या के समाधान का नजरिया अपनाया (मुगल साम्राज्य का संस्थापक 'बाबर', इब्राहिम लोदी के निमंत्रण पर भारत में लूटपाट करने आया था। इब्राहिम उसके माध्यम से शत्रुओं को सबक सिखाना चाहता था किंतु बाबर ने आते ही राजाओं के परस्पर बैर भाव को भांप लिया और सिर्फ इब्राहिम लोदी को हरा कर, भारत में ही रहने का निर्णय ले लिया। वर्तमान की घटनाओं के माध्यम से भविष्य की झांकी पाना; इसे ही कहते हैं। उनका निर्णय सही रहा। उसने ऐसे मुगल साम्राज्य की नींव डाली, जिसने भारत पर दो सौ साल से भी अधिक राज्य किया।

किसी भी समस्या से उसका निर्णय झलकता है, आपको सही समय पर उसे पकड़ना है। हो सकता है कि वह निर्णय तात्कालिक रूप से लाभदायक हो, न हो किंतु भविष्य के लिए आधार तो बन ही जाता है। हमें किसी भी समस्या के उचित निरूपण द्वारा स्थायी समाधान निकालना चाहिए। दरअसल हम लोग प्रायः लक्षणों की बजाए रोग पर ध्यान देते रहते हैं, जो कि सही नहीं होता।

समस्या हल नहीं कर पाए, इसका अर्थ यह नहीं कि आपकी क्षमता में कमी है, हो सकता है कि आपने उसे सही तरीके से पहचाना ही न हो। उसके बारे में नजरिया बदल कर सोचें, हल अवश्य निकलेगा। स्थिति पर लगातार नजर बनाए रखें। मिलने वाली सलाहों के लिए आँख-कान खुले रखें; वे भी सहायक हो सकती हैं।

यदि सबकी सुनेंगे, तभी नए विचार सामने आएँगे। इससे समस्या का समाधान कहीं बेहतर तरीके से हो पाएगा। आपसे बेहतर कोई नहीं सोच सकता, यह सोच आपकी प्रगति को वहीं रोक देती है। इस दुनिया में सफल होने वाले व्यक्तियों ने अकेले चलने के बावजूद दूसरों की सलाहों की कद्र की है। आपकी सोच तो आपके पास ही रहेगी, यदि दूसरों की सोच भी पता चल जाए तो हर्ज ही क्या है?

4.8 प्रगति का प्रतिदिन आकलन करें

आपने ध्यान दिया होगा कि कोई मनोवांछित वस्तु हाथ में आने के बाद आप तत्काल उससे बेहतर पाने की चाह करने लगते हैं। ऐसा नहीं कि आप एक अद्वितीय विचारक हैं बल्कि ऐसा सबके साथ होता है। आत्मप्रगति व समाज की प्रगति के लिए ऐसी सोच का अपना मूल्य है। यह कहती है कि सफलता की राह का निर्माण कार्य सदा चलता रहता है।

सफलता की राह का निर्माण कार्य सदा चलता रहता है।

किसी तयशुदा लक्ष्य पर पहुँचना भला तो लगता है किंतु हम साथ ही आगे बढ़ने के बारे में सोचने लगते हैं। मनुष्य स्वभाव से ही लक्ष्यकेंद्रित है तथा सभी स्तरों पर, सबसे अलग दिखना चाहता है। किसी निश्चित लक्ष्य पर पहुँचने के बाद जब वह दूसरों को भी वहीं देखता है तो वह पिछली सारी दिक्कतों व तकलीफों को भुला कर, फिर से नए लक्ष्य की ओर चल देता है। ऐसा तब तक चलता है, जब तक वह यात्रा कर सकता है। यह व्यक्ति की बड़ी विचित्र मानसिकता है कि वह कभी भी अपने प्राप्य से संतुष्ट नहीं होता तथा यही सोचता रहता है कि वह और क्या पा सकता है।

सफलता हमेशा असीमित होती है तथा प्रत्येक के लिए सच्ची होती है। एक व्यक्ति जो अपने लिए बेहतर कल के बारे में सोच

सकता है, वह निश्चय ही दूसरों के लिए भी थोड़ा लाभदायक होगा। प्रारंभ में हर कोई, किसी के नए विचार या सोच की खिल्ली ही उड़ाता है। कोई ऐसी सोच, जिसे कोई भी सोच सकता है, उससे आप नाम व संतुष्टि नहीं पा सकते। जो सोच थोड़ी हट कर होगी, वही काम आएगी। उस व्यक्ति की कल्पना करें, जिसने ऐसे देश में बोतलबंद पानी बेचने की सोची, जहाँ पानी की कमी नहीं है। उसके निकट आत्मीयों ने अवश्य ही उसकी आलोचना की होगी, और आज के हालात देखें। यहाँ तक कि सुदूर देहातों में भी बोतलबंद पानी मिलेगा। यहाँ पानी नहीं, वो सोच बिक रही है, जिसने थोड़े से निवेश के बल पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय व स्थानीय कंपनियों को मालामाल कर दिया।

आपकी सोच ही, आपको खास बनाती है। आप भी दूसरे आम इंसानों की तरह सोचेंगे, तो कोई भी आपकी तरफ ध्यान नहीं देगा क्योंकि आम इंसानों की कमी नहीं है। आपको इसके लिए दिन में भी सपने देखने होंगे। एक बार लोग आपके भीतर छिपी खूबी को पहचान जाए तो यही पहचान आपके भीतर अतिरिक्त ऊर्जा उत्पन्न करेगी ताकि आपकी उस खूबी को बाहर लाया जा सके। यही तो 'सफलता' है।

सफलता के मायने सब लोगों के लिए तथा कई बार एक ही व्यक्ति के लिए भी अलग हो सकते हैं। सफलता की तड़प ही, आपको उस तक खींच ले जाएगी। कई बार आप तयशुदा लक्ष्य पर काम करते हैं और कई बार अनजाने में ही कुछ खास मिल जाता है, इससे और अधिक से अधिक पाने की दिशा में प्रेरणा मिलती है। कभी न मिटने वाले भूख या चाह ही इंसान को आगे ले जाती है। इस संसार में लोग आते-जाते हैं किंतु सफल व्यक्ति हमेशा के लिए अमर हो जाते हैं। 'राईट ब्रदर्स' का नाम हमेशा के लिए अमर हो गया। ऐसा नहीं कि उन्होंने सबसे तेज भागने वाला वायुयान 'सुकोई' बनाया था बल्कि इसलिए कि उन्होंने इस यान

के विकसित होने की पृष्ठभूमि दी थी। यदि कोई आपके बाद, आपकी सोच को आगे बढ़ाता है, तो भी आप तो साथ होंगे ही।

हममें से अधिकतर जानते हैं कि यहाँ क्या उदाहरण दिया गया है पर बहुत कम इस पर एकाग्र हो पाते हैं। हम नए विचारों पर काम शुरू करते हैं और बीच राह में ही उन्हें अधूरा छोड़ देते हैं, बेशक वे अपनी शैशवावस्था में काफी विशेष रहे होंगे लेकिन उन्हें आकार देने में, हमसे कहीं न कहीं कमी रह जाती है। जो ऐसा कर पाते हैं, वे सफल होने का पुरस्कार पाते हैं। इस प्रक्रिया में समय बहुत महत्व रखता है लेकिन सबसे अहम है वचनबद्धता। आपको आरंभ अवश्य करना चाहिए किंतु दौड़ में आगे निकलने के लिए भरपूर प्रयासों तथा वचनबद्धता की आवश्यकता होगी।

एक सुंदर सा भला युवक बैंक गया तथा 20,000/- का ऋण माँगा। वह मैनेजर के पास गया तो मैनेजर ने पूछा:- क्या उसके पास जमानत के तौर पर रखने के लिए कुछ है। उस व्यक्ति ने उत्तर दिया:- जी हाँ, मैं अपनी मर्सीडीज़ कार जमानत के तौर पर रख सकता हूँ। सभी पेपर जांच कर, संतुष्टि होने के बाद मैनेजर ने वाहन रख लिया व ऋण दे दिया।

वह व्यक्ति पूरे एक वर्ष बाद लौटा और मय ब्याज पूरा ऋण चुका दिया। मैनेजर ने हैरानी से पूछा:- बैग पर बंधी पर्ची से पता चलता है कि आप यू. एस. ए. से आए हैं। फिर भी आपने सिर्फ 20,000 का ऋण लिया?" उस व्यक्ति ने कहा

"मैं अकेला था और पूरे साल के लिए इतनी छोटी-सी रकम में मेरे प्यारे वाहन की देखरेख कौन करता? इसलिए मैं इसे जमानत के तौर पर रखवा गया था।"

एक छोटी-सी अलग सोच, आपको दूसरों से बेहतर बना सकती है। जब लोग समझते हैं कि असल में आपने क्या किया, तो उन्हें अपने ऊपर शर्मिंदगी होती है कि वे ऐसा क्यों नहीं कर पाए परंतु तब तक काफी देर हो चुकी होती है। जब तक कोई

दूसरा प्रयोग में न लाए, वह विचार नया ही होता है। यह हर क्षेत्र के लिए सही है और आपको इसके अनेक उदाहरण मिल जाएँगे। आप क्या सोचते हैं तथा परिस्थितियों को किस रूप में लेते हैं, उसी से आपकी उपलब्धि का स्तर निश्चित होता है। प्रत्येक के पास यह क्षमता है किंतु विजेता इस सोच पर काम करते हैं और पराजित पीछे हट कर, किसी दूसरे को जीतने का अवसर दे देते हैं। अपने विचार का निरंतर पीछा करने से ही आप सफल व्यक्ति की उपाधि पा सकते हैं। आप स्वयं को समझें, तय करें कि दूसरों से कुछ बेहतर कर दिखाएँगे फिर समय गँवाए बिना काम में जुट जाएँ; नतीजे हाथ आते देर नहीं लगेगी। अपनी क्षमता व सामर्थ्य से थोड़ा-सा ऊपर उठें, जिंदगी में सब कुछ मनचाहा पा लेंगे। सोच में थोड़ा-सा भी बदलाव आपको विजेता बना सकता है।

4.9 अतीत को इतिहास के रूप में ले

भारत की जनसंख्या विशाल है, भरपूर प्राकृतिक संसाधनों व विशाल मानव संसाधनों के बावजूद इसकी गिनती अल्प संभावनाओं वाले राष्ट्र में की जाती है इसके मूल में हमारी चिंतन प्रक्रिया छिपी है, जो बचपन से ही गलत दिशा में आकार ग्रहण करती है। हमें आरंभ से ही कहा जाता है कि जो है, उसी में संतुष्ट रहो तथा प्रसन्न रहने के लिए अपने से नीचे देखो। पूरी दुनिया हमें एक ऐसे स्थान के रूप में दिखती है, जहाँ हर कोई धोखेबाज है तथा प्रत्येक व्यक्ति को संभल-संभल कर कदम रखना पड़ता है, इस तरह इन मनचाही गतिविधियों में हमारी कीमती ऊर्जा का क्षय होता है।

हमें किसी भी अवस्था में नहीं सिखाया गया कि दुनिया हमेशा से ही ऐसी रही है तथा यहाँ लोग ही नतीजे पाते व देते हैं। कोई भी मान्यता हमें निरंतर प्रयास करने की शिक्षा नहीं देती। हमें एहसास नहीं हो पाता कि इंसान केवल बुद्धिमता या शक्ति नहीं

बल्कि निरंतर प्रयासों के बल पर आगे बढ़ता है, इसी से तो संभावनाओं के बंद ताले खुलते हैं। यहाँ तक कि हमारे महान ग्रंथ भी इसी विचार की पुष्टि करते हैं किंतु हम उन तथाकथित भगवानों की बातें सुनने के आदी हो गए हैं। वे जो स्वयं दुनिया में नहीं पा सके, उसका ही उपदेश देते हैं।

केवल बुद्धिमता या शक्ति से नहीं बल्कि निरंतर प्रयासों से संभावनाओं के बंद ताले खुलते हैं।

महाभारत में, श्रीकृष्ण ने सदा प्रयास या कर्म पर बल दिया है। वे निरंतर अर्जुन से यही कहते हैं कि केवल कर्म पर उसका अधिकार है। वह जैसे कर्म करेगा, उसी के अनुपात में फल पाएगा। प्रयास ही वो पथ है, जो आपको सफलता रूपी लक्ष्य तक ले जाता है। इस धरती पर सफलता पाने वाले व्यक्ति दूसरों से अधिक बुद्धिमता या शक्तिशाली नहीं थे किंतु उन्होंने निरंतर प्रयासों के बल पर अपने सपनों को सच कर दिखाया।

लक्ष्य प्राप्ति से कहीं अधिक महत्व रखता है, 'लक्ष्य का पीछा करना।' हम प्रतिदिन लक्ष्य निर्धारित तो करते हैं किंतु उसका पीछा नहीं करते। यह बचपन से प्राप्त शिक्षा का ही परिणाम है, माता-पिता व अध्यापक हमें लक्ष्य का पीछा करने की प्रवृत्ति व सीख नहीं दे पाते। वे हमें पूरी दुनिया से संभल कर चलना सिखाते रहते हैं नतीजन हम प्रत्येक परिस्थिति के प्रति इतने शंकालु हो जाते हैं कि किसी सुखद घटना के घटने की कल्पना तक नहीं कर पाते। बेशक यहाँ बुद्धिमता की योगदान उस हद तक नहीं होता, जितना कि हम सोचते हैं।

आपको याद रखना चाहिए कि सफलता के लिए अधिक बुद्धिमता की आवश्यकता नहीं है, प्रयास कहीं ज्यादा मायने रखते हैं। चारों ओर नज़र दौड़ा कर संसार के सफल व्यक्तित्वों को देखें। ये लोग आम इंसान से भी थोड़े कम बुद्धिमान थे किंतु वांछित दिशा

में निरंतर प्रयास करने पर, उन नतीजों तक पहुँचे, जिनके बारे में सब संदेह रखते थे। ऐसा किसी एकाध नहीं बल्कि तकरीबन सभी मामलों में हुआ है।

जिस तरह हमें काम की शुरूआत के समय किसी का समर्थन नहीं मिलता, उन्हें भी नहीं मिला था। उन्हें भी दुनिया की नाराज़गी और उपेक्षा झेलनी पड़ी जो उनकी सोच बदल सकती थी किंतु उन्होंने किसी की परवाह नहीं की और अंततः उन्हीं लोगों ने उन्हें सफल विजेता के रूप में स्वीकारा। उनके परिणाम सामने आने के बाद, प्रत्येक यही सोचने लगा कि वह अधिक बुद्धिमान हैं इसलिए वह भी लक्ष्य तक आसानी से पहुँच सकता है किंतु उसे यह याद नहीं रहा कि उसके पास सफल विशेषज्ञों जैसे निरंतर प्रयासों का अभाव था।

प्रयासों के विषय में तो हमें अपने नेताओं से सीख लेनी चाहिए। जिस दल के पास बीस वर्ष पूर्व, संसद में केवल दो सीटें थीं, वह दो सौ सीटें जीत कर सरकार बना सकता है, यह निरंतर प्रयासों का ज्वलंत उदाहरण है। आप कह सकते हैं कि एक विशेष सोच वाले व्यक्ति बदल सकते हैं, किंतु फिर तो यही नियम दूसरों पर भी लागू होना चाहिए। एक दल चुनाव हारता है और अगले ही दिन से नेता अगले पाँच साल बाद होने वाले चुनावों की तैयारी में जुट जाते हैं। वे यह नहीं सोचते कि चुनाव आने पर अपना अभियान चालू करेंगे, वे अगले ही दिन से प्रयास आरंभ कर देते हैं।

हम हमेशा अपने नेताओं व राजनीतिक दलों को कोसते रहते हैं कि उन्होंने देश का बुरा हाल किया है लेकिन हममें से कितने लोग सत्तर वर्ष की आयु में, 48 डिग्री सेल्सियस तापमान के बीच 16 से 18 घंटे काम कर सकते हैं, जबकि हमारी एक-दो बायपास सर्जरी भी हो चुकी हों। ए. सी. कमरे में बैठ कर किसी को भी कोसना आसान होता है और बुद्ध बनना देखना भी मुश्किल नहीं है

पर सामने आकर देश को सुधारने की कोशिश करना बहुत मुश्किल होता है। हमें इन वृद्ध प्रहरियों से धैर्य व निरंतर प्रयासों की सीख लेनी चाहिए।

यह भी याद रखना चाहिए कि प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाते बस वे उचित दिशा में होने चाहिए। उचित दिशा आपका लक्ष्य ही है, जो हो सकता है कि दूसरों के लिए सही न हो पर आपके लिए ठीक हो। एक बार लक्ष्य तय करने के बाद उस पर संदेह नहीं करना चाहिए। लक्ष्य से थोड़ा-बहुत यहाँ-वहाँ होने से बेहतर नतीजे आ सकते हैं, लेकिन पूरी तरह से भटक गए तो आप कहीं नहीं पहुँचेंगे। लक्ष्य के रूप में बोझ लेकर चलेंगे तो सारी ऊर्जा नष्ट हो जाएगी तथा कीमती प्रयास भी किसी काम नहीं आएँगे। सफलता हमेशा आपको पुरस्कार देगी किंतु यह केवल आप तक सीमित नहीं है। समाज भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से, आपके योगदान से लाभ पाता है।

यह और अधिक ऊर्जा लगाने का नहीं बल्कि अपनी सोच की दिशा में प्रयास आरंभ करने का समय है तथा भरोसा रखें कि आकाश से परे कहीं, आपकी सीमा है। प्रयास करना एक मानसिकता है। आपको तय करने के बाद काम करना है और इनके बीच कुछ नहीं आना चाहिए सफलता पाने का तरीका क्रमबद्ध रूप से नहीं लिखा होता क्योंकि यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग-अलग होता है परंतु सफल लोगों की बुनियादी विशेषताएँ क्रमबद्ध होती हैं, जिसका कोई अंत नहीं है। हो सकता है कि आपमें वे खूबियाँ हों या न हों लेकिन अगर आपमें दम खम है तो सफलता आपकी होगी किसी भी वस्तु का सृजन एक नियोजित प्रयास है व आपमें यही खूबियाँ हैं। यदि आप निरंतर इस पुस्तक को पढ़ रहे हैं तो मुझे पक्का यकीन है कि आप चाहें, जो भी करें, वो सब कुछ पा सकते हैं, जो पाना चाहते हैं।

4.10 अपने कर्मों पर दृढ़निश्चयी रहें

प्रसिद्ध प्रकृतिवादी न्यूटन ने कहा था कि प्रकृति का यही नियम है:- प्रत्येक क्रिया के लिए समान व विपरीत प्रतिक्रिया होती है।' और हर प्रत्येक परिस्थिति में सत्य है। यहाँ आपने यह भी सुना होगा कि जो बोओगे, वही काटोगे! दोनों मामलों में एक बात तो साफ है कि आप अपनी सोच के अनुपात में ही पा सकते हैं। जीवन बंधे-बंधाए नियमों पर नहीं चलता। यदि ऐसा होता तो यह कितना नीरस व रोमांचहीन होता? आपके कर्म ही आगे किए जाने वाले कर्मों को निर्धारित करते हैं। आप जितने प्रयास करेंगे या बल लगाएँगे, उसी के अनुपात में दूसरों से, तेजी से आगे बढ़ेंगे। ये लगाया गया बल एक समान व निरंतर होना चाहिए। यह कुछ ऐसा ही है, जिस तरह आप गाड़ी चलाते समय ऊबड़-खाबड़ रास्ते को पार करने के लिए गीयर बदलते हैं। सफलता की यह राह भी कभी समतल नहीं होती इसलिए आपकी गति इसी के अनुसार होनी चाहिए।

जीवन का क्रिया व प्रतिक्रिया वाला भाग, आपकी उपलब्धि के स्तर को आकार देता है। आप चाहें न चाहें, किंतु जीवन में कुछ उद्देश्यपूर्ण पाना चाहते हैं तो अपनी योग्यता निश्चित करनी होगी। सफलता के पथ पर सुनिश्चित कर्म करने आवश्यक है। ये निर्धारित कर्म ही आपकी योग्यता होंगे आपको यह भी तय करना चाहिए कि लक्ष्य आपकी योग्यता से बहुत ऊपर या नीचे न हो। हम अक्सर दूसरों की देखादेखी, अपनी योग्यता का मूल्यांकन किए बिना किसी निश्चित लक्ष्य की ओर चल देते हैं। यदि हम अपने रोल मॉडल की योग्यता से अपनी योग्यता की तुलना करने के बाद ऐसा कदम उठाएँ तो कहीं बेहतर होगा। आपको स्वयं विश्लेषक बनना है। फिर आप जान जाएँगे कि किन खूबियों को अपनाना है और किन कमियों को दूर करना है।

सफलता के पथ पर निर्धारित कर्म चाहिए।

दौड़ में एक समान योग्यता वाले कई व्यक्ति होने के बावजूद केवल एक ही व्यक्ति विजेता होता है। प्रकृति हमेशा सबसे बेहतर को ही चुनती है। वह बाकी सबसे अलग होता है। कई बार ऐसा व्यक्ति भी जरूरत से ज्यादा भरोसा रखने के कारण हार जाता है। 'कछुए व खरगोश' की प्रसिद्ध कहानी याद है न, खरगोश कछुए से कहीं बेहतर था लेकिन अतिविश्वास व गुमान के कारण दौड़ में हार गया। खरगोश ने कछुए को अपना प्रतिद्वंद्वी बनाया। खरगोश ने गलती यह की कि उसने दौड़ में जीतने के बाद आराम नहीं किया। वह पहले ही आराम करने लगा। उसने यह भी नहीं सोचा कि वहाँ उसकी प्रतिष्ठा दांव पर लगी थी।

जीवन की दौड़ में संभाव्यता का सिद्धांत सामने आता है इसके अनुसार आपको तभी अवसर लेना चाहिए जब विजेता या पराजित होने का मौका 50 प्रतिशत से कम न हो। अपनी योग्यता के उचित विश्लेषण के बाद ही यह संभव है और आपके सिवाय कोई दूसरा यह काम नहीं कर सकता। आपको कई किताबें व लोग मिल जाएँगे, जो कहेंगे कि आप किसी भी दिशा में आगे जा सकते हैं। लेकिन, इस दिशा में जाने से पहले या कोई भी चुनौती लेने से पहले अपनी योग्यता का मूल्यांकन कर लेने में क्या हर्ज है, इससे पहले ही पता चल जाएगा कि आपमें एक विजेता बनने लायक खूबियाँ हैं भी या नहीं? इस तरह आप मैदान में आने से पहले ही पूरी तैयार कर जाएँगे।

आपको हमेशा याद रखना चाहिए कि आपने दूसरों की मांगें पूरी करने के लिए नहीं बल्कि अपने लिए इस धरती पर जन्म लिया है। कोई भी काम शुरू करने से पहले अच्छे-बुरे की परख करना आवश्यक है। एक बार आप इस विश्लेषण की कला में पारंगत हारे जाएँ तो आपको जीवन की राह में सफल होने से कोई नहीं रोक सकता। यहाँ आप ढाबों में पकने वाले खाने का उदाहरण ले सकते हैं। वे लोग कोई भी व्यंजन परोसने से पहले,

उसकी सारी सामग्री तैयार रख लेते हैं। ऑर्डर मिलते ही डिश तैयार होने में समय भी नहीं लगता। उनकी उर्जा व मजदूरी की भी बचत होती है।

किसी भी युद्ध की तैयारी, लड़ने से ज्यादा महत्व रखती है, हो सकता है कि युद्ध आरंभ होने के बाद आपको तैयारी का पर्याप्त समय न मिले। ये तैयारी मानसिक व शारीरिक; दोनों तरह से होनी चाहिए। मानसिक तैयारी हो जाए तो, मस्तिष्क स्वयं विश्लेषण करते हुए; चुनौती का सामना करने के निर्देश देने लगता है मानसिक तैयारी आपको सदा दूसरों से आगे रखती है और मस्तिष्क भी किसी भी तरह ही हानि को नियंत्रित करने के लिए तत्पर रहता है।

हमेशा याद रखें कि सफलता के लिए मध्यम स्तर की बुद्धिमता के साथ स्व-कल्पना व आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है। जो व्यक्ति ये खूबियाँ रखता है और असफलता का सामना कर सकता है, उसे सफल होने से कोई नहीं रोक सकता। जो भी कर सकते हैं, करें व सफल बनें।

•

मनोवृत्ति-सफलता का निर्णायक कारक

जापानी हमेशा से ताजी मछली के शौकीन रहे हैं, लेकिन कई दशकों से वहाँ के पानी में ज्यादा मछलियाँ नहीं रहीं। जापानी जनसंख्या के भोजन के लिए, बड़ी नावें पानी में काफी दूर तक भेजी जाने लगीं। मछुआरे पानी में जितना आगे जाते, मछली लाने में उतना ही समय लगता। इस तरह मछली ताजी नहीं रह पाती थी। मछली पकड़ने वाली कंपनियों ने नावों में फ्रीज़र लगवा दिए। मछलियाँ सागर में ही पकड़ी जाती और फ्रिज में रखी जातीं। इस तरह नावें अधिक समय तक पानी में ठहर सकती थीं। हालाँकि जापानियों को बर्फ में लगी मछलियों का स्वाद नहीं भाया। फ़ोर्ज़न मछली, ताजी मछली के मुकाबले सस्ती बिकने लगी। फिशिंग कंपनियों ने फिश टैंक लगवा दिए। वे मछलियाँ पकड़ते और उन्हें टैंकों में लदालद ठूँस देते। इस तरह की आपाधापी में भी मछलियों का स्वाद खत्म हो जाता है। फिर मछली उद्योग संकट में पड़ गया! लेकिन आज वे जापान को ताजे स्वाद वाली मछली दे पा रहे हैं!

उन्होंने ये कैसे किया? मछलियों को ताजा रखने के लिए फिशिंग कंपनियाँ आज भी उन्हें टैंकों में रखती हैं लेकिन उनमें एक छोटी-सी शार्क छोड़ दी जाती है। मछलियों को शार्क से चुनौती मिलती है और वे फुर्ती से यहाँ-वहाँ डोलती रहती हैं। यही चुनौती उन्हें जिंदा और ताजा रखती है।

क्या आपने महसूस किया कि हममें से कुछ भी तालाब में रह रहे हैं लेकिन अधिकतर समय उदास और थके हुए रहते हैं? हमारे जीवन में आने वाली चुनौतियाँ, शार्क की तरह हमें सक्रिय बनाए रखती हैं यदि आप लगातार चुनौतियों से जूझते रहेंगे तो प्रसन्न रहेंगे। चुनौतियाँ आपको ऊर्जान्वित रखती हैं। सफलता पाने के बाद उसे अक्रमण्य न बनाएँ। आपमें कुछ अलग कर दिखाने के संसाधन, कौशल व योग्यताएँ हैं। अपने टैंक में एक शार्क रखें और देखें कि आप कितनी दूर तक जा सकते हैं।

मनोवृत्ति या रवैए की दुर्बलता ही चारित्रिक दुर्बलता के लिए उत्तरदायी है और आपका व्यक्तित्व भी इसी के अनुसार गढ़ता है। टैंक में रखी गई शार्क इतनी छोटी है कि वह एक भी मछली को नहीं खा सकती लेकिन मछलियों की चारित्रिक दुर्बलता उन्हें शार्क से दूर रहने को कहती है। आपकी मनोवृत्ति ही अंततः अवास्तविक भय के कारण स्थायी रूप ले लेती है।

हममें से अधिकतर इसी मनोवृत्ति से ग्रस्त होते हैं। कुछ लोग विश्लेषण करके बाहर निकल आते हैं तो कुछ नए-नए भय से ग्रस्त होते रहते हैं।

मनोवृत्ति की दुर्बलता से चरित्र में भी दुर्बलता आती है।

भारी मंदी के इस दौर में नौकरियाँ खोने का भय बढ़ता ही जा रहा है। इसने उत्पादन पर भी गलत प्रभाव डाला है। निःसंदेह संकट तो है किंतु प्रिंट व नॉन-प्रिंट मीडिया के सम्मिलित प्रयासों ने इसे एक हौवा बना दिया है। यही मनोवृत्ति बन गई है कि संगठन को अपनी क्रियात्मक लागात घटाने के लिए मानव संसाधनों पर नियंत्रण पाना होगा। ऐसा तो हमेशा से था लेकिन थोड़े समय के लिए होता था और बैंकों से ऋण ले कर समस्या हल हो जाती थी लेकिन इस समय बैंक भी इस हालत में नहीं कि वे लाभ न देने वाले संगठनों को कर्जा दे सकें।

संगठनों की आय से अधिक व्यय की मनोवृत्ति ही इसका मूल कारण है इन संगठनों में काम करने वालों को पूरा यकीन था कि कुछ गलत नहीं होगा इसलिए उन्होंने परिस्थितियों से निबटने के लिए कोई आकस्मिक योजना नहीं बनाई। वे सहज रवैए व आरामदायक वातावरण के बीच काम करते रहे जब भी आप अपने या संस्था के लिए काम करें तो आपको अपने काम से लगाव रखना चाहिए, संस्था से नहीं। एक बार आप अपने काम को चाहने लगेंगे तो स्वयं में निखार लाते हुए संस्था को ज्यादा से ज्यादा देना चाहेंगे, इसके साथ ही आप स्वयं को किसी भी भावी विपरीत परिस्थिति के लिए तैयार कर लेंगे। ऐसा इसलिए नहीं हो पाता क्योंकि मनुष्य स्वभाव से ही आरामदायक माहौल में रहने का आदी होता है। एक बार अपने लिए आरामदायक स्थिति बना लेने के बाद वह उसमें से बाहर नहीं आना चाहता जबकि इतिहास के पन्नों पर नाम कमाने वाले वही व्यक्ति थे, जो सदा अपने 'कंफर्ट ज़ोन' से बाहर आने को उत्सुक रहे। एक आरामदायक स्तर पर पहुँचने के बाद वे दूसरे स्तर के लिए जुट जाते और यही प्रक्रिया निरंतर जारी रहती। सफल होने के लिए व्यक्ति को जीवन में कुछ न कुछ अवश्य खोना चाहिए। स्थायी कंफर्ट ज़ोन में रहने वाला व्यक्ति कभी भी सफल नहीं हो सकता क्योंकि वह अपनी संतुष्टि के उस घेरे से बाहर ही नहीं आना चाहता।

गतिशीलता हमें ऊर्जान्वित व तेजस्वी बनाए रखती है। गतिशीलता का हमारी मनोवृत्ति से गहरा नाता है धीमी गतिशीलता का नतीजा धीमी मनोवृत्ति होगा जबकि तेज व नियोजित गतिशीलता, ऊर्जान्वित मनोवृत्ति को जन्म देती है। यह हमें मानसिक तथा शारीरिक, दोनों रूप से परखती है। आपने ध्यान दिया होगा कि जो लोग कड़ी मेहनत करते हैं, वे शारीरिक रूप से फिट रहते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि फिटनेस की कमी उन्हें भारी पड़ सकती है। हम आजाद ही जन्मे हैं इसलिए हमारी सोच भी आजाद ही होनी चाहिए।

सफल व्यक्तियों के जीवन पर नज़र डालें तो आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि उनमें से प्रत्येक का अपने बारे में सकारात्मक रवैया था वे अपने प्रदर्शन से पूर्णतः संतुष्ट थे व उससे पूरा नतीजा भी पा रहे थे, इससे न्यूटन का गति का सिद्धांत सिद्ध होता है कि प्रत्येक क्रिया के लिए समान प्रतिक्रिया होती है। यदि आप में सफल बनने की सकारात्मक सोच है तो कोई भी आपको दिशा से नहीं भटका सकता क्योंकि आप आगे बढ़ने के लिए वचनबद्ध हैं। इस दुनिया में जाने-माने नाम वाले, वे ही व्यक्ति थे जो अपनी सोच के लिए वचनबद्ध थे और अपने आलोचकों की कतई परवाह नहीं करते थे।

किसी काम को पसंद की वजह से करना या फिर सकारात्मक रवैए से करना; इन दोनों में काफी अंतर है। पहला आपकी रुचि के अनुपात में है। रुचि खत्म होते ही एकाग्रता भी नहीं रहेगी लेकिन दूसरी दशा में रवैया आपको लक्ष्य तक पहुंचने से पहले कहीं न रुकने के लिए विवश कर देगा।

5.1 काम को अपने तरीके से करें

इस दुनिया में जिन लोगों ने अपने जीवनकाल में या मृत्यु के बाद नाम कमाया, ये वो लोग थे जिन्होंने काम व घटनाओं को अपने तरीके से अंजाम दिया। उन्होंने यह सब कुछ समय व हालात पर नहीं छोड़ा, उसे अपनी तरीके से किया। इसे ही 'मारक प्रवृत्ति' (Killar instinct) कहते हैं। ऐसी प्रवृत्ति रखने वाले व्यक्ति दुनिया को अपनी सोच के हिसाब से गढ़ते हैं। उनकी राह में भी बाधाएँ आती हैं किंतु वे उन बाधाओं के सम्मुख आत्मसमर्पण करने की बजाएँ, उन्हें अपनी सोच को प्रेरित करने के लिए प्रयोग में लाते हैं।

'प्यासा कौआ' की प्रसिद्ध कहानी में कौआ प्यास बुझाने के लिए, पानी के वैकल्पिक साधन तलाशने की बजाएँ उसी मटके पर

अपना ध्यान एकाग्र करता है, जिसमें थोड़ा सा ही पानी है। काफी देर सोचने के बाद उसे पानी में कंकड़ डालने की सूझती है। कंकड़ डालने से पानी ऊपर आ जाता है, वह अपनी प्यास बुझा कर यात्रा पर निकल पड़ता है।

इस कहानी से दो तरह की सोच जुड़ी है। एक समूह कहेगा कि कौए को मटके का पानी पीने के लिए इतनी मेहनत नहीं करनी चाहिए थी, उसे पानी का कोई दूसरा साधन तलाश लेना चाहिए था। दूसरा समूह कहेगा कि यदि आप किसी भी काम का पक्ष नहीं लेते, तो सब कुछ आपके हाथ से निकल जाएगा।' ये दोनों सोच सही या गलत नहीं कही जा सकतीं लेकिन इनसे आपकी मनोवृत्ति अवश्य झलकती है।

पहली सोच के साथ आप पलायनवादी हैं, आप पर भरोसा नहीं कर सकते क्योंकि मजबूत विपक्ष देखते ही आप अपना मन बदल लेंगे और दूसरे तरीके से काम करने लगेंगे। दूसरी सोच में आप किसी भी कठिन समस्या के वैकल्पिक हल तलाशेंगे।

यदि आप किसी भी बात का पक्ष नहीं लेते तो सब कुछ आपके हाथ से निकल जाएगा।

वैसे मूलभूत रूप से सबके शरीर में रक्त की मात्रा, हड्डियों व न्यूट्रॉन की संख्या-एक-सी ही होती है। सारा अंतर रवैए से पड़ता है। यह रवैया आपकी 'आत्म-अवधारणा' से जुड़ा है, जो आपकी क्षमता व सामर्थ्य हैं आप अपनी सामर्थ्य से अधिक कुछ नहीं कर सकते, जो आपके द्वारा ही आकार ग्रहण करती हैं किसी का शारीरिक सौष्ठव उसके मजबूत या कमजोर रवैए का संकेत नहीं देता। एक मजबूत व स्वस्थ व्यक्ति भी दुर्बल मनोवृत्ति वाला हो सकता है तथा एक दुबला-पतला व्यक्ति भी मजबूत इरादों व मनोवृत्ति का मालिक हो सकता है। यह मनोवृत्ति आपके सामर्थ्य व आपके अपने मूल्यांकन के मेल से बनती हैं।

आपने रस्सी से बंधे हाथी को तो देखा होगा। धरती का इतना बड़ा प्राणी, जो कि बड़े से बड़े पेड़ को भी जड़ से उखाड़ने की ताकत रखता है, वह रस्सी से बंध कर ऐसे खड़ा रहता है मानो, उसमें कोई ताकत ही न हो (दरअसल उसके जन्म से ही मालिक उसे रस्सी से बांधना शुरू कर देता है, उसकी यही मनोवृत्ति बन जाती है कि वह काफी मजबूती से बंधा है और मालिक ही उसे खोल सकता है, यही विचार उसकी अपनी क्षमता पर हावी हो जाता है।

हममें से अधिकतर भी उस हाथी की तरह ही हैं जो सामर्थ्य के बावजूद सांसारिक बंधनों को तोड़ नहीं पाता क्योंकि हमें बचपन से यही सिखाया जाता है कि बड़े काम बड़े लोगों के लिए बने हैं, जबकि इसके विपरीत छोटे लोग ही सारे बड़े काम संभालते हैं। हमें जब तक यह बात समझ आती है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। हम इससे सबक भी नहीं लेते और न ही आने वाली पीढ़ियों को सिखाते हैं क्योंकि हम अपने आप से भयभीत होते हैं, इस तरह वे भी असहाय व्यक्ति बन जाते हैं।

इन बंधनों को तोड़ने का साहस रखने वाले अपने व समाज के लिए कुछ बेहतर कर पाते हैं। आरंभ में तो इसे तोड़ने के लिए काफी ऊर्जा लगानी पड़ती फिर अपने भीतर से उस काम को करने की प्रेरणा प्राप्त होती है। आपको अपने समाज व आसपास से ऐसे ही कई उदाहरण मिल जाएंगे, इनके लिए आपको कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं है। हालांकि यह सब कुछ इतना आसान नहीं, जितना पढ़ते वक्त लग रहा है पर ये इतना कठिन भी नहीं है।

आपको लग सकता है कि यदि यह इतना सरल था तो हर कोई इस क्षेत्र में सफल क्यों नहीं हुआ। यह सचमुच काफी

आसान है और हर कोई हल्के बंधन तोड़ कर, आगे बढ़ने की दिशा में पहल भी करता है लेकिन अचानक वह ऐसे दुष्चक्रों में घिर जाता है जो उसमें पराजित होने का भय भर देते हैं और वह कदम पीछे हटा लेता है। हममें से अधिकतर को यही लगता है कि यदि समाज का कोई दूसरा व्यक्ति चाहने पर भी किसी वस्तु को नहीं पा सका तो हो सकता है कि वह भी उस वस्तु को पाने योग्य न हों। ये उन हाथियों की तरह ही हैं, जो पहले ही रस्सी से बंधे हैं। वे एक-दूसरे को देख कर सोचते हैं कि अगर मजबूत हाथी रस्सी नहीं तोड़ सकता तो हम कैसे तोड़ेंगे, यही सोच पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। हम पर भी यही सोच लागू होती है।

हम हर वस्तु को उसके बाहरी रूप से पहचानते हैं तथा उसकी सही स्थिति तक पहुँचने की कोशिश ही नहीं करते। जिस दिन हम स्वयं को किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार कर लेंगे, उसी दिन से लक्ष्य की ओर यात्रा आरंभ होगी। यह भी तय है कि ये सब इतना आसान नहीं होगा। यदि यह इतना आसान होता तो हर कोई इसे पा लेता माना कि सफलता की यात्रा कठिन है लेकिन यदि कोई चाहे तो अपनी मनोवृत्ति को सशक्त बना कर इसे पा सकता है।

एक बार इस दिशा में कदम बढ़ाने की देर है, आपको स्वयं अपने भीतर से ऊर्जा प्राप्त होगी। लोग हमेशा अपनी अनचाही सलाहों के साथ विरोध के लिए तत्पर रहेंगे लेकिन आपको पूरी विनम्रता के साथ, उनकी भावनाओं को ठेस न पहुँचाते हुए, उन्हें नजरंदाज करना होगा ताकि वे स्वयं को महत्वपूर्ण समझते रहें। अन्यथा वे अनावश्यक समस्याएँ खड़ी करके आपका कीमती समय बर्बाद करते रहेंगे। आपको शत्रुओं को सबक सिखाने या उनसे लड़ने की जरूरत नहीं है, वरना वे आपकी सामर्थ्य जान लेंगे। लोगों को किसी भी हालत में आपकी वास्तविक क्षमता का पता नहीं चलना चाहिए। चूंकि आपकी सामर्थ्य ही रवैए को गढ़ती है,

इसलिए लोगों व घटनाओं से सावधान रहते हुए, उन्हें केवल अपनी सामर्थ्य के अनुमान लगाने दें।

आपको शत्रुओं को सबक सिखाने या उनसे लड़ने की आवश्यकता नहीं है, वरना वे आपकी सामर्थ्य जान लेंगे।

5.2 असफलता स्वभाविक है

सफलता से अधिक असफलता ध्यान खींचती है। बहुत कम लोग यह जानना चाहेंगे कि आप सफल कैसे हुए, अधिकतर लोगों की रुचि यह जानने में होगी कि आप किन कारणों से असफल रहे। वे प्याज के छिलकों की तरह आपकी असफलता की परतें उतारेंगे ताकि आँखों में सहानुभूति के आंसू ला सकें पर ये आंसू तभी तक रहेंगे, जब तक आप प्याज छीलते रहेंगे। हम भूल जाते हैं कि अगर इसी तरह प्याज की परतें उतारते रहे तो अंत में आंसुओं के सिवा कुछ नहीं बचता और वे किसी के काम नहीं आते।

कोई भी दूसरों की असफलता से सबक नहीं लेना चाहता, उन्हें लगता है कि दूसरों को असफल बनाने वाली परिस्थितियाँ, उनके लिए दूसरे नतीजे लाएँगी लेकिन वे भूल जाते हैं कि परिस्थितियाँ निर्जीव हैं तथा उनका व्यवहारगत ढाँचा सबके लिए एक-सा है। जो व्यक्ति निंदक बने बिना, असफलता का परीक्षण करता है, वह यह सबक पा लेता है कि उसे इन कदमों से बच के रहना है यदि कभी असफल हो भी जाएँ तो आपको उसी समय एहसास हो जाना चाहिए कि “यदि सब कुछ खो भी दें, तो भी भविष्य तो आपके हाथों में है।”

यदि आप सब कुछ खो देते हैं, तो भी भविष्य आपके हाथ में है।

हम जैसे व्यक्ति इस बात को भूल जाते हैं कि किसी मंज़िल का कोई तयशुदा रास्ता नहीं होता। जब तक आप मंज़िल तक नहीं

पहुँचते, यह न सोचें कि वहाँ मंज़िल नहीं है लेकिन जल्द ही वैकल्पिक सहजता से मंज़िल तक पहुँच पाएँगे। सफलता व असफलता दोनों एक से हैं क्योंकि इन दोनों की एक ‘सत्ता’ है। आपको जो सफलता लगती है, हो सकता है कि किसी दूसरे के लिए वह असफलता हो। इन सत्ताओं की एक विशेषता यह है कि व्यक्ति, स्थान व समय के साथ इनके अर्थ बदलते रहते हैं। जो सफलता आज आपको प्रसन्नता दे रही है, हो सकता है कि कल वही प्रसन्नता न दे और आप किसी बड़ी सफलता से प्राप्त प्रसन्नता चाहने लगें। यही सब चलता रहता है लेकिन अंत कभी नहीं आता। तभी तो कहते हैं कि सफलता कोई मंज़िल नहीं, एक यात्रा है। यह यात्रा आपको जीवंत व ऊर्जान्वित बनाए रखती है जबकि मंज़िल स्थिरता प्रदान करती है।

आपकी अपनी सोच ही आपको प्रसन्न या अप्रसन्न बना सकती है, इसका आपकी क्षमता से भी गहरा नाता है। आप अपनी क्षमता के अनुसार छोटी सी सफलता से भी प्रसन्नता पा सकते हैं क्योंकि आपकी मनोवृत्ति उसी सांचे में ढली है, आप यह जान कर निश्चित हो सकते हैं कि आपने अपना मनचाहा पा लिया। जैसे मेरे लिए दो लाख रुपए प्रतिमास की आय संतुष्टि व प्रसन्नता देने वाली हो सकती है जबकि किसी दूसरे सफल व्यक्ति के लिए यह नकारात्मक दिशा की प्रगति भी हो सकती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि सबकी सफलता का एक मापदंड होता है, मैं अपने मापदंड के हिसाब से सही हूँ, क्योंकि मेरी आय पिछले वर्ष की तुलना में पचास हजार रुपए मासिक बढ़ी है।

‘सफलता व असफलता’ काफी हद तक वैयक्तिक शब्द हैं। इन्हें वैज्ञानिक परिभाषाओं में नहीं बांध सकते। आपको अपनी प्रगति की माप के लिए सफलता को अवश्य परिभाषित करना चाहिए। यह आवश्यक है वरना आप अपने ही बनाए दुष्चक्र के फंस जाएँगे, जहाँ थोड़ी सी भी सफलता आपको प्रसन्न कर देगी या

थोड़ी सी भी असफलता आपको जमीन पर ला खड़ा करेगी। आपको इन दोनों 'अति' स्थितियों से बनना है, यह तभी संभव है, जब आप स्वयं अपनी सफलता व असफलता को परिभाषित करें।

एक वृद्ध व्यक्ति अपने अकेलेपन के कारण परेशान था। पुत्र व पुत्रवधु के पास तो काम के कारण, एक-दूसरे के लिए भी समय नहीं था। इकलौती पोती अपनी पढ़ाई में व्यस्त रहती व माता-पिता के लिए भी समय नहीं निकाल पाती थी। वृद्ध व्यक्ति इस अकेलेपन से ऊब कर सागर किनारे टहलने निकल गया।

तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी:- मुझे पकड़ों और चूम लो, उसने आवाज़ को अनसुना किया पर वह उसका पीछा करती रही। उसने जमीन पर पड़े एक मेढ़क को देखा तो हाथों में उठा लिया। वही कह रहा था:- मुझे चूमो।" तभी वृद्ध व्यक्ति को वह कहानी याद आ गई, जिसमें राजकुमार एक मेढ़क को चूमता है तो वह एक खूबसूरत लड़की बन जाती है।

वृद्ध ने बोलने वाले मेढ़क को जेब में डाल लिया। मेढ़क बार-बार चूमने की विनती कर रहा था। वृद्ध ने उसे जेब से निकालकर कहा देखो। इस उम्र में मैं किसी खूबसूरत लड़की का साथ नहीं चाहता लेकिन निश्चित रूप से एक बोलने वाले मेढ़क को साथ रखना चाहूँगा फिर उसने मेढ़क को दोबारा जेब में रख लिया।

जो वस्तु या परिस्थिति आज आपकी प्रसन्नता का विषय है, वही कुछ समय बाद अपनी प्रतिक्रिया बदल सकती है। कुछ पा लेने के बाद उसका महत्व खत्म हो जाता है इसलिए आपको उससे अधिक पाने का प्रयास करते रहना चाहिए यह इसलिए भी अनिवार्य है क्योंकि गति में ही जीवन है। असफलता एक स्थिर क्रिया है जबकि सफलता अस्थिर क्रिया होती है जो कि आपको अधिक से अधिक पाने के लिए प्रेरित करती है। यदि

उस वृद्ध व्यक्ति को युवावस्था में वह मेढ़क मिल गया होता तो वह एक सफल व्यक्ति होता है और यह उसके लिए किसी वरदान से कम न होता लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में उसके लिए एक खूबसूरत लड़की पाने से, बोलने वाला मेढ़क पाना बड़ी सफलता है।

5.3 गलतियाँ वरदान है

आपको हमेशा कोई ऐसा व्यक्ति चाहिए जो आपको सजा दे सके व वास्तविक स्थिति समझा सके। जीवन की गलतियाँ या भूलें भी आपको इसी दिशा में सहायता देती हैं। भूल होने पर, जब हानि होती है तो आप अपना सबक पा लेते हैं। आप भविष्य में ऐसी भूल न करने का संकल्प लेते हैं। भूलें आपकी अध्यापक बन कर, जीवन में अपने व संगठन के लिए कुछ करने में सहायक होती हैं।

यदि आप नए विचार पाना चाहते हैं, तो अपने आसपास निर्भीक माहौल रचना होगा ताकि लोग आपको सुझाव दे सकें, आपसे बात कर सकें। ये सभी सुझाव आपको वांछित दिशा में, ले जाने में सहायक होंगे। कोई भी विचार या पुस्तक कितने भी बेकार क्यों न हों, उनमें से कुछ न कुछ हाथ आ सकता है। क्या पता कौन सा विचार आपको मालामाल कर दे।

जो लोग गलतियाँ करने में घबराते हैं, वे जीवन में कुछ नहीं कर पाते, ऐसे लोगों में सुधार की भी गुंजाइश नहीं होती। वे इस सिद्धांत को भूल जाते हैं कि, इस दुनिया में उन्हीं लोगों को सराहा जाता है, जो किसी काम के होते हैं। यदि आप कुछ नहीं करते तो कोई आप पर ध्यान नहीं देता, और कोई आप पर ध्यान नहीं देता तो इसका अर्थ है कि आप जीवित नहीं हैं। वैज्ञानिक रूप से तो आप जीवित होंगे किंतु वास्तविक रूप से आपका कोई अस्तित्व नहीं होगा।

आपने कई लोगों को कहते सुना होगा कि वे गलतियाँ करने से बचते हैं। इसमें कोई बुराई नहीं लेकिन आपने ध्यान दिया होगा कि ये लोग हमेशा दूसरों में गलतियाँ खोजते रहते हैं। हर संगठन में ऐसे लोग अवश्य होते हैं, जो न तो स्वयं कुछ करते हैं और न ही; गलतियों का भय दिखा कर, दूसरों को कुछ करने देते हैं। उनके चक्र से बाहर निकलने वाले व्यक्ति ही कोई पहचान बना पाते हैं। इस तथ्य से इंकार नहीं है कि प्रत्येक संगठन में ऐसे लोग होने के बावजूद 'बॉस ही हमेशा सही होता है।' निर्णय निर्धारण क्षमता भी उसी के पास होती है लेकिन फिर भी नए विचारों के साथ सामने आने वाले व्यक्ति भी पहचाने जाते हैं।

जो व्यक्ति कभी कुछ नहीं करते, वे कभी गलतियाँ नहीं करते।

आप अपने पूर्वाग्रहों से तो मुक्ति पा सकते हैं, लेकिन यदि कोई दूसरा आपको गलतियों का भय दिखाता है तो उससे मुक्ति पाना थोड़ा कठिन हो जाता है। कभी-कभी तो हालात इतने बिगड़ जाते हैं कि ऐसे में, आपके सिवा कोई दूसरा मदद कह भी नहीं पाता आपको हमेशा हालात का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए, आपके सिर पर कोई तूफान नहीं गिर पड़ेगा; आपको यह भी देखना चाहिए कि भूल हो भी जाए तो किस हद तक कुछ बुरा हो सकता है। इस तरह आपकी सोच में एक ऐसा बदलाव आएगा, जो आपको अपनी नियति गढ़ने में मदद करेगा।

जब आप कुछ करते हैं, तो निश्चित तौर पर गलतियाँ होती ही हैं। आपको समझना चाहिए कि यदि आपकी जगह कोई दूसरा होता तो उससे भी यह भूल हो सकती थी। कुछ लोग भूल को सामान्य मान कर आगे बढ़ते हैं और कुछ वहीं थम कर आत्मविश्लेषण करते हैं कि उससे यह भूल कैसे हुई। माना आत्मविश्लेषण में कोई बुराई नहीं लेकिन अनावश्यक समय

लगाने से, दिमाग में डर बैठ जाएगा और आप आगे बढ़ने से सकुचाएँगे। सुदूर राजस्थान में एक परियोजना पर काम करते समय, मैं एक विख्यात घराने के काफी निकट आ गया। एक दिन मुझे मेल बॉक्स में एक 'मेल' मिली, जिस पर हेल्प लिखा था। मुझे पता चला कि वह मेल, मालिक के आई. आई. टी. के किसी दोस्त ने उसे भेजी थी, जो एक मैनेजमेंट संस्था चलाता था। बाद में मुझे पता चला कि उस व्यक्ति की संस्था कहीं से भी मान्यता प्राप्त नहीं थी इसी आधार पर एक पेरेंट ने संस्था पर धोखेबाजी की एफ. आई. आर. लिखवा दी थी।

मुझे बताया गया कि संस्था सही थी और यह सब व्यक्तिगत बैर का नतीजा था। उस व्यक्ति ने मेरे प्रतिष्ठित ग्राहक से मदद माँगी थी और उन्होंने मुझे मेल भेज दी थी कि शायद मैं कोई मदद कर सकूँ। पहले मुझे लगा कि भला इतने बड़े लोगों के बीच में मैं क्या कर पाऊँगा लेकिन फिर मुझे अपना नेटवर्क तलाशने पर एक अभिभावक मिल गए, जो वहाँ पुलिस विभाग प्रमुख थे। मैंने उनसे मदद करने को कहा, उन्होंने मेरी इतनी मदद की, जितनी मैंने सपने में भी नहीं सोची थी। शुरूआत में मुझे लगा था कि मैं इस मामले में कुछ नहीं कर सकता, यहाँ मेरी भी इज्जत पर कीचड़ उछल सकता है लेकिन मैं अपनी बात पर डटा रहा। मुझे गलतियों का भय नहीं था इसलिए मैं वह मामला सुलझा सका।

जीवन आपको इस तरह के कई मौके देता है, कभी-कभी तो ये इतने बढ़िया होते हैं कि आप कल्पना तक नहीं कर सकते। ऐसा तभी हो सकता है जब आज गलतियों के डर से ऊपर उठ कर अवसर का लाभ उठाएँ व हार से न घबराएँ। चाहे आप मैनेजमेंट में निचले पायदान पर हों या ऊपर की सीढ़ी पर हों, बात एक ही है। आपको अनुकूल व प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों में उचित निर्णय लेना चाहिए।

गलतियों पर ही तो आपकी सफलता का भवन खड़ा होता है। सफलता की यात्रा में भूलें किए बिना, कोई भी इंसान कुछ नहीं पा सकता। यहाँ फर्क इतना है कि सफलता पा लेने पर गलतियों की तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता और असफल होने पर आप बाकी सब भुला कर अपनी गलतियाँ याद रखते हैं। यह सिर्फ आपके नहीं, सभी के साथ होता है। बहुत कम हिम्मत वाले ऐसे होते हैं, जो गलतियों पर मुँह बिसूरने की बजाए झट से दूसरी राह चुन लेते हैं। वे जानते हैं कि इंसान गलतियों का पुतला है।' और सभी को एक से नतीजों का सामना करना पड़ता है।

यहाँ मानसिकता बहुत मायने रखती है। यदि आपको लगता है कि आप अपनी गलतियों की वजह से पराजित हुए हैं तो पराजित हैं। यदि आपको लगता है कि गलती के बावजूद कोई न कोई रास्ता बचा है, तो आपने जंग जीती है। जब सब कुछ आपके हिसाब से सही चल रहा हो, तो भी बुरे से बुरे नतीजों के लिए स्वयं को तैयार रखें, इस तरह सदमे के बाद तत्काल उभरने में मदद मिलेगी।

5.4 जहाँ भी हैं, स्वयं को सहज अनुभव करें

हमारा बचपन एक ऐसे समाज में बीतता है, जहाँ हमें बचपन से ही जीतने की मानसिकता सौंपी जाती है, उसी हिसाब से हमारा व्यक्तित्व तैयार हो जाता है। हम समझौता करने के आदी हो जाते हैं और हमें लगता है कि हम समाज की काफी सेवा कर रहे हैं हममें जीतने की 'मारक प्रवृत्ति' का अभाव होता है। समानता के दृढ़ पक्षधर होने के कारण हम कुदरत का यह नियम भूल जाते हैं कि हम एक ही समय में समान व श्रेष्ठ नहीं हो सकते। श्रेष्ठ होने के लिए, हमें असमान बनना होगा।

अपने पूरे व्यावसायिक करियर के दौरान, मैंने अध्यापकों को कक्षा में बेहतर नतीजे पाने के लिए विभिन्न शिक्षण तकनीकों सिखाई व नतीजे भी अच्छे रहे लेकिन आज भी मैं दावे से नहीं

कह सकता कि कौन सी शिक्षण तकनीक प्रत्येक वातावरण के अनुसार उपयुक्त हैं अपने कार्पोरेट, ग्राहकों को सकारात्मक रवैया सिखाते समय, मैंने ध्यान दिया कि उनकी सोच, स्कूल शिक्षा से काफी हद तक प्रभावित थी। वे लोग मानते थे कि सहकर्मियों से काम करने के लिए चेहरे पर सपाट व खतरनाक भाव होना चाहिए जबकि मुस्कान के साथ भी व्यक्ति एक अच्छा प्रशासक बन सकता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान मैं अध्यापकों से कहता कि यदि वे चेहरे पर सक्रिय भाव से मुस्कान कायम रखेंगे तो छात्र बेहतर तरीके से सीख पाएंगे। मुझे सीधा-सा जवाब मिलता कि उनके व्यवसाय की यही मांग है। अधिक पूछताछ से मुझे पता चला कि उन्होंने अपने प्रमुख को भी कभी शांत रूप में नहीं देखा और कक्षा में बेहतर नतीजे पाने के लिए क्रोधित मुख मुद्रा ही काम आती है। सदियों से अध्यापन को इतना गंभीर व्यवसाय माना जाता रहा है कि इसे चुटकुलों से जीवंत व ऊर्जान्वित करने की गुंजाइश ही नहीं है।

इन परिस्थितियों में तंत्र का प्रत्येक व्यक्ति इसी सोच से ग्रस्त हैं। यद्यपि नई पीढ़ी के आगमन से कक्षाओं में काफी हद तक माहौल बदला है परंतु उन्हें यह सिद्ध करने में समय लगेगा कि छात्रों ने उन्हें बेहतर तरीके से स्वीकारा है। जिस तरह से छात्रों का रवैया बदला है? उस तरह से अध्यापकों के रवैए में बदलाव नहीं आया। इसके अनेक कारण हैं। पहले केवल अध्यापक ही प्रेरणा स्रोत होते थे किंतु अब परिस्थितियां बदल गई हैं अब छात्रों के पास 180 से अधिक टी. वी. चैनल हैं, माऊस की एक क्लिक पर ढेर-सी जानकारी है; इन सबने अध्यापकों को उनके ही घर में बेगाना बना दिया है, कभी-कभी 'स्मार्ट क्लास रूम' का नारा भी उनमें असुरक्षा की भावना भर देता है। वे उन सभी आधुनिक उपकरणों से घृणा करते हैं, जिन्होंने कक्षाओं में उनके अस्तित्व को ही ललकार दिया है।

उन्हें लगता है कि वे इन उपकरणों को सीखने व उनसे अपने प्रदर्शन में सुधार के लिए काफी पुराने हो गए हैं। वे यकीन नहीं कर सकते कि ये उपकरण व यंत्र कभी भी कक्षा में अध्यापक की जगह नहीं ले सकते। ये सभी कॉस्टमेटिक्स हैं। जो सही तरीके से इस्तेमाल करने पर ही, चेहरे पर निखार लाते हैं। चाहे आप मानें न मानें अध्यापक समुदाय अपने-आप को असुरक्षित पा रहा है। वे अपनी ही असुरक्षा की भावना से ग्रस्त है। वे सदा से कुछ और बनना चाहते थे पर किसी कारणवश इन अनचाहे पेशे में आ गए और उससे बेगाने हो गए। उन्होंने स्वयं को हालात के अनुसार नहीं ढाला और न ही समाज के सामने अपनी सामर्थ्य सिद्ध की है कि वे चाहें तो कुछ भी कर सकते हैं तथा वे हालात के शिकार नहीं हैं।

आप जीवन में हमेशा जीतेंगे, यह गारंटी तो नहीं, परंतु आपमें जीतने की ललक अवश्य होनी चाहिए।

अध्यापकों के साथ प्रशिक्षण सत्र के दौरान मैंने इसी बात पर बल दिया कि वे जीवन में हमेशा जीतेंगे, यह आश्वासन तो नहीं दिया जा सकता परंतु उनमें जीतने की ललक अवश्य होनी चाहिए। जो व्यक्ति समाज को बदलने की क्षमता का दावा करते हैं, उन्हें यह क्यों भूल जाता है कि वे तो सदा किसी दूसरे के हाथ का खिलौना रहे हैं। अध्यापक वर्ग को कभी स्वतंत्रतापूर्वक सोचने का कार्य करने नहीं दिया गया। वे वही पढ़ाते हैं, जो सरकार द्वारा, किसी भी रूप में पढ़ाने को कहा जाता है। ऐसा अब से नहीं, इतिहास के आरंभ से होता आ रहा है।

जब आपके पास स्वतंत्र निर्णय लेने की योग्यता नहीं होती, तो आप बार-बार एक ही अभ्यास को दोहराते-दोहराते निस्तेज हो जाते हैं। एक स्वतंत्र चिंतक को आगे की सोच के लिए भी पर्याप्त ऊर्जा मिलती है। यहाँ तक कि कमजोर छात्रों के पास भी अध्यापन ही एकमात्र विकल्प बचता है। वैसे यदि लगाए गए समय के हिसाब

से देखा जाए तो यहाँ पारिश्रमिक अच्छा मिलता है और समाज से सम्मान भी प्राप्त होता है। लेकिन शर्त यही है कि इस व्यवसाय में आने के बाद, इसके दायित्व संभालने होंगे। आप एम. एन. सी. के एक्जीक्यूटिव की तरह काम नहीं कर सकते। यदि आपके पास साधन भी हैं, तो समाज को आपसे अधिक उम्मीदें भी हैं।

खास बात तो ये है कि आपको किसी दूसरे पेशे की तुलना में अपने पेशे को कम नहीं आंकना। अपने कार्यक्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के लिए अपना आत्मसम्मान बरकरार रखें। वैसे हर क्षेत्र में प्रतिभा की आवश्यकता है; यहाँ तक कि एक ऑफिस का चपरासी भी वांछित है, जो कि सब कुछ आराम से संभाल सके। आप जहाँ हैं, स्वयं को अद्यतन बनाते हुए श्रेष्ठ बनें। यही 'श्रेष्ठता' आपको ऐसे माहौल में काम करने की संतुष्टि देगी, जो कि दूसरों के लिए एक सपना हो सकता है। आप नहीं जानते कि आपको अपने कड़े परिश्रम का फल कब मिलेगा। भारत के बड़े औद्योगिक घरानों में से एक की कहानी याद है, वहाँ परिवार के सी. ए. को सारी चल व अचल संपत्ति का मालिक बना दिया गया था। यह परिवार के प्रति उसकी बेजोड़ निष्ठा का ही फल था। ऐसा नहीं कि उस परिवार के लिए अकेला वही काम करता था, यह उसकी मेहनत का फल था। जहाँ भी हैं, स्वयं को बेहतर बनाने की सोचें। सिर्फ सोच ही पर्याप्त नहीं होगी, आपको कुछ करके भी दिखाना होगा। निर्णय लें और काम करने की जगह को भुला कर काम शुरू कर दें।

5.5 हमेशा जीतने की चाह बनाए रखें

आपने अपने आसपास ऐसे व्यक्ति भी देखें होंगे, जो हमेशा अपनी असफलता के लिए परिस्थितियों व दूसरों को दोषी ठहराते रहते हैं। ये दुर्बल व्यक्तित्व के व्यक्ति होते हैं। इन्हें जिंदगी के मूलभूत नियम का भी पता नहीं होता कि किसी सफल व्यक्ति के

पास दूसरे को नीचे खींचने का समय नहीं होता यदि आप कभी गिरते हैं या असफल होते हैं तो यह आपके काम व सोच का ही फल है, इसमें किसी दूसरे की कोई गलती नहीं है।

हम सबकी नज़र सफलता पर होती है। कुछ लोग तो असफल होने पर वैकल्पिक रास्ता खोज कर आगे बढ़ जाते हैं और कुछ वहीं खड़े अपनी असफलता के कारण तलाशते, दूसरों को दोषी ठहराते रहते हैं, नतीजन कुंठा उन्हें किसी लायक नहीं छोड़ती। हमें यह एहसास नहीं हो पाता कि व्यक्ति की संकल्प शक्ति ही उसकी सफलता निर्धारित करती है।

व्यक्ति के संकल्प शक्ति का आकार ही उसकी सफलता निश्चित करता है।

जीतने की चाह एक मानसिकता है। जिसे अभ्यास से सीख सकते हैं। पहले-पहले इसे आदत में शामिल करना होगा, फिर यह आपके व्यक्तित्व का अंग बन जाएगी। ऐसे लोग अपने व्यवहार की वजह से, भीड़ में भी अलग पहचाने जाते हैं। वे सभी पहलुओं का आकलन करने के बाद ही लक्ष्य निर्धारित करते हैं वे आकस्मिक घटनाओं के लिए भी गुंजाइश रखते हैं।

यदि जीतने की चाह रखते हैं तो निंदा व प्रशंसा दोनों से बचें, ये दोनों आपकी प्रक्रिया पर गलत असर डालते हैं। प्रशंसा आपके आत्मसम्मान को बढ़ा कर, इतने बड़े जोखिम लेने को विवश कर देती है, जिनके लिए आप शारीरिक या मानसिक रूप से तैयार नहीं होते। निंदा आपके आत्मसम्मान का स्तर इतना घटा देती है कि आप कुछ बेहतर सोच ही नहीं पाते। मनोवैज्ञानिक रूप से भी सिद्ध हो चुका है कि संतुलित अवधारणा रखने वाले व्यक्ति, कम समय में अपने लक्ष्य तक पहुँचते हैं।

कई बार सफलता की यात्रा में ऐसे हालात भी बनते हैं, जब आपके लिए थोड़ा सुस्ताना व हालात का जायज़ा लेना आवश्यक

हो जाता है। प्रकृति हमें जान-बूझ कर थोड़ा अवकाश देती है और हम इसे असफलता मान कर यात्रा को बीच में ही छोड़ देते हैं। दरअसल प्रकृति भी हमारी क्षमता की परख करना चाहती है ताकि सफलता गलत हाथों में न चली जाए। एक बार हम इस नियम को समझ लें तो कम से कम बीच में से नहीं भागेंगे। ये सब कुदरतन सभी के साथ होता है, चाहे वह कितना भी क्षमतावान क्यों न हो।

दरअसल हम सफलता की राह में आने वाले झटकों से घबरा जाते हैं। ये गंभीर हानि के रूप में भी हो सकते हैं। कई बार हम सफलता के काफी नजदीक पहुँच कर भी, उसे पहचान नहीं पाते और लक्ष्य तक जाने से पहले ही रूक जाते हैं। किसी बड़े पत्थर को तोड़ने के लिए लगातार चोट करनी पड़ती है लेकिन जब तक उस पर आखिरी चोट नहीं पड़ेगी, वांछित फल कैसे प्राप्त होगा। हम ये भी नहीं कह सकते कि पहली या दूसरी चोट बेकार थी या आखिरी चोट ने ये कमाल किया है। पहली चोट भी आखिरी जितना ही महत्व रखती है। सफलता के मामले में भी ऐसा ही है। लक्ष्य के प्रति उठने वाला हर कदम अपना मूल्य रखता है तथा हर कदम अगले कदम के लिए जरूरी होता है।

सफलता की परिभाषा की तरह, इसके तरीके भी लोगों के लिए अलग-अलग होते हैं। किसी के लिए कम कीमत की कार पाना सफलता हो सकता है तो किसी के लिए बढ़िया नौकरी, ए. सी. ऑफिस व दरवाजे पर खड़ा चपरासी, सफलता हो सकते हैं। किसी के लिए प्रतिवर्ष दस निर्धन छात्रों की फीस देना सफलता हो सकता है। सभी इसे अलग-अलग तरीके से पाते हैं लेकिन सफलता पाने की प्रक्रिया व घनत्व एक से होते हैं। सभी अलग-अलग प्रक्रियाओं द्वारा एक ही वस्तु तक पहुँचना चाहते हैं।

यही वैयक्तिक अंतर ही सफलता प्राप्ति को प्रभावित करता है। किसी एक की सफलता दूसरे की सफलता नहीं भी हो सकती

क्योंकि उनके उद्देश्य अलग-अलग हैं। एक ही प्रक्रिया वाले, कक्षा के दो सहपाठी, एक जैसा पारिवारिक वातावरण पाने के बावजूद विभिन्न लक्ष्य रख सकते हैं किंतु अंततः उनमें जीतने की चाह एक-सी होती है। लक्ष्य अलग होने की वजह से सबके लिए सफलता पाने का कोई एक फार्मूला नहीं हो सकता। प्रत्येक व्यक्ति को अपने लक्ष्य के हिसाब से ही सफलता प्राप्ति का यह व्यंजन तैयार करना होता है।

नशे में धुत्त छः शराबी आधी रात को वाराणसी के घाट पर पहुँचे। वे रात में शहर देखना चाहते थे इसलिए गंगा के घाट पर चले गए। वे नाव में बैठ कर उसे खेने लगे। काफी समय बाद जब ठंडी हवा से नशा टूटा तो उन्होंने देखना चाहा कि वे कहाँ तक पहुँचे। उन्हें यह देख कर आश्चर्य हुआ कि वे तो अपने स्थान से एक इंच भी नहीं हिले थे क्योंकि वे सभी किनारे से बंधी नाव की खोलना तो ही भूल गए थे।

सबसे पहले तो आपको सफलता की इस यात्रा के लिए स्वयं को तैयार करना होगा क्योंकि इस तैयार में काफी समय लगता है यह समय इसलिए लगेगा क्योंकि आपको अपना व लक्ष्य का मूल्यांकन करना है और फिर अंतिम दिशा की ओर कदम बढ़ाना है।

यहाँ आपको मोमेंटम लॉ पर भी ध्यान देना होगा, जिसके अनुसार स्थिर वस्तु को गति देने के लिए बाहरी बल लगाना पड़ता है क्योंकि यह कई विरोधी बलों का सामना कर रही होती है, एक बार गति में आने के बाद यह स्वयं की गति पकड़ लेती है। यहाँ तक कि बाहरी बल हटा लेने के बावजूद यह काफी हद तक आगे बढ़ती चली जाती है।

आपको हमेशा ये बात ध्यान में रखनी होगी कि सफलता एक आंतरिक मानसिकता है जो स्वप्रेरणा से ही आकार पाती है, इसके लिए बाहरी बल से अधिक आत्म-ऊर्जा की आवश्यकता हो

सकती है। अपने दिमाग से असफलता का भय निकाल कर, स्वयं को एहसास दिलाएँ कि आप पूरी तरह से सफल होने के लिए क्षमतावान हैं, आप में एक सफल व्यक्ति बनने के सभी गुण मौजूद हैं। अपने ऊपर बना यह विश्वास, लक्ष्य तक पहुँचने में सहायक होगा।

सफलता पाने वाले व्यक्ति वही होते हैं, जो यात्रा के दौरान किसी भी कीमत पर अपनी ऊर्जा के स्तर को घटने नहीं देते। वे यात्रा के दौरान मिलने वाली छोटी सफलता से भी ऊर्जान्वित होते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि सफलता की ओर ले जाने वाली यह यात्रा कभी समाप्त नहीं होगी।

5.6 आप इसे कर सकते हैं

आपने प्रायः अपने घर के बड़ों या अध्यापकों के मुँह से सुना होगा कि महान युद्ध जीतने वाले विजेता इसलिए विजयी रहे क्योंकि उनमें जीतने की चाह थी जबकि उनके विरोधी उनसे कहीं अधिक शक्तिशाली थे। इसी से आपका भाग्य तय होगा व निश्चित दिशा में सोच अपनाने से एक आकार ग्रहण करेगा।

यदि आपको पर्वतारोहियों से मिलने का अवसर मिले, तो वे आपको यही बताएँगे कि वे अपनी इच्छा शक्ति के बल पर ही चोटी तक पहुँचने का निर्णय ले सके, जिसका बाकी लोग केवल सपना ही देखते रहे।

एक सफल व्यक्ति व दूसरों में शक्ति या ज्ञान के अभाव का नहीं संकल्प शक्ति के अभाव का अंतर होता है।

जब आप जीवन में कुछ खो देते हैं तो कुछ खास पाने की इच्छा पैदा होती है। इस कमी को पूरा करने के लिए आप अलग दिशा में सोचते हैं व प्रत्येक कोने से मदद पाने का प्रयास करते हैं ताकि उसे पा सकें। जब तक आपकी सोच कोई ठोस आकार

नहीं ले लेती, तब तक यह प्रक्रिया चलती रहती है एक बार यह आपके मस्तिष्क में बस जाए तो यही वांछित दिशा में चलने के लिए प्रेरित करती है।

हाथी जंगल का सबसे शक्तिशाली जानवर है और भेड़िया बुद्धिमान कहलाता है लेकिन दोनों में से कोई भी जंगल का राजा नहीं है। जंगल का राजा शेर भी हाथी से सीधे टक्कर लेने से बचता है क्योंकि वह जानता है कि वह उसे हरा नहीं पाएगा लेकिन फिर भी वह राजा बनने की इच्छा के बल पर ही राज करता है। यदि आप शेर का शिकार करने वाले शिकारी से बात करें तो आपको पता चलेगा कि शेर अपनी इच्छा शक्ति के बल पर ही बड़े से बड़े जाल से निकल जाता है जबकि हाथी पकड़े जाने पर उससे बाहर नहीं आ पाता।

एक प्रसिद्ध कुश्तीबाज पहलवान था जो प्रशिक्षण के दौरान अपने साथियों व कई बार कोच तक को भी पछाड़ देता था लेकिन प्रतियोगिता के समय वह घबरा जाता। कोच परेशान था कि उसकी इस घबराहट को कैसे दूर किया जाए। एक दिन उसने अपने आध्यात्मिक मित्र से इस विषय में राय मांगी। सलाह के हिसाब से पहलवान को शाम को उसके पास भेजा गया। नाम पूछने पर उसने कहा 'तूफान।' अध्यापक ने उसके नाम की तारीफ के बाद पूछा कि वह अपने नाम की तुलना में, वास्तविकता में कैसे गरजेगा।

पहलवान ने एक पल के लिए सोचा और उसे उस बड़े तूफान की याद आ गई, जो धरती पर कहर ला देता है। स्पर्श पाने पर उसने आँखें खोलीं तो अपने में एक गहरा बदलाव पाया। इसके बाद वह किसी भी प्रतियोगिता में नहीं हारा। अपनी इच्छा शक्ति के बल पर ही वह सबसे ज्यादा ताकतवर कहलाया।

हो सकता है कि आपके पास सफल होने की सारी सामग्री हो किंतु इच्छा शक्ति के अभाव में सब व्यर्थ है। किसी भी कार्य को

करने की इच्छा शक्ति सबसे ज्यादा महत्व रखती है। जिसके पास इच्छा शक्ति नहीं होती, वह घटनाओं के घटने की प्रतीक्षा करता रहता है जो व्यक्ति लगातार यह दोहराता रहता है कि वह एक दिन अपने खोल से बाहर आ कर वो सब पा लेगा, जिसका वह हकदार है, तो सचमुच वो दिन आ जाता है जब उसकी वर्षों की साधना पूरी हो जाती है।

धरती पर शक्तिशाली व बुद्धिमान व्यक्तियों का अभाव नहीं है, आपने भी अपने आसपास अनेक शक्तिशाली और बुद्धिमान लोग देखे होंगे लेकिन वे साफ तरीके से नहीं जानते कि उन्हें जिदंगी से क्या चाहिए। उनके पास जो भी है, वे उसी से संतुष्ट हो कर उसे अपना भाग्य मान लेते हैं। कुछ समय के लिए देखने में वे सफल लग सकते हैं किंतु हकीकत में ऐसा नहीं होता। सारी विशेषताओं के बावजूद सफलता की इच्छा के बिना सफल हो भी कैसे सकते हैं? इच्छा शक्ति होने पर बाकी खूबियों के भी पंख लग जाते हैं।

हममें से अधिकतर इस 'इच्छा' या संकल्प शक्ति की भूमिका से परिचित नहीं हैं। हम किसी दूसरे को काम करते देखते हैं तो सोचते हैं कि वह व्यक्ति यह कार्य कर सकता है, तो मैं क्यों नहीं। सोच में कोई बुराई नहीं लेकिन उस समय हमें यह याद नहीं रखता कि 'इच्छा' ही सफलता या असफलता का निर्धारक तत्व है। अपनी संकल्प शक्ति को दृढ़ रखना काफी कठिन होता है क्योंकि जीवन में मिलने वाले झटके इसे जड़ से हिला कर रख देते हैं। सफलता की ओर बढ़ रहे व्यक्ति के लिए वह समय काफी मायने रखता है। हम जीवन में कभी पीछे नहीं हटना चाहते, जब आयु व अनुभव के बावजूद ऐसा होता है तो हम कुंठित हो जाते हैं। आपने कई ऐसे उद्यमी भी देखे होंगे, जो कोई काम शुरू करते हैं व बहाने बना कर बीच में ही छोड़ देते हैं पर स्वयं को दोषी नहीं मानते। यह सब उनकी खंडित संकल्प शक्ति के कारण होता है।

यदि आपमें दृढ़ संकल्प शक्ति है तो जो पसंद आए वही करें, चाहे कितनी भी मुसीबतें क्यों न आए, सभी कारक पूरक स्वभाव के होने की वजह से अपने-आप समझौता कर लें।

संकल्प शक्ति आपका आत्मविश्वास बढ़ाती है तथा जीवन में जो कुछ भी पाना चाहें; उसका साधन बन जाती है।

5.6 संभावनाओं के द्वार खोलें

अपनी इच्छानुसार वांछित परिणाम पाना चाहते हैं, तो संभावनाओं के द्वार खोलें। आप किसी से कम नहीं, यकीन रखें, आप सफल होने की सारी क्षमताएँ तथा विशेषताएँ रखते हैं। हो सकता है कि आपने अब तक, अपने भीतर छिपी प्रतिभा को पहचाना ही न हो। ये विशेषताएँ व संभावनाएँ जन्मजात होती हैं। आपको इन्हें सामने लाने के लिए निरंतर प्रयास करना पड़ता है। ऐसा नहीं कि इस काम के लिए किसी व्यक्ति को दूसरे की तुलना में ज्यादा बुद्धिमान या मजबूत बनना होगा।

मजबूती या बुद्धिमानी नहीं, बल्कि निरंतर प्रयासों से संभावनाओं के द्वार खोले जा सकते हैं।

किसी भी काम को करने के लिए प्रयत्न करना पड़ता है और निरंतर प्रयत्न ही सफलता की कुंजी है। हम पूरी लगन से काम शुरू करते हैं और फिर उसे बीच में ही छोड़ देते हैं। हममें से बहुत कम लोग लक्ष्य के प्रति केंद्रित होते हैं तथा राह में आने वाली मुसीबतों का सामना कर पाते हैं। हमें लगता है कि हमने गलत लक्ष्य चुन लिया है और इस तरह हम आसान लगने वाले लक्ष्यों की ओर चल देते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि यदि लक्ष्य सोच-समझ कर चुने गए हैं तो उनमें कठिनाई का स्तर तकरीबन एक सा होगा। हमारी सोच से ही यह सारा अंतर आता है।

निरंतर प्रयास ही सफलता की कुंजी है। प्रयत्न इस तरह नियोजित हों कि वे पहले से अधिक तेजी से काम करें। यह

मकान में लगने वाली ईंटों की तरह ही महत्वपूर्ण हैं। चाहे मकान की नींव में कोई ईंट लगे या दीवार में लगाई जाए, उसके महत्व में कमी नहीं आती। हम दावा नहीं कर सकते कि जो ईंटें नींव में लगी होने की वजह से दिखती नहीं हैं, उनकी जगह कोई भी घटिया ईंटें लगा सकते हैं। यहाँ तक कि कोई नया मजदूर भी आपको ऐसा करने का सुझाव नहीं देगा। एक मजबूत भवन, मजबूत नींव पर ही खड़ा हो सकता है, इसके लिए आरंभ से ही गुणवत्ता को नियंत्रित करना होगा।

यदि कोई व्यक्ति ऐसी सोच रखने के बावजूद लक्ष्य पा भी लेता है तो वह उसे लंबे समय तक बरकरार नहीं रख पाता क्योंकि उसमें निरंतर प्रयत्नशीलता का अभाव होता है। आपको अपने आसपास ही, इस नियम के समर्थन में कई उदाहरण मिल जाएँगे। किसी पहाड़ी पर चढ़ना तो आसान है किंतु वहीं बने रहना कठिन है क्योंकि इसके लिए आपको अपनी ओर से निरंतर प्रयास करने होंगे।

मनुष्य स्वभाव से ही निरंतर प्रयत्नशीलता का आदी नहीं होता हालांकि इस व्यवहार को अभ्यास से पाया जा सकता है। यदि निरंतर अभ्यास करें तो उसे सहज ही अपना सकते हैं। यदि यह गुण व्यक्ति में हो तो वह कभी अपने प्रयासों में असफल नहीं होगा। यह आदत बचपन से ही डालनी चाहिए क्योंकि बच्चे आसानी से कोई भी चीज सीख लेते हैं और ये उनके व्यवहार का एक अंग बन जाती है। हालांकि ये काम थोड़ा कठिन है क्योंकि बच्चे अधिक समय तक एकाग्र नहीं रह पाते। यदि उसकी एकाग्रता बनाए रख सकें तो अवश्य ही सकारात्मक नतीजे सामने आएँगे।

प्रत्येक के जीवन में ध्यान भटकाने वाले तो होते ही हैं उनसे बच तो नहीं सकते लेकिन नतीजे पाने हैं तो उन्हें नियंत्रित करना सीखना ही होगा। ये आसान उपलब्धियों या झूठी उपलब्धियों के

रूप में भी सामने आ जाते हैं। केवल मजबूत सोच वाला व्यक्ति ही इन्हें नियंत्रित कर सकता है। स्वयं को मानसिक रूप से सशक्त बनाएं। मुझे पक्का विश्वास है कि अगर आप अब तक इस पुस्तक को पढ़ रहे हैं तो आपमें लगन और वचनबद्धता की कमी नहीं है, यही दोनों आपको मंजिल तक ले जाएँगे।

आपकी संभावना या क्षमता ही आपकी ताकत है, आपको उस पर गर्व होना चाहिए। दुनिया में ऐसा कोई नहीं, जो मजबूत न हो, बस इस मजबूती को पहचान कर इस्तेमाल करना होता है। जब हमें अपनी क्षमता पर भरोसा नहीं होता तो असफलता का भय भी सताता है। एक बार हम मन से इस भय को निकाल दें तो बाकी सब कुछ अपने-आप व्यवस्थित हो जाएगा। समस्या हमारी इच्छा शक्ति के साथ है। यदि यह दृढ़ न हो तो परेशानियों से जूझना थोड़ा मुश्किल हो जाता है।

5.8 दृढ़ता बनाए रखें

फारस का एक राजा अपने प्रधानमंत्री की तर्कशक्ति व बुद्धि की बड़ी कद्र करता था। वह अक्सर अपने सभी फैसलों में प्रधानमंत्री की राय लेता। वह उसके बिना अपनी कल्पना भी नहीं कर सकता था लेकिन एक बार वह किसी बात पर अपने प्रधानमंत्री से नाराज़ हो गया। उसने क्रोध पर नियंत्रण पाना चाहा लेकिन असफल रहा। क्रोध में ही उसने प्रधानमंत्री को फांसी की सजा सुना दी।

अगले दिन प्रधानमंत्री तक समाचार पहुँचा तो वह अपनी पुत्री के जन्मदिवस की खुशियाँ मना रहा था। यह खबर फैलते ही सभी उदास हो गए और जश्न रोक दिया गया। उसने कहा कि जश्न फिर से चालू कर दो। फिर उसने राजा के संदेशवाहक से कहलवाया कि जन्मदिन की दावत खत्म होते ही वह फांसी की सजा पाने के लिए पहुँच जाएगा।

जब राजा ने सुना कि वह फांसी की सजा सुनने के बाद भी जन्मदिन की दावत मना रहा है तो उसने फांसी की सजा रद्द कर दी। उसने अपने आसपास खड़े दरबारियों से कहा कि जो इंसान मौत से नहीं डरता, उसे सही व भले काम करने से भी कोई नहीं रोक सकता।

हम सबको लगता है कि हमें सही काम करने से कोई नहीं रोक सकता लेकिन सही वक्त आने पर हम कदम पीछे हटा लेते हैं। जब कभी उत्तरजीविता का प्रश्न आता है तो आगे बढ़ कर अपने फैसले का समर्थन करने वाले ही सफल हो पाते हैं। एक बार यदि आपने मान लिया कि सब कुछ तय है तो कठिनाईयों के सामने घुटने टेकने का सवाल ही नहीं पैदा होता और यदि आप किस्मत में विश्वास नहीं करते व सिर्फ कड़ी मेहनत पर भरोसा रखते हैं तो भी, आपका ध्यान कोई नहीं भटका सकता। आपका विश्वास ही आपको विजेता या पराजित बनाता है, बाकी सभी कारक क्षणिक हैं, जिनका अल्प जीवनकाल होता है।

हमेशा अपने कर्म पर दृढ़ रहें ताकि लोगों का आपमें विश्वास बना रहे, इस तरह लक्ष्य प्राप्ति के लिए आपके आत्मसम्मान में भी वृद्धि होगी। राजा ने मंत्री के अपने ऊपर विश्वास को हिलाना चाहा पर वो सफल नहीं हुआ क्योंकि मंत्री दृढ़ था, उसे विश्वास था कि उसने कोई गलत निर्णय नहीं लिया। यह सब केवल सोच से नहीं पा सकते लेकिन नियमित अभ्यास से आपके व्यक्तित्व में भी ये विशेषताएँ आ सकती हैं।

बैठने से, समय की रेत पर पैरों के निशान नहीं बनते।

लेखकों के विषय में

श्रीमती इंदु पांडे का जन्म 1965 में हुआ, वे एक समाजसेविका हैं; उन्होंने वर्ष 1995 में, अपने स्वर्गीय श्वसुर श्री एस. एन. पांडे (एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् व समाज सेवक) की पुण्य स्मृति में; एक रजिस्टर्ड ट्रस्ट 'पांडे एजुकेशन ट्रस्ट' की स्थापना का विचार दिया, यह ट्रस्ट 'क्वालिटी एजुकेशन सपोर्ट' के क्षेत्र में सेवाएँ देता है। डॉ. अशोक कुमार पांडे का जन्म 1956 में हुआ, वे एक शैक्षिक प्रशासक हैं व समाजसेवक हैं। वे पांडे एजुकेशन के सी. ई. ओ. पद पर हैं। डॉ. पांडे अध्यापकों के प्रेरक प्रशिक्षकों में से हैं, उन्होंने 2000 से अधिक अध्यापकों के प्रेरक प्रशिक्षित किया है ताकि वे कक्षा में बेहतर प्रदर्शन दे सकें। अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में उनके 35 से भी अधिक शोध-पत्र प्रकाशित हो चुके हैं; जिनमें 'इंडियन एजुकेशन रिव्यू' तथा 'एन एच आर डी' उल्लेखनीय हैं। शिक्षा प्रबंधन के क्षेत्र में नेतृत्व के लिए, उन्हें पी. टी. ए. व जेटी फाउंडेशन द्वारा सम्मानित भी किया गया है। वे जयपुर के इंटरनेशनल स्कूल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, ज्ञानविहार यूनीवर्स की विजिटिंग फ़ैकल्टी भी हैं। श्रीमती पांडे ने एच. आर. के क्षेत्र में विशेषज्ञता पाई है, वे ग्राहकों की आवश्यकताओं के अनुरूप उनके कार्य में सहयोग देती हैं। उनमें ऐसी परियोजनाओं पर कार्य करने की आंतरिक नेतृत्व क्षमता है।

इस पुस्तक में सुधार के सुझावों का स्वागत है, हम उन्हें आगामी संस्करण में अवश्य स्थान देंगे। आप हमें edtrun@rediffmail.com पर संपर्क कर सकते हैं, हम तत्काल प्रत्युत्तर करेंगे।

जयपुर, अप्रैल 4, 2009

इन्हीं लेखकों की ओर से:

व्हाट इफ यू डाई टुमारो?

(What if you die tomorrow)

व

क्रैक द शैल दैट कवर्स यू

(Crack the shell that covers you)